Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
द फोटोन न्यूज Published from Ranchi
Ranchi ● Monday, 08 January 2024 ● Year : 01 ● Issue : 348 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जाएगा।

रवींद्रनाथ ठाकुर

दुल्हनिया 3 से नहीं हुई आलिया भट्ट की...

SHARE

सेंसेक्स	:	72,026.15
निफ्टी	:	21,710.80

SARAFA

सोना	:	5,960
चांदी	:	78.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

पश्चिम बंगाल में तृणमूल नेता की गोली मारकर हत्या

KOLKATA : पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के एक नेता की गोली मारकर हत्या कर दी गई है। बताया जा रहा है कि कुछ लोग बाइक पर सवार होकर आए और करीब से तृणमूल नेता को गोली मार दी। गंभीर रूप से घायल अवस्था में उन्हें मुर्शिदाबाद मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। तृणमूल के इस नेता का नाम सत्येन चौधरी है। वह जिला महासचिव थे। घटना रविवार (सात जनवरी) को दोपहर में हुई। बहरमपुर के चटलिया में उन्हें गोली मारी गई। बताया जा रहा है कि सत्येन चौधरी कभी पश्चिम बंगाल प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष अधीर रंजन चौधरी के करीबी हुआ करते थे। बाद में वह तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गए। हालांकि, हाल के दिनों में तृणमूल कांग्रेस से उनकी दूरी बढ़ गई थी।

हमले के एक दिन बाद अब ईडी पर एफआईआर

KOLKATA : पश्चिम बंगाल पुलिस ने शनिवार को ईडी की उस टीम के अधिकारियों पर केस दर्ज किया है, जिन पर शुक्रवार को नॉर्थ 24 परगना जिले के संदेशखाली इलाके में भीड़ ने हमला किया था। अधिकारियों के खिलाफ घर में जबरन घुसने और महिला से छेड़छाड़ का आरोप है। ये अधिकारी राशन घोटाले के तहत नॉर्थ 24 परगना जिले में टीएमसी जिला परिषद के सदस्य शाहजहां शेख के घर तलाशी लेने जा रहे थे, लेकिन हमले की वजह से उन्हें वापस लौटना पड़ा। हमले के अगले दिन यानी 6 जनवरी को पुलिस ने इस मामले में तीन एफआईआर दर्ज कीं। एक एफआईआर एजेंसी के अधिकारियों के खिलाफ और दो एफआईआर अनजान लोगों के खिलाफ हुई हैं। वहीं, ईडी की तरफ से टीएमसी नेता शाहजहां शेख के लिए लुकआउट सर्कुलर जारी किए जाने पर कांग्रेस नेता अधीर रंजन ने कहा कि लुकआउट नोटिस जारी करके ईडी क्या कर लेगा? ईडी खुद इडियट है।

रांची लौटे राज्यपाल चचाओं का बाजार गर्म

RANCHI : झारखंड में राजनीतिक सरगर्मी बढ़ती नजर आ रही है। दरअसल, राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन चेन्नई से वापस रांची लौट आये हैं। उनके वापस आने के बाद राज्य की सियासत में एक बार फिर से सियासी उफान आने का अंदाजा लगाया जा रहा है। बता दें कि 2 जनवरी को राज्यपाल अपने गृहनगर चेन्नई गए थे। उनके चेन्नई जाने को लेकर झारखंड की राजनीति में कानाफूसी शुरू हो गई थी। अब उनके वापस आने के बाद कयासों का बाजार एक बार फिर से गर्म हो गया है। राज्यपाल के आने के बाद अब झारखंड की पूरी राजनीति राजभवन के तरफ आस भरी नजरों से देखने लगी है।

प्रधानमंत्री मोदी बिहार से करेंगे लोकसभा चुनाव अभियान का आगाज

चंपारण के बेतिया में 13 जनवरी को करेंगे पहली रैली, इसी दिन झारखंड आएंगे

AGENCY NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2024 लोकसभा चुनाव अभियान की शुरूआत बिहार से कर सकते हैं। एजेंसी ने भाजपा सूत्रों के हवाले से बताया कि 13 जनवरी को पीएम चंपारण के बेतिया में रैली करेंगे। वे रमन मैदान में एक जनसभा भी करेंगे। इसी दिन वे झारखंड के धनबाद भी जा सकते हैं। भाजपा सूत्रों ने बताया कि 13 जनवरी को बेतिया में पीएम मोदी बिहार के विभिन्न सड़कों और केंद्रीय योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास कर सकते हैं। 2014 लोकसभा चुनाव के बाद यह पहली बार होगा, जब भाजपा अपने सबसे पुराने सहयोगी जदयू के बिना चुनावी मैदान में उतरेगी। 15 जनवरी यानी मकर संक्रांति के बाद भाजपा राज्य में कई जनसभाएं और रैलियां करेगी। खुद प्रधानमंत्री मोदी बेगूसराय, बेतिया और औरंगाबाद में तीन रैलियां करेंगे। पार्टी इस बार लोजपा और हम के साथ मिलकर 40 सीटों पर मैदान में होगी। पीएम के कार्यक्रम के बाद पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा और गृह मंत्री अमित शाह जनवरी और फरवरी में कैंपेन में शामिल होंगे। शाह जनवरी और फरवरी में सीतामढी, मधेपुरा और नालंदा में जनसभाएं करेंगे। वहीं, नड्डा बिहार के सीमांचल और पूर्वी इलाकों में रैलियां करेंगे।

इंडिया के सामने सीट शेयरिंग का मुद्दा

लोकसभा चुनाव में भाजपा का सामना करने के लिए बने इंडिया के सामने चुनावी अभियान शुरू करने से पहले 28 दलों के बीच सीट शेयरिंग भी बड़ी चुनौती है। इसी महीने गठबंधन की पांचवीं बैठक होनी है, जिसमें इस मुद्दे पर चर्चा हो सकती है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, कांग्रेस गठबंधन वाले 9 राज्यों की 85 सीटें इंडिया ब्लॉक से मांगेगी। वहीं, टीएमसी बंगाल और आम आदमी पार्टी दिल्ली और पंजाब में अकेले चुनाव लड़ने की इच्छा जाहिर की है। उद्धव गुट की शिवसेना नेता संजय राउत ने महाराष्ट्र की 48 में से 23 सीटों पर चुनाव लड़ने की बात की है।

पीएम पर टिप्पणी करने वाले मालदीव के तीनों मंत्री सस्पेंड, लक्षद्वीप दौरे पर दिया था विवादित बयान

AGENCY NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाली मंत्री मरियम शिउना, मालशा और हसन जिहान को मालदीव सरकार ने सस्पेंड कर दिया है। इससे पहले मालदीव सरकार ने पीएम मोदी पर टिप्पणी करने वाले मंत्रियों की जमकर फटकार लगाई थी। मालदीव सरकार ने बयान जारी कर कहा, 'यह उनकी व्यक्तिगत राय है। मंत्री की टिप्पणी मालदीव सरकार के विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। मालूम हो मालदीव की मंत्री मरियम ने पीएम मोदी के लक्षद्वीप दौरे पर अपमानजनक टिप्पणी की थी। मालदीव सरकार ने मंत्री की टिप्पणी को लेकर बयान जारी किया। अपने बयान में मालदीव सरकार ने कहा, मालदीव सरकार विदेशी नेताओं और उच्च पदस्थ व्यक्तियों के खिलाफ सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर अपमानजनक टिप्पणियों से अवगत है।

झारखंड के सबसे बड़े मेले खादी व सरस महोत्सव का आगाज

बापू ने देश-दुनिया में खादी को पहचान दिलाई : सीएम

- खादी सिर्फ पहनावा नहीं, यह हमारी सभ्यता, संस्कृति, परंपरा व स्वदेशी होने का परिचायक
- खादी के साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का नाम जुड़ा है, हमें भी खादी से जुड़ना चाहिए
- तकनीक के बावजूद हमने इसे नहीं छोड़ा, रोटी, कपड़ा और मकान की जरूरत सभी को

PHOTON NEWS RANCHI : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने रविवार को झारखंड के सबसे बड़े मेले का उद्घाटन किया। राजधानी रांची के ऐतिहासिक मोरहाबादी मैदान में राष्ट्रीय खादी एवं सरस महोत्सव 2023-24 का उद्घाटन करने के बाद मुख्यमंत्री ने कहा कि खादी सिर्फ पहनावा नहीं है। यह हमारी सभ्यता, संस्कृति, परंपरा और स्वदेशी होने का परिचायक है। उन्होंने कहा कि हम सभी इस बात से भली-भांति वाकिफ हैं कि खादी के साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का नाम जुड़ा है। बापू ने देश-दुनिया में खादी को पहचान दिलाई। हमें भी खादी से जुड़ना चाहिए। तभी हम अपने पारंपरिक स्वदेशी व्यवस्था को और मजबूत कर पाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज तकनीक का जमाना है। भौतिकतावादी जमाना है। हम मशीनों के साथ जी रहे हैं। बावजूद इसके हमने अपनी सभ्यता, परंपरा और संस्कृति को नहीं छोड़ा। खादी एवं सरस महोत्सव इसी कड़ी का हिस्सा है।

भारत में ग्रामीण व स्वदेशी व्यवस्था की अहमियत कायम

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि जमाना चाहे जितना आगे बढ़ जाए, अपने राज्य झारखंड और अपने देश भारत में आज भी ग्रामीण तथा स्वदेशी व्यवस्था की अहमियत कायम है। देहाती ग्रामोद्योग को आगे बढ़ाना है। इससे जुड़ी चुनौतियों से हमें निबटना है। यह काम सिर्फ सरकार नहीं कर सकती। इसके लिए हर व्यक्ति को पहल करनी होगी। उन्होंने कहा कि सरकार देसी उत्पादों को बढ़ावा देने की लगातार कोशिश कर रही है। झारखंड में सखी मंडल से जुड़कर लाखों महिलाएं तरह-तरह के उत्पाद बना रही हैं और उसे बेचकर आजीविका कमा रहीं हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सखी मंडल के उत्पादों में केमिकल नहीं होता। ये पूर्णतः स्वदेशी उत्पाद हैं। सरकार इन दीदियों के उत्पादों को पलाश ब्रांड के माध्यम से बाजार उपलब्ध करा रही है, ताकि उनकी आजीविका के साधनों को और मजबूत कर सके। हम सबको इनका उत्पाद खरीदकर इन्हें मजबूत बनाना होगा। सखी दीदियां मजबूत होंगी, तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। इससे अपना राज्य भी समृद्ध होगा।

मुस्लिम महिला दोबारा शादी के बावजूद भरण पोषण की हकदार

MUMBAI : बॉम्बे हाईकोर्ट ने अपने एक फैसले में कहा- तलाकशुदा मुस्लिम महिला दोबारा शादी कर लेती है, तब भी वह अपने पूर्व पति से तलाक में महिला के अधिकारों का सुरक्षा कानून के तहत गुजारा भत्ता पाने की हकदार है। एजेंसी के मुताबिक, जस्टिस राजेश पाटिल की सिंगल बेंच ने कहा- तलाक की हकीकत अपने आप में पत्नी के लिए धारा 3(1)(ई) के तहत भरण-पोषण का दावा करने के लिए पर्याप्त है। इसके साथ ही कोर्ट ने पूर्व पत्नी को एकमुश्त गुजारा भत्ता देने के दो आदेशों पर पति की चुनौती को खारिज कर दिया। कोर्ट ने पति को अपनी पूर्व पत्नी को 9 लाख रुपए गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया है। जस्टिस पाटिल ने 2 जनवरी को सुनाए फैसले में कहा- एक्ट की धारा 3(1)(ए) दोबारा शादी के खिलाफ बिना किसी शर्त के भरण-पोषण का प्रावधान करती है। यह (धारा) गरीबी रोकने और तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के एक्ट के उद्देश्य पर प्रकाश डालती है, भले ही महिला ने दोबारा शादी ही क्यों ना कर ली हो। जस्टिस पाटिल ने साल 2001 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि भरण-पोषण देने के लिए मुस्लिम पति का दायित्व न केवल तय समय सीमा के लिए, बल्कि तलाकशुदा पत्नी की पूरी जिंदगी के लिए है।

रांची में सड़क दुर्घटना, एक की मौत

तेज रफ्तार आर्मी वाहन ने बाइक को मारी टक्कर

टक्कर मारने वाली आर्मी की गाड़ी (दाएं) व दुर्घनाग्रस्त बाइक (बाएं)।

CRIME REPORTER RANCHI : राजधानी रांची के डोरंडा थाना क्षेत्र के घाघरा में रविवार को सड़क दुर्घटना में एक बाइक सवार की मौत हो गई है। जानकारी के अनुसार एक आर्मी गाड़ी ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। जिससे उसकी मौत हो गई है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार आर्मी की गाड़ी काफी तेज गति से जा रही थी। इस दौरान आर्मी गाड़ी ने सामने से आ रही बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि युवक काफी दूर फेंका गया। जिससे उसके सिर में काफी गंभीर चोट आई। घटना के बाद आसपास के लोगों ने युवक को उठाकर आनन-फानन में उठाकर सदर अस्पताल रांची पहुंचाया। जहां इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई। जानकारी मिलते ही पुलिस सदर अस्पताल पहुंची और घटना के संबंध में जानकारी ली।

चालक से पुलिस कर रही पूछताछ

पुलिस ने शव की पहचान रांची के हिंदपिढ़ी थाना क्षेत्र के पीपी कंपाउंड निवासी निक्की कच्छप के रूप में की है। पुलिस ने शव की शिनाख्त के बाद परिजनों को घटना की सूचना दी। दुर्घटना के बाद आर्मी गाड़ी को जब्त कर थाना लाया गया है। आर्मी गाड़ी के चालक से पुलिस पूछताछ कर रही है। पुलिस हादसे की वजह तलाश रही है। साथ ही पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। घटना के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

प्रभार लेने रांची आ रहे जेलर का हुआ एक्सीडेंट

बंदर को बचाने में अनियंत्रित होकर पलटी कार

CRIME REPORTER RANCHI : झारखंड की राजधानी रांची के बिरसा मुंडा सेंट्रल जेल के नए जेलर का प्रभार लेने जा रहे अंजय श्रीवास्तव सड़क हादसे में घायल हो गए हैं। शुक्रवार को गढ़वा मंडल कारा से उनका ट्रांसफर हुआ था। शाम को गढ़वा से रांची के लिए रवाना हुए अंजय श्रीवास्तव सड़क हादसे में घायल हो गये। जेलर अंजय श्रीवास्तव ने बताया कि लातेहार पतकी में एक बंदर को बचाने के क्रम में उनकी कार अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गयी। उन्हें सीने और कमर में चोट आई है। स्थानीय लोगों की मदद से उन्हें लातेहार अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उनका इलाज किया। फिलहाल वे ठीक हैं।

जेल अधीक्षक व आइजी ने माना पत्रकारों को योगेंद्र तिवारी ने दी थी धमकी

RANCHI : बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा के प्रभारी जेल अधीक्षक सह रांची के एडीएम नक्सल रामवृक्ष राम और जेल के आइजी उमाशंकर सिंह ने यह माना है कि जेल में बंद योगेंद्र तिवारी ने पत्रकारों को जेल के लैंड लाइन से फोन कर धमकी दी। मामले में जेल आइजी ने जेलर प्रमोद कुमार, मुख्य उच्च कक्षपाल अवधेश सिंह और कंप्यूटर ऑपरेटर पवन कुमार को पांच दिसंबर को निलंबित कर दिया। लेकिन योगेंद्र तिवारी के खिलाफ कोई और ठोस कार्रवाई अब तक नहीं की। जेल अधीक्षक ने 31 दिसंबर 2023 को खेलगांव थाना को प्राथमिकी के लिए आवेदन दिया था।

युवक की मौत के बाद परिजनों ने लालपुर चौक किया जाम, डीसी ने नीतीश के पोस्टमार्टम जांच की दी मंजूरी

CRIME REPORTER RANCHI : नवीन पुलिस लाइन स्थित उत्पाद विभाग के कार्यालय में शनिवार अवैध शराब के आरोपी नितेश द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या किए जाने के बाद लोगों ने रविवार की शाम स्वजनों ने लालपुर चौक जाम कर दिया। हो-हंगामे को शांत कराने के लिए पुलिस प्रशासन ने सक्रियता दिखाई और उच्च पदस्थों को इसकी जानकारी दी। जिसके बाद डीसी रांची राहुल कुमार सिन्हा ने मृतक नितेश विश्वकर्मा उर्फ नीतीश लोहरा की मृत्यु मामले में गंभीरता दिखाते हुए पोस्टमार्टम कराए जाने की अनुमति दी है। उन्होंने दंडाधिकारी की उपस्थिति में मेडिकल बोर्ड, वीडियोग्राफर के साथ पोस्टमार्टम कराए जाने की अनुमति दे दी है। बता दें कि मृतक नितेश को 6 जनवरी को उत्पाद अधिनियम की धारा 47(ए) के अंतर्गत अवैध शराब बिक्री के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। जिसे गिरफ्तारी के बाद उत्पाद कार्यालय न्यू पुलिस लाइन कांके में निगरानी में रखा गया था। इसी दौरान अभियुक्त द्वारा हाजत के बाथरूम में आत्महत्या का प्रयास किया गया था। जिसके बाद तत्काल उसे अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों द्वारा अभियुक्त को मृत घोषित कर दिया गया।

- उत्पाद भवन में युवक की खुदकुशी का मामला
- अवैध शराब बिक्री के आरोप में किया गया था युवक को गिरफ्तार
- हाजत के बाथरूम में आरोपी ने कर ली थी आत्महत्या

पहली बार रात के अंधेरे में कारगिल हवाई पट्टी पर उतरा वायु सेना का सी-130जे विमान

दुश्मनों की नींद उड़ा रही वायुसेना, पाक-चीन के उड़े होश

- दुर्जेय हिमालयी परिदृश्य में विमान ने गरुड़ फोर्स के साथ रात्रि लैंडिंग करके रचा इतिहास
- विमान चालकों के लिए तमाम चुनौतियां पेश करती है 8,800 फीट ऊंचाई वाली यह हवाई पट्टी

AGENCY NEW DELHI : केंद्र सरकार चीन और पाकिस्तान से लगी विभिन्न हवाई पट्टियों को सामरिक दृष्टिकोण से कई तरीकों से उपयोग के लिए अपग्रेड कर रही है। इसी क्रम में भारतीय वायु सेना के सामरिक परिवहन विमान सी-130जे ने पहली बार कारगिल हवाई पट्टी पर गरुड़ फोर्स के साथ रात्रि लैंडिंग की। दुर्जेय हिमालयी परिदृश्य में यह हवाई पट्टी 8,800 फीट से अधिक की ऊंचाई पर स्थित है, जो विमान चालकों के लिए अद्वितीय चुनौतियां पेश करती है। भारतीय वायुसेना ने इस उपलब्धि के महत्व पर रात्रि लैंडिंग का एक वीडियो साझा करने के साथ ही बयान में कहा, पहली बार परिवहन विमान सी-130जे ने कारगिल हवाई पट्टी पर एक रात की लैंडिंग की। रास्ते में इलाके को ढंकते हुए इस अभ्यास ने गरुड़ के प्रशिक्षण मिशन को भी पूरा किया। हालांकि, प्रशिक्षण मिशन के बारे में विशिष्ट विवरण का खुलासा नहीं किया गया, लेकिन यह भारतीय वायुसेना की उल्लेखनीय उपलब्धियों में शामिल है। यह सफल रात्रि लैंडिंग न केवल वायु सेना की सावधानीपूर्वक योजना को दर्शाती है, बल्कि इसके पायलटों की विशेषज्ञता को भी उजागर करती है।

लद्दाख में नाइट लैंडिंग बेहद खतरनाक

लद्दाख के कारगिल में मौजूद हवाई पट्टी समुद्र तल से 8,800 फीट से ज्यादा ऊंचाई पर है। यह इलाका ऊंची पहाड़ियों और घने जंगलों से घिरा हुआ है। ऐसे में यहां लैंडिंग काफी मुश्किल मानी जाती है। रात के अंधेरे में लैंडिंग करना और भी चुनौतीपूर्ण होता है। इस दौरान न सिर्फ पहाड़ों से बचना होता है, बल्कि सिर्फ नेविगेशन के जरिए ही विमान उतारना पड़ता है। भारत ने लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा यानी एलएसी पर 68 हजार से ज्यादा जवानों को तैनात किया है। इसके अलावा एयरफोर्स की मदद से करीब 90 टैंकों और वेपन सिस्टम्स को भी लद्दाख ले जाया गया। सुखोई एसयू-30 एमकेआई और जगुआर जैसे प्लेन्स से दुश्मन के जमावड़े पर चौबीसों घंटे निगरानी रखी जा रही थी। सी-130 विमान ने 1954 में पहली बार उड़ान भरी थी। इस चार इंजन वाले ट्रांसपोर्ट विमान को अमेरिकी कंपनी लॉकहीड मार्टिन ने बनाया था। बाद में नए इंजन, फ्लाइट डेक और एडवांस सिस्टम के साथ अपग्रेड हुए प्लेन को सी-130जे नाम दिया गया। भारत समेत 20 से ज्यादा देश इस विमान का इस्तेमाल करते हैं।

ठंड और घने कोहरे के बीच बच्चों को बड़ी राहत स्कूलों ने बढ़ाई छुट्टियां

NEW DELHI : उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड जारी है। मौसम विभाग ने पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान में रविवार को कड़ाके की ठंड पड़ने की चेतावनी जारी की है। इन राज्यों में 7, 8 और 9 जनवरी को शीतलहर का अनुमान जताया गया है। मौसम विभाग के मुताबिक 14 राज्यों में कोहरे की स्थिति बनी हुई है। इनमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, ओडिशा शामिल हैं। दिल्ली में ठंड को देखते हुए राज्य में 1 से 5वीं क्लास तक की छुट्टी 12 जनवरी तक बढ़ा दी गई है। मौसम विभाग ने बताया कि शनिवार को मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, तमिलनाडु और केरल में बारिश हुई है। इसके बाद यहां के तापमान में 3 से 4 डिग्री की गिरावट दर्ज की गई है। रांची जैसे शहरों में रविवार को घना कोहरा रहा।

चतरा में टीपीसी सब जोनल कमांडर सहित पांच गिरफ्तार

आगजनी व लेवी वसूली की घटनाओं में थे शामिल

CRIME REPORTER CHATRA : जिले की टंडवा थाना पुलिस ने टीपीसी के सब-जोनल कमांडर आदेश गंझू उर्फ प्रभाकर समेत पांच उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। टंडवा इलाके में आगजनी और लेवी वसूली की कई घटना को इन उग्रवादियों ने अंजाम दिया है। इनके पास से एक राइफल, दो पिस्टल, आठ गोली, एयर पिस्टल, 18 नक्सली पर्चा समेत कई अन्य सामानों को पुलिस ने बरामद किया है। गिरफ्तार उग्रवादी में टीपीसी सब जोनल कमांडर आदेश गंझू उर्फ प्रभाकर, पिंटू कुमार गंझू, लालदेव कुमार गंझू और राजेश गंझू शामिल हैं। गिरफ्तार उग्रवादी टंडवा थाना क्षेत्र के ही रहने वाले हैं।

BRIEF NEWS

गिरिडीह में गोवंश लदे दो ट्रक जब्त

GIRIDIH : जिले की बिरनी थाना पुलिस ने रविवार को बड़ी सफलता हासिल की है। 86 गोवंश से लदे दो ट्रकों को जब्त कर 8 तस्करों को भी दबोचा है। बताया गया है कि एसपी दीपक कुमार शर्मा के निर्देश पर बिरनी थाना प्रभारी मृत्युंजय कुमार सिंह ने रविवार सुबह थाना इलाके के माखमार्गो इलाके में जांच अभियान चलाकर 86 गोवंश लदे दो ट्रकों को जब्त किया। दोनों ट्रक बिहार के अलग-अलग जिलों से पश्चिम बंगाल के रास्ते बंगलादेश जाने की तैयारी में थे। इसी दौरान बिरनी के मखमरगो से गुजरने के क्रम में दोनों ट्रकों को जब्त कर लिया गया। दोनों ट्रकों से गिरफ्तार लोगों से पुलिस पूछताछ कर रही है।

सुजीत सिंह बने झारखंड प्रदेश डीजल ऑटो यूनियन के प्रदेश संरक्षक

RANCHI : रविवार को झारखंड प्रदेश डीजल ऑटो यूनियन के रांची महासभा में प्रखर समाजसेवी सुजीत सिंह जी को झारखण्ड प्रदेश का संरक्षक नियुक्त किया गया जिसमे दिनेश सोनी जी को पांचवी बार अध्यक्ष नियुक्त किया गया इस महासभा में सुजीत सिंह ने कहा की वो डीजल ऑटो यूनियन के लिए हमेशा ततपर और तैयार रहेंगे।

पिठोरिया में न्यू सहिया होटल का हुआ उद्घाटन

RANCHI : कांग्रेस के वरीय नेता सुरेश बैठक, पंचायत समिति सदस्य श्रवण गोप, मुखिया मुन्नी देवी, गौरी देवी और रुक्मिणी देवी के द्वारा पिठोरिया में न्यू सहिया होटल का उद्घाटन किया गया। इस होटल में उचित मूल्य पर देसी मटन और चावल की सुविधा ग्राहकों के लिए उपलब्ध रहेगा। होटल पिठोरिया-रांची मार्ग में पिठोरिया चौक के समीप मुड़हर पहाड़ के नीचे स्थित है। होटल के प्रोपराइटर सतीश कुमार रजक ने बतलाया कि शादी-विवाह, जन्म उत्सव और अन्य अवसरों पर होने वाली पार्टियों के लिए ग्राहकों के आर्डर पर खाना एवं अन्य सुविधा दी जाएगी। होटल खुलने से क्षेत्र के लोग बहुत खुश हैं। उद्घाटन के मौके पर नागपुरी के प्रसिद्ध गायक इगनेश कुमार, राजेश गोप, कलेश्वर गंझू, लेखराज राम, दीपक चौरसिया, भूपेश नायक, विनोद रजक, अमित केसरी, संजय मिश्रा, लतीफ अंसारी सहित अन्य मुख्य रूप से उपस्थित थे।

सिटी फोटो लैब मल्टी ब्रांड शोरूम का उद्घाटन

RANCHI : सिटी फोटो लैब मल्टी ब्रांड शोरूम, नॉर्थ समाज रोड, एचबी रोड रांची का उद्घाटन अमर कुमार बाउरी,विपक्ष के नेता ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद डॉ महुआ मांझी भी उपस्थित थीं। इस मौके पर बोलते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि झारखंड में यह एक अलग तरह का मल्टी ब्रांड फोटो बुक शोरूम है, जहां लोगों को अब सभी सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होगी ।उन्होंने भविष्य की शुभकामनाएं दी। इस मौके पर बोलते हुए सिटी फोटो लैब के संचालक सोनू ने कहा की झारखंड का यह पहला मल्टी ब्रांड फोटो बुक शोरूम है, जहां सभी तरह के एल्बम हब के रूप में अलग-अलग कंपनियों के उपलब्ध रहेंगे। अब ग्राहकों को एल्बम बनाने के लिए दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और बड़े शहरों की तरफ नहीं देखना पड़ेगा।

बाबूलाल ने धनबाद सर्किट हाउस में पत्रकारों से की बातचीत, बोले-

राज्यसभा सीट व सरफराज के इस्तीफे की 200 करोड़ में हुई डील

PHOTON NEWS DHANBAD : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने रविवार को दावा किया कि राज्यसभा सीट और 200 करोड़ में गांडेय विधानसभा सीट से इस्तीफे की डील हुई है। धनबाद में सर्किट हाउस पत्रकारों से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के झारखंड आने की खबर है लेकिन अब तक इसकी सूचना नहीं मिली है। सूचना मिलने के बाद मीडिया को उनके आगमन की जानकारी दी जाएगी।

गांडेय विधानसभा सीट से विधायक सरफराज अहमद के इस्तीफा देने को लेकर बाबूलाल

बाबूलाल मरांडी। ● फोटोन न्यूज

मरांडी ने कहा कि सरफराज अहमद के इस्तीफा के लिए 200 करोड़ में हेमंत सोरेन से डील हुई है। यह डील राज्यसभा सदस्य के लिए हुई है। यह चर्चा पूरे झारखंड में सड़कों पर हो रही है।

उन्होंने कहा कि हेमंत सोरेन का जेल जाना लगभग तय है। इसलिए जिस तरह लालू यादव ने राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री बनाया था। उसी तरह से गिरफ्तारी के बाद हेमंत सोरेन भी पत्नी को मुख्यमंत्री बनाने की तैयारी में हैं। इसलिए हेमंत सोरेन ने गांडेय विधानसभा सीट को खाली करवाया है। पत्नी कल्पना सोरेन को मुख्यमंत्री बनाना ही एक मुख्य कारण समझ में आता है, दूसरा कोई भी कारण समझ में नहीं आता है।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में धनबाद में नए एसएसपी के पदभार ग्रहण के बाद अवैध कोयले कारोबारी और उसमें संलिप्त पुलिस पदाधिकारी पर भी कार्रवाई चल रही है, जिसे लेकर बाबूलाल मरांडी ने कहा कि यह अच्छी बात है कि कार्रवाई की जा रही है लेकिन जिनके ऊपर कार्रवाई होनी चाहिए वह नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि पूर्व एसएसपी संजीव कुमार के ऊपर कार्रवाई के बजाय उनका प्रमोशन कर डीआईजी बना दिया गया। राज्य के मुख्यमंत्री खुद इस राज्य को लूटने में लगे हैं। वह खुद भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। उनके संरक्षण में लूट मची हुई है। लोकसभा चुनाव को लेकर उन्होंने कहा कि हमारी तैयारी चल रही है। हर सीट के लिए हम तैयार हैं।

डीलिस्टिंग के नाम पर आदिवासियों को बांटने की साजिश कर रही भाजपा : बंधु तिर्की

PHOTON NEWS KHUNTI : आगामी लोकसभा चुनाव एवं उसके बाद होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर आरएसएस एवं भाजपा के लोग वोटों के ध्रुवीकरण के प्रयास में जुट गए हैं। साथ ही डीलिस्टिंग के नाम पर आदिवासियों को बांटने की साजिश करने लगे हैं। ये बातें पूर्व विधायक और कांग्रेस नेता बंधु तिर्की ने कही। तिर्की रविवार को स्थानीय डाक बंगला में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित कर रहे थे।

मीडिया को जानकारी देते बंधु तिर्की। ● फोटोन न्यूज

उन्होंने कहा कि इसी साजिश के तहत पिछले दिनों रांची में जनजातीय सुरक्षा मंच के बैनर तले सभा का आयोजन किया गया था। उन्होंने कहा कि डीलिस्टिंग के नाम पर सिर्फ ईसाई धर्म अपनाने वाले लोगों को जिस प्रकार टारगेट किया जा रहा है और असंवैधानिक बातें की जा रही हैं, उसे लेकर आदिवासी जनाधिकार मंच द्वारा आगामी चार फरवरी को रांची के मोरहाबादी मैदान में आदिवासी एकता महारैली का आयोजन किया गया है।

आदिवासी एकता महारैली में आदिवासियों के ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा की जाएगी और आदिवासियों की चट्टानी एकता को प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि डीलिस्टिंग के नाम पर आदिवासियों को बरगलाने का प्रयास किया जा रहा है जबकि सच्चाई यह है कि लूकर कमेटी को लागू करने पर कड़िया मुंडा, अर्जुन मुंडा, बाबूलाल मरांडी आदि भाजपा नेता स्वयं डीलिस्टिंग में आ जाएंगे। उन्होंने कहा कि आरएसएस और भाजपा चाहे जितना नाक रगड़ ले झारखंड में वे कामयाब नहीं हो सकते।

फेयर प्राइस डीलर एसोसिएशन की बैठक में शामिल हुए प्रदेश के नेता

मंत्री को डीलरों से एलर्जी : ओंकारनाथ

PHOTON NEWS RAMGARH : झारखंड में फेयर प्राइस डीलर एसोसिएशन ने सरकार की गलत नीतियों के खिलाफ आर-पार की लड़ाई शुरू कर दी है। संगठन की एक बैठक रविवार को रामगढ़ शहर के क्षत्रिय धर्मशाला परिसर में आयोजित हुई। इस बैठक में शामिल संगठन के प्रदेश अध्यक्ष ओंकारनाथ झा ने सीधे तौर पर खाद्य आपूर्ति मंत्री रामेश्वर उरांव पर गंभीर आरोप लगाए हैं।

उन्होंने कहा कि मंत्री को डीलरों से एलर्जी है। यही वजह है कि वे ना तो डीलरों के कमीशन का भुगतान कर पा रहे हैं और ना ही उन्हें अनुकंपा का लाभ दिला रहे हैं। यहां तक कि कमीशन की बढ़ोतरी का आश्वासन मिलने के बाद भी आज तक उसपर अमल नहीं हुआ। ओंकार नाथ झा ने कहा कि झारखंड सरकार ने कमीशन बढ़ोतरी का आश्वासन दिया था लेकिन कब और कितना होगा इस पर कोई चर्चा नहीं हुई।

बैठक में शामिल लोग। ● फोटोन न्यूज

उन्होंने कहा कि 2022 तक डीलरों को अनुकंपा का लाभ मिला था लेकिन 2023 से इसे समाप्त कर दिया गया है। इस दौरान काल कल्वित हुए डीलर का परिवार भूखे करने को विवश हैं। उन्होंने कहा कि पूरे झारखंड में प्रधानमंत्री कल्याण योजना के तहत लगभग 200 करोड़ से ज्यादा की राशि सरकार पर बकाया है। जिसका भुगतान नहीं हो पा रहा है। यदि समय पर कमीशन का भुगतान नहीं होगा तो डीलर का परिवार कैसे चलेगा?

उन्होंने कहा कि इंटरनेट सरवर की समस्या की वजह से ऑथेंटिकेशन नहीं हो पता है, जिसका सारा खामियाजा डीलर को भुगतना पड़ता है। एनएफएसए में एडवांस कमीशन भुगतान का प्रावधान है। यदि सरकार समय पर ही कमीशन दे दे तो बड़ी बात होगी। उन्होंने कहा कि कोरोना के दौरान भी डीलर ने जान हथेली पर लेकर अनाज का भुगतान किया। झारखंड में कई डीलर काल कल्वित हुए लेकिन उन्हें कोई मुआवजा नहीं मिला। इन्हीं सब मुद्दों को लेकर आज फेयर प्राइस डीलर एसोसिएशन एकजुट हुआ है। पिछले एक जनवरी से हमारा हड़ताल जारी है और जब तक हमारी मांगे पूरी नहीं होगी, हमारा यह आंदोलन चलता रहेगा।

खान सुरक्षा महानिदेशालय ने मनाया 123वां स्थापना दिवस

खदानों में होने वाली दुर्घटनाओं का दर अब 10वें स्थान से भी नीचे : प्रभात कुमार

PHOTON NEWS DHANBAD : खान सुरक्षा महानिदेशालय (डीजीएमएस) ने रविवार को 123वां स्थापना दिवस मनाया। धनबाद स्थित खान सुरक्षा महानिदेशालय के ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में खान सुरक्षा महानिदेशक प्रभात कुमार, निदेशक गण सहित तमाम डीजीएमएस के अधिकारी और कर्मी मौजूद रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कोल इंडिया के चेयरमैन पीएन प्रसाद शामिल हुए।

उल्लेखनीय है कि 1902 में खान निरीक्षण ब्यूरो की स्थापना की गई थी, जिसका मुख्यालय कोलकाता में था। खान निरीक्षण ब्यूरो का ही बदला रूप डीजीएमएस धनबाद में है।

कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से बातचीत में डीजीएमएस के महानिदेशक ने बताया कि खान सुरक्षा

समारोह में शामिल अतिथि व अन्य। ● फोटोन न्यूज

महानिदेशालय के प्रयासों का ही फल है कि खदानों में होने वाली दुर्घटनाओं का दर अब 10वें स्थान से भी नीचे है। उन्होंने कहा कि डीजीएमएस हर साल न सिर्फ हजारों मजदूरों की जान बचाती है, बल्कि लाखों टन मिनिरल्स का भी संरक्षण करती है। उन्होंने कहा कि आज देश में खनिज की मांग काफी बढ़ गई है, जिस वजह से प्रोडक्शन भी कई गुणा बढ़ गया है। ऐसे में डीजीएमएस का काम भी काफी बढ़ गया है लेकिन सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए। यही कारण है कि खदानों में होने वाली दुर्घटनाओं में काफी कमियां आई है।

उन्होंने इस मौके पर धनबाद-चंद्रपुरा रेल लाइन पर मंडराते खतरे को एक बार फिर से दोहराया। उन्होंने कहा कि डीसी रेल लाइन पर खतरा है लेकिन रेलवे, बीसीसीएल, आईएसएम आईआईटी और सिम्फर जैसी संस्थाएं लगातार इसपर अपनी नजर नजर रखे हुए हैं और इसका रिपोर्ट भी लगातार डीजीएमएस को भेजा जा रहा है ताकि समय रहते खतरे को देखते हुए सुरक्षात्मक कदम उठाया जा सके। उन्होंने कहा कि इस दिशा में बीसीसीएल को भी साफ निर्देश दिए गए है कि वो रेल लाइनों की तरफ कोयला उत्खनन का कार्य नही करेगी।

इस मौके पर मौजूद कोल इंडिया के चेयरमैन पीएन प्रसाद ने कहा कि डीजीएमएस एक महान संस्थान है। करीब 1774 से कोल माइनिंग भारत में हो रहा है। ऐसे में पहले कई दुर्घटनाएं हुईं, जिसको रोकने के लिए 1902 में डीजीएमएस की स्थापना की गई। इसके बाद से दुर्घटनाओं में काफी कमियां आई है।

लिंग आधारित हिंसा के खिलाफ राष्ट्रीय अभियान कार्यक्रम का आयोजन

पिछड़े होने की मानसिकता से बाहर निकलने की जरूरत : एसएन पाठक

PHOTON NEWS KHUNTI : जिले के कन्या मध्य विद्यालय सभागार में रविवार को लिंग आधारित हिंसा के विरुद्ध राष्ट्रीय अभियान कार्यक्रम खूंटी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि झारखंड हाई कोर्ट के न्यायाधीश डॉ एसएन पाठक ने महिलाओं के बीच परिसंपत्तियों का वितरण किया और हिंसा के खिलाफ हमेशा आवाज बुलंद करने की सामूहिक शपथ ली। इस दौरान उन्होंने महिलाओं को जागरूक दृष्टिकोण अपनाने की बात कही।

डॉ एसएन पाठक ने उपस्थित दीदियों को संबोधित करते हुए कहा कि पिछड़े होने की मानसिकता से आज बाहर निकलने की जरूरत है। हमारा

कार्यक्रम में महिला को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते डॉ एसएन पाठक। ● फोटोन न्यूज

संविधान हमारे लिए है, न्याय प्रणाली यहां के लोगों के लिए है। उन्होंने कहा कि खूंटी में बदलाव सिर्फ आधारभूत संरचनाओं को खड़ा करने से नहीं हो सकता, बल्कि अंतिम पायदान पर खड़े लोगों विशेषकर महिलाओं को राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाकर और उसमें न्याय प्रणाली की भूमिका सुनिश्चित करने से होगा।

महिलाओं को संबल प्रदान करने के लिए खूंटी में पिछले एक दशक में हुए परिवर्तन की चर्चा करते हुए जस्टिस एसएन पाठक ने कहा कि अपने दौरे के क्रम में उनका मुख्य जोर स्थानीय कोर्ट और उसके पदाधिकारियों के साथ ही जिला प्रशासन से मिलकर महिलाओं के उत्थान से जुड़े कार्यक्रमों के आयोजन पर रहा है, ताकि महिलाओं को आसानी से अन्य जिलों व राज्य से जोड़ा सके। इस दिशा में हुई सकारात्मक पहल से कई बदलाव भी हुए हैं लेकिन अभी भी अक्सर होने वाली महिला उत्पीड़न से संबंधित घटनाओं को देखते हुए सजग और संवेदनशील होने की जरूरत है, ताकि समाज में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण हो सके। खूंटी व्यवहार न्यायालय के प्रधान जिला एवम सत्र न्यायाधीश सत्य प्रकाश ने कहा कि महिलाएं ही अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी समझती हैं, परिवार चलाती हैं घर संभालती हैं और समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभाती हैं, महिलाएं ही घर की निमार्ता हैं।

मधु पहाड़िया हत्याकांड में दो आरोपी गिरफ्तार

SAHIBGANJ : जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अन्तर्गत बेतौना संथाली के पास चार जनवरी को शेरगढ़ निवासी छोटा मधु पहाड़िया (51) की हत्या मामले में पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल की है। जिरवाबाड़ी थाने में रविवार को प्रशिक्षु डीएसपी रूपक कुमार सिंह ने पत्रकारों को बताया कि मामले में दो आरोपियों बड़ा पचरुखी निवासी गुल्लू उर्फ गोलू पहाड़िया और ओलू पहाड़िया को गिरफ्तार कर लिया गया है। दोनों की निशानदेही पर एक खून लगा दबिया, खून लगा शर्ट बरामद किया गया है। डीएसपी ने बताया कि 10 /2023 को पूषा पहाड़िया की हत्या हुई थी। इस मामले में छोटा मधु पहाड़िया का पुत्र सोमरा पहाड़िया जेल में बंद है। शुरूआती अनुसन्धान में संपत्ति विवाद की बात सामने आई है। छोटा मधु पहाड़िया का एक हत्यारोपी गोलू पहाड़िया पूषा पहाड़िया का साला है। मामले में मृतक के पुत्र राजू पहाड़िया के बयान पर जिरवाबाड़ी थाना कांड संख्या 1/24 के तहत अनुसन्धान जारी है।

सोहराय पर्व पर मांदर की थाप पर थिरके डीआईजी-एसपी

मांदर बजाते व झूमते डीआईजी-एसपी। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS DUMKA : पुलिस लाईन मैदान में रविवार को धूमधाम से सोहराय पर्व मनाया गया। विधि-विधान से नायकी बाबा ने प्रकृति पूजा कर मुर्गा की बलि देकर पूजा कराया। बाद में खिचड़ी के रूप में प्रसाद का वितरण किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संताल परगना के डीआईजी संजीव कुमार, एसपी पीताम्बर सिंह खेरवार, डीएसपी मुख्यालय विजय कुमार, एसडीपीओ, सदर मो नूर मुस्तफा एवं प्रशिक्षु डीएसपी शामिल हुए। सभी संताल आदिवासी समुदाय के पारंपरिक पोशाक पंछी-लुंगी में दिखे। सभी पारंपरिक वाद्य यंत्र ढोल, मांदर, झाल आदि बजा खूब थिरके। अतिथियों का स्वागत आयोजन कमेटी लोटा-पानी एवं पारंपरिक नृत्य-संगीत से किया। इसके बाद आदिवासी महिलाएं, युवतियां एवं युवकों ने ढोल और मांदर की थाप पर नाचते- गाते दिखे। सभी सोहराय पर्व के धूम में दिखे। सोहराय पर्व मूल रूप से सोहराय चांदो में मनाया जाता है। लेकिन संताल विद्रोह में मार्शल लॉ के कारण संताल परगना क्षेत्र में पुश चांदो में धूमधाम के साथ मनाया जाता है।

आईपीएल की तर्ज पर टी10 विल्स प्रीमियर लीग का हुआ शुभारंभ

PHOTON NEWS RANCHI : प्रीमियर लीग सीजन 5 विल्स क्लब के तत्वावधान में ओपनिंग मैच रविवार को विल्स बालसटर बनाम विल्स फाइटर के बीच खेला गया जिसमें फाइटर की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुवे 10 ओवर मे 52 रन ही बना सकी। स्कोर का पीछा करते हुए बालसतर की टीम ने 8 ओवर में 4 विकेट खोकर मैच को अपने नाम कर लिया। इस मैच में तौफीक को मैने ऑफ दा मैच चुना गया।

टूर्नामेंट का दूसरा मैच वील्स राइडर बनाम विल्स हेरोस के बीच खेला गया जिसमे रैडर की टीम ने 4 विकेट से जीत दर्ज की। इस मैच का मैन ऑफ द मैच बिनोद को दिया गया। टूर्नामेंट के अध्यक्ष मो इमरान (पिंकू) ने बताया की रांची क्षेत्र के लगभग सभी खिलाड़ी इस

टूर्नामेंट में भाग लेते है। इस टूर्नामेंट से नए खिलाड़ियों को अपने अंदर छिपे प्रतिभा को दिखाने का अवसर मिलता है और उसे क्रिकेट जगत में उसे एक पहचान मिलता है। मैच में भारतीय रेलवे माल गोदाम श्रमिक यूनियन के वेस्ट सेंट्रल रेलवे के जोनल सेक्रेटरी, राजु कुमार शर्मा, वाइस प्रेसिडेंट शाहिद अफरीदी, साउथ ईस्टर्न रेलवे के प्रेसिडेंट नेशार अहमद, ईमरान अंसारी, अजय कुमार गौतम, नफीस अखतर, महमूद आलम एवं क्लब के अन्य सदस्य उपस्थित थे।

40 वर्षों की संभावित जनसंख्या को ध्यान में रखकर शुरू की गई खूंटी शहरी जलापूर्ति योजना चल रहा कछुए की चाल

दो वर्षों में पूरी होनी थी योजना, पांच वर्षों में महज 40 फीसदी काम

PHOTON NEWS KHUNTI : खूंटी शहरी क्षेत्र में आगामी 40 वर्षों की संभावित जनसंख्या को ध्यान में रखकर पांच वर्ष पहले शुरू की गई खूंटी शहरी जलापूर्ति योजना अपनी कछुए की चाल के कारण अब भी अधर में लटकी है। 59.54 करोड़ की लागत से बनने वाली इस परियोजना को दो साल में पूरा करना था, लेकिन कार्यकारी एजेंसी जुडको के अधिकारियों की लापरवाही के कारण पांच वर्षों के बाद भी 40 फीसदी भी काम नहीं हुआ है। शहरी जलापूर्ति योजना से निर्बाध पानी मिलने का सपना संजोए शहर के लोगों के लिए यह योजना अभी दूर की कौड़ी है।

59.54 करोड़ की लगात वाली खूंटी शहरी जलापूर्ति योजना का एकरारनामा 18 जनवरी 2019 को

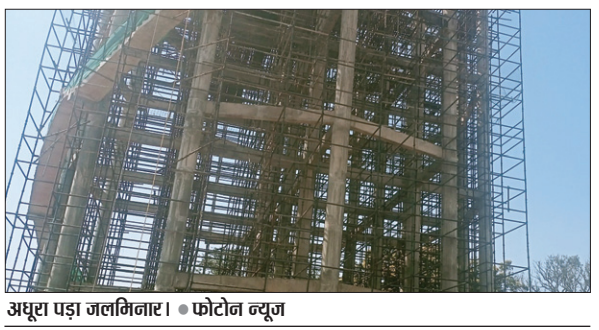

अधूरा पड़ा जलमिनार। ● फोटोन न्यूज

हुआ था। एकरारनामा के अनुसार दो वर्षों में योजना को पूरा करना था, लेकिन जिस गति से काम हो रहा है, उससे तो यही लगता है कि दस वर्षों में भी शायद ही यह योजना पूरी हो। खूंटी नगर पंचायत क्षेत्र में आगामी 40 वर्ष बाद तक बढ़नेवाली आबादी को पर्याप्त पानी उपलब्ध हो सके, इसे ध्यान में रखकर तत्कालीन ग्रामीण विकास मंत्री नीलकंठ सिंह मुंडा के प्रयास से एनडीए सरकार ने विश्व बैंक संपोषित खूंटी शहरी जलापूर्ति योजना शुरू की थी। वर्ष 2018 में तत्कालीन नगर विकास मंत्री सीपी सिंह ने नगर भवन में शिलान्यास किया था।

जुडको की देखरेख में चल रही इस महत्वाकांक्षी योजना का काम तमिलनाडु के श्रीराम ईपीसी को सौंपा गया है। कंपनी द्वारा जिस कच्छप गति से काम को अंजाम दिया जा रहा है, उससे यह कतई संभव नहीं कि काम 2024 में तो क्या 2030 तक भी योजना पूरी हो सकेगी।

योजना में धीमे काम को लेकर कई बार जिले के उपायुक्त कंपनी के अधिकारियों को फटकार भी लगा चुके है, लेकिन कंपनी की कार्यप्रणाली में कोई सुधार नहीं हो रहा है। इस महत्वपूर्ण योजना में एक नया फिल्ट्रेशन प्लांट शहर के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग क्षमता के तीन नये जलमीनार का निर्माण करना है। साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में पाइपलाइन भी बिछानी है। इनमें से फिल्ट्रेशन प्लांट और जलमीनारों के निर्माण का काम अभी पूरी नहीं हुई है।

वहीं कई क्षेत्रों में पाइपलाइन बिछाने का काम कर दिया गया है। पाइप लाइन बिछाने के नाम पर कई क्षेत्रों में पक्की पीसीसी सड़क को खोदकर अस्त-व्यस्त कर दिया गया है। संवेदक कंपनी का कहना है कि योजना में सड़क मरम्मत का प्रावधान है, लेकिन पाइपलाइन में पानी आपूर्ति का टेस्ट करने के बाद सड़क की मरम्मत की जाएगी। यहां प्रश्न उठता है कि योजना का अन्य महत्वपूर्ण कार्य अभी प्रारंभिक चरण में है, तो सड़कों को बर्बाद करना कहां तक उचित है।

विलंब के लिए राज्य सरकार जिम्मेवार : नीलकंठ मुंडा

जलापूर्ति योजना की धीमी गति के संबंध में पूछे जाने पर खूंटी के विधायक और राज्य के तत्कालीन ग्रामीण विकास मंत्री नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि खूंटी शहरी जलापूर्ति में हो रही देरी के लिए राज्य सरकार पूरी तरह जिम्मेवार है। उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं सरकार विधानसभा में भी इस योजना को लेकर गलत जानकारी देती है। विधायक ने कहा कि कुछ दिन पहले जब उन्होंने विधानसभा में मामले को उठाया, तो सरकार द्वारा 95 फीसदी काम पूरा हो चुका है, जबकि धरातल पर मुश्किल से 40 फीसदी ही काम हुआ है। ऐसा नहीं है कि विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा इस मामले कों पहली बार विधानसभा में उठाया हो। इसके पहले भी वे विधानसभा में खूंटी शहरी जलापर्ति योजना की धीमी प्रगति का मामला उठा चुके हैं। खूंटी के विधायक इसके पहले भी तारांकित प्रश्न के तहत मामला उठा चुके हैं। उस समय विभाग के मंत्री द्वारा बताया गया था कि जनवरी 2022 तक योजना पूरी हो जाएगी, लेकिन जनवरी 2024 तक महज 40 फीसदी ही काम हो सका है।

BRIEF NEWS

सारे भ्रष्टाचारी जाएंगे जेल: प्रतुल शाहदेव

RANCHI : भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने रविवार को कहा कि झारखंड और पश्चिम बंगाल में भ्रष्टाचार की जांच कर रहे ईडी के अफसरों के खिलाफ लगातार साजिश हो रही है। पश्चिम बंगाल में तो 48 घंटे के भीतर दूसरी बार ईडी की टीम पर हमला हुआ। यूपीए के 10 वर्षों के शासनकाल में ईडी ने सिर्फ 5000 करोड़ के अवैध संपति और कैश की रिकवरी की थी जबकि यह रिकवरी एनडीए के शासनकाल के साढ़े नौ वर्षों में बढ़ कर 1,25,000 करोड़ से ज्यादा की हो गई है। प्रतुल ने कहा कि झारखंड में भी ईडी के अफसरों पर जेल के भीतर बंद सत्ता के करीब रहे दलालों ने नक्सलियों से हमला कराने और हनी ट्रैप में फंसाने की साजिश रची थी लेकिन इन चीजों से नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में चल रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान विचलित नहीं होने वाला है। सारे भ्रष्टाचारी जेल के भीतर ही दिखेंगे।

राष्ट्रीय महिला टेनिस टूर्नामेंट कल से

RANCHI : झारखंड टेनिस एसोसिएशन ने आठ से 12 जनवरी तक खेलगांव के टेनिस स्टेडियम में राष्ट्रीय महिला टेनिस टूर्नामेंट का आयोजन किया है। टूर्नामेंट का फाइनल मैच 12 जनवरी को खेला जाएगा। एकल और युगल दो श्रेणियों में मैच खेले जाएंगे। झारखंड में 34वें राष्ट्रीय खेलों के बाद यह पहला राष्ट्रीय स्तर का टेनिस टूर्नामेंट है।

सड़क हादसे में मृतक के आश्रित को ₹2 लाख दिया जाएगा मुआवजा

RANCHI : विशिष्ट स्थानीय आपदा से मृत व्यक्तियों के आश्रितों को क्षतिपूर्ति के लिए जिला प्रशासन की ओर से मुआवजा दिया जायेगा। रांची डीसी राहुल कुमार सिन्हा ने राज्य विशिष्ट स्थानीय आपदा के तहत सड़क दुर्घटना में मृत व्यक्ति के आश्रित को क्षतिपूर्ति मुआवजा अनुदान की स्वीकृति दी। सिल्ली के आवेदिका सोनी साहु के 46 वर्षिय पति स्व। रमेश कुमार साहु की मृत्यु 19 जून 2022 को सिल्ली में अज्ञात वाहन के धक्के से घटनास्थल पर ही हो गई थी। रमेश साहू के आकस्मिक निधन से परिवार आहत है। सिल्ली अंचल अधिकारी की अनुशंसा के बाद रमेश साहू की पत्नी सोनी साहु को मुआवजा भुगतान की स्वीकृति दी गई है।

टैक्सी चालकों को मिलेगा सरकारी योजनाओं का लाभ

RANCHI : रांची टैक्सी चालक संघ की टीम के साथ सांसद रांची संजय सेठ ने टैक्सी मालिकों और चालकों को सरकार की कई योजनाओं से जोड़ने का आश्वासन दिया और कहा कि जल्द उनके स्तर पर पहल की जायेगी। उन्होंने ये बातें रांची टैक्सी चालक संघ के संस्थापक चंदन पाठक के नेतृत्व में उनसे मिलने गये प्रतिनिधिमंडल से कहीं। टैक्सी चालक संघ ने सांसद को नववर्ष की बधाई के साथ अपनी समस्याओं से सांसद को अवगत कराया।

atom美
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित होगा भारत जोड़ो न्याय यात्रा : ठाकुर

लोगो व टैगलाइन जारी, कांग्रेस ने मोदी सरकार पर जमकर साधा निशाना

PHOTON NEWS RANCHI : प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में रविवार को भारत जोड़ो न्याय यात्रा को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। ये यात्रा देश के बुनियादी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर केंद्रित होगी। प्रेस कांफ्रेंस में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने ईडी की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए कहा, जब-जब हमारी सरकार जनता से जुड़ने की कोशिश करती है, मोदी सरकार अपनी एजेंसी का इस्तेमाल कर राज्य सरकार को परेशान करती है। राज्य में कांग्रेस, राजद और जेएमएम गठबंधन की बहुमत सरकार है। सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी। राज्य में संवैधानिक संकट नहीं होने वाला है। राहुल गांधी की प्रस्तावित भारत जोड़ो न्याय यात्रा के लेकर कहा कि जहां पीएम नरेंद्र मोदी मणिपुर जैसे संवेदनशील राज्य में न जाकर वहां की जनता से दूर हो रहे हैं। वहीं राहुल गांधी मणिपुर से यात्रा शुरू कर रहे हैं, ताकि वहां के लोगों के दुख बांट सके। यात्रा में इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस यानी विपक्षी गठबंधन इंडिया के नेताओं और नागरिक समाज के सदस्यों को भी मार्च में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में कांग्रेस विधायक दल के नेता आलमगीर आलम सहित पार्टी के कई नेता मौजूद थे।

राजेश ठाकुर ने कहा कि पीएम भी मणिपुर जैसे संवेदनशील मुद्दे पर अपनी चुप्पी तोड़ने का काम करें। राहुल गांधी की यात्राओं से बीजेपी की आईटी सेल घबरा चुकी है। आज देश में लोकतंत्र की क्या हालत है, यह किसी से छिपा नहीं है। लोकतंत्र की परिभाषा बदली जा रही है। जिसकी वजह से राहुल गांधी ने इस यात्रा को निकालने का काम किया है। उन्होंने पीएम पर तंज कसते हुए कहा कि देश के प्रधानमंत्री फोटो शूट में लगे हुए हैं। जब हम संसद में देश के हालात पर बात रखते हैं तो हमारे सांसदों को बाहर कर दिया जाता

प्रेस कांफ्रेंस कर जानकारी देते प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर व अन्य।

बुनियादी मुद्दों पर होगी यात्रा : आलमगीर

कांग्रेस विधायक दल नेता आलमगीर आलम ने कहा कि 14 जनवरी से शुरू होने वाली भारत जोड़ो न्याय यात्रा की शुरूआत हो रही है। यह यात्रा झारखंड में दो बार गुजरेगी। राज्य के लोग इस यात्रा में शामिल होने के लिए व्याकुल हैं। यह यात्रा 2024 के लिए निर्णायक होगी, इस यात्रा में सामाजिक न्याय की बात होगी। किसानों को अब तक दोहरा लाभ नहीं मिला, अभी तक लोगों के सर के ऊपर छत नहीं है। पार्टी एक सोच के साथ काम करती है। हमें पूर्वजों ने लोकतंत्र दिया है, इसकी रक्षा करने का काम इस यात्रा के माध्यम से किया जा रहा है।

2 से 5 फरवरी के बीच झारखंड पहुंचेगी यात्रा, प. बंगाल से राज्य में करेगी प्रवेश

कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की शुरूआत मणिपुर से 14 जनवरी को होगी। यात्रा झारखंड में 2 से 5 फरवरी तक पहुंचने की संभावना है। राज्य में हर चार से पांच किलोमीटर पर मंत्री और विधायकों को यात्रा की जिम्मेदारी सौंपी गई है। झारखंड में यह यात्रा दो बार होकर गुजरेगी। न्याय यात्रा को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद भारत जोड़ो न्याय यात्रा का लोगो और टैगलाइन भी लॉन्च किया गया। बता दें कि राहुल गांधी के नेतृत्व में मणिपुर से महाराष्ट्र तक की यात्रा 14 जनवरी से शुरू होगी और यह 6,713 किलोमीटर की दूरी तय करेगी। झारखंड में यह यात्रा पश्चिम बंगाल से प्रवेश करेगी। इसमें शामिल लोग बसों से और पैदल यात्रा भी करेंगे। 2024 के आम चुनाव से पहले आयोजित की जा रही यात्रा 66 दिनों में 110 जिलों, 100 लोकसभा क्षेत्रों और 337 विधानसभा क्षेत्रों से होकर गुजरेगी। जिसकी शुरूआत मणिपुर की राजधानी इंफाल से होगी। इस अवसर पर प्रदेश कांग्रेस कमिटी के संगठन प्रभारी अमूल्य नीरज खलखो, मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा, सतीश पॉल मुंजनी, प्रवक्ता रियाज अंसारी उपस्थित थे।

सीआईडी ने बिहार से साइबर ठग को दबोचा

पैसे कमाने का लालच देकर करता था ठगी

गिरफ्तार आरोपी को जेल ले जाती सीआईडी की टीम।

CRIME REPORTER RANCHI : अपराध अनुसंधान विभाग (सीआईडी) की साइबर क्राइम थाना ने क्रिप्टो करेंसी के जरिए निवेश कर अधिक पैसे कमाने का लालच देकर घोटाला करने वाला साइबर अपराधी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी शशि शंकर कुमार उर्फ विक्की को सीआईडी ने बिहार के मुजफ्फरपुर से गिरफ्तार किया है। इसके पास से एक मोबाइल, दो सिम कार्ड, चार चेक बुक, एक पासबुक, एक वाई-फाई राउटर बरामद किया गया है। सीआईडी डीजी अनुराग गुप्ता ने रविवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि आरोपित शशि शंकर कुमार और इसके अन्य सहयोगी ने झारखंड के कई शहरों जैसे रांची, बोकारो जमशेदपुर और अन्य जगहों पर बड़े-बड़े कई आयोजन स्थल जैसे होटलों और अन्य स्थानों पर ओआरओपीएवाई कंपनी से संबंधित अनेकों अनेक कार्यक्रम किये, जिसमें लोगों को मुफ्त में भोजन और जलपान की व्यवस्था देते हुए अपने प्रभाव को स्थापित करने के लिए भारतीय मुद्रा के फर्जी नोटों की गड्डियों को फाड़कर संदेश देने का प्रयास किया कि भविष्य क्रिप्टो करेंसी का है। लोगों के बढ़ते निवेश को देखते हुए आरोपित शशि शंकर कुमार उर्फ विक्की और अन्य सहयोगी ने फर्जी वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट ओआरओपीवाई डॉट आईओ को एक दिन बंद करते हुए निवेशकों को भारी चपत लगाई। जब वेबसाईट बंद हो गया तब इन लोगो ने अलग होकर अपने संपर्क को कम किया लेकिन इस तरह के अन्य वेबसाईट के माध्यम से अपने ठगी के व्यापार को आगे बढाने के लिए प्रयासरत रहे।

59 अफसरों ने किया झारखंड के स्कूलों का औचक निरीक्षण, पकड़ी गड़बड़ियां

सरकारी स्कूल में निरीक्षण करने पहुंची टीम।

PHOTON NEWS RANCHI : शिक्षा विभाग के 59 पदाधिकारियों ने 4 से 6 जनवरी तक राज्यभर के सरकारी स्कूलों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान पदाधिकारियों ने कई स्कूलों में भारी गड़बड़ियां पकड़ी हैं। राज्य के 24 जिलों में झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद की ओर से ये पदाधिकारी भेजे गये थे। 2 और 3 सदस्यीय टीम बनाकर इन पदाधिकारियों ने हर जिले में 8 से 10 स्कूलों का औचक निरीक्षण किया। स्कूलों की ओर अपडेट की गई शिशु पंजी को चेक किया। मिड डे मील के भोजन की क्वालिटी चेक की। निःशुल्क पोशाक, स्कूल बैग, स्कूल किट और साइकिल वितरण समेत अन्य योजनाओं में स्कूल की रिपोर्ट देखी और फिर गांवों में घूम-घूमकर शिशु पंजीकरण, आउट ऑफ स्कूल एवं ड्रॉप आउट से जुड़े मामलों की जमीनी पड़ताल की। इस दौरान उन्होंने अभिभावकों और बच्चों से बातचीत की। पड़ताल के दौरान पदाधिकारियों ने कई गड़बड़ी पकड़ी। पदाधिकारी 7 जनवरी को वापस लौटकर अपनी रिपोर्ट झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद को सौंपेंगे। उनकी रिपोर्ट के आधार पर संबंधित स्कूलों के शिक्षकों और हेडमास्टरों पर कार्रवाई की जाएगी। झारखंड में स्कूली बच्चों का ड्रॉप आउट रेट कम करने और बच्चों को स्कूल तक लाने के लिए शिक्षा विभाग की ओर से कई योजनाएं और कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। झारखंड शिक्षा परियोजना की ओर से योजनाएं बनाकर लागू की जाती है। जिलों को योजनाओं के क्रियान्वयन का निर्देश दिया जाता है, लेकिन जिला स्तर पर मॉनिटरिंग के अभाव में योजनाएं दम तोड़ देती हैं। विभाग की योजनाओं की जमीनी हकीकत जानने के लिए शिक्षा परियोजना परिषद ने राज्यस्तरीय अनुश्रवण समिति का गठन कर जिलों में भेजा।

साइबर अपराधियों के खिलाफ कारगर हथियार साबित हो रहा है प्रतिबिंब पोर्टल, 468 गिरफ्तार

पोर्टल के जरिए साइबर अपराध में एक महीने के भीतर 20 फीसदी से अधिक की गिरावट आई

CRIME REPORTER RANCHI : साइबर अपराधियों के खिलाफ प्रतिबिंब पोर्टल कारगर हथियार साबित हो रहा है। पायलट प्रोजेक्ट के दौरान ही इस पोर्टल की मदद से झारखंड में एक महीने में 468 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है। इसके परिणाम स्वरूप झारखंड इलाके से होने वाले साइबर अपराध में एक महीने के भीतर ही 20 फीसदी से अधिक की गिरावट आयी है। दिसंबर के पहले हफ्ते में झारखंड से कुल 31,228 साइबर अपराध रिपोर्ट हुए थे। जबकि 28 दिसंबर से तीन जनवरी के सप्ताह में कुल 24,264 साइबर अपराध ही रिपोर्ट हुए। प्रतिबिंब पोर्टल के माध्यम से झारखंड में पिछले एक महीने के दौरान 468 साइबर अपराधी गिरफ्तार हुए। 1635 सिम कार्ड बरामद किए गए, इसके अलावा 1107 मोबाइल फोन भी जब्त किए गए। साइबर अपराधी सबसे अधिक देवघर जिले में 200 गिरफ्तार हुए हैं। इसके अलावा धनबाद में 10, गिरिडीह में 114, हजारीबाग में 37, जमशेदपुर में चार, जामताड़ा में 70, पाकुड़ में पांच, गोड्डा में तीन, बोकारो में पांच, गढ़वा में एक, कोडरमा में 10,लातेहार में चार और दुमका में पांच साइबर अपराधी गिरफ्तार किए गए हैं।

ठगों की रियल टाइम मिल जाती है जानकारी

प्रतिबिंब पोर्टल को केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत आने वाले इंडियन साइबर क्राइम कोआर्डिनेशन सेंटर (आई4सी) ने तैयार किया है और इसकी मदद से किसी इलाके में सक्रिय साइबर अपराधियों की रियल टाइम जानकारी उस क्षेत्र के एसपी और थाना प्रभारी को मिल जाती है। क्रिप्टोकरेंसी घोटाला करने वाला साइबर अपराधी को सीआईडी ने गिरफ्तार किया है। शशि शंकर कुमार उर्फ विक्की सीआईडी ने बिहार के मुजफ्फरपुर से गिरफ्तार किया। सीआईडी डीजी अनुराग गुप्ता ने बताया कि आरोपी शशि शंकर कुमार और इसके अन्य सहयोगी ने झारखंड के कई शहरों जैसे रांची, बोकारो जमशेदपुर और अन्य जगहों पर बड़े-बड़े कई आयोजन स्थल जैसे होटलों और अन्य स्थानों पर ओरोपे कंपनी से संबंधित अनेकों अनेक कार्यक्रम किये, जिसमें लोगों को मुफ्त में भोजन और जलपान की व्यवस्था देते हुए अपने प्रभाव को स्थापित करने के लिए भारतीय मुद्रा के फर्जी नोटों की गड्डियों को फाड़कर संदेश देने का प्रयास किया कि भविष्य क्रिप्टो करेंसी का है। लोगों के बढ़ते निवेश को देखते हुए आरोपी शशि शंकर कुमार उर्फ विक्की और अन्य सहयोगी ने फर्जी वेबसाइट को एक दिन अचानक बंद करते हुए निवेशकों को भारी चपत लगाई।

एसएसपी ने नव प्रोन्नत सात डीएसपी को किया सम्मानित

रांची एसएसपी के साथ सम्मानित होन वाले नव प्रोन्नत डीएसपी।

CRIME REPORTER RANCHI : नव प्रोन्नत सात डीएसपी का पदोन्नति समारोह (पिपिंग सेरेमनी) एसएसपी आवास में रविवार को आयोजित हुआ। प्रोन्नति पाने वालों में रांची जिला बल के सात इंस्पेक्टर वेंकटेश कुमार, अरविंद, नीरज, रमेश, संजीव कुमार, नीरज और सत्यनारायण सिंह शामिल हैं। एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने सभी डीएसपी को बैज लगाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर राजकुमार मेहता भी मौजूद रहे। उल्लेखनीय है कि गत 28 दिसम्बर को इंस्पेक्टर से डीएसपी रैंक में कुल 93 पुलिस पदाधिकारियों को प्रोन्नति दी गई थी।

ट्रेनिंग के लिए हैदराबाद जाएंगे झारखंड के 13 आईपीएस, पिछले साल मिला था प्रमोशन

पुलिस मुख्यालय से आदेश जारी, ट्रेनिंग के लिए एनपीए में देना है योगदान

CRIME REPORTER RANCHI : झारखंड कैडर के 13 आईपीएस अधिकारी ट्रेनिंग के लिए हैदराबाद जाएंगे। इस संबंध में पुलिस मुख्यालय के द्वारा आदेश जारी कर दिया गया है। 6 जनवरी की दोपहर तक सभी आईपीएस अधिकारियों को ट्रेनिंग के लिए एनपीए में योगदान देना है। जिन आईपीएस अधिकारियों को ट्रेनिंग में जाना है उनमें सरोजिनी लकड़ा, अमेल्ड एक्का, सादिक अनवर रिजवी, अरविंद कुमार सिंह, विकास कुमार पांडे, विजय आशीष कुजूर, अजय कुमार सिन्हा, पूज्य प्रकाश, सहदेव साव, अमित कुमार सिंह, मुकेश कुमार और अजय कुमार शामिल हैं।आठ जनवरी से सोलह फरवरी तक होगी ट्रेनिंगः सभी तेरह आईपीएस अधिकारी 8 जनवरी से लेकर 16 फरवरी तक हैदराबाद स्थित पुलिस अकादमी में ट्रेनिंग प्रोग्राम में हिस्सा लेंगे। इस संबंध में पुलिस मुख्यालय के द्वारा आदेश जारी कर दिया गया है। झारखंड कैडर के जो 13 आईपीएस अधिकारी ट्रेनिंग के लिए हैदराबाद जा रहे हैं सभी को डीएसपी से आईपीएस में प्रमोशन मिला था। पिछले साल सभी प्रमोशन पाकर आईपीएस बने हैं, ऐसे में दो चरणों में सभी को पुलिस अकादमी में अपनी ट्रेनिंग को पूरा करना है। मिली जानकारी के अनुसार, कई आईपीएस अफसर शनिवार को ही हैदराबाद के लिए कूच कर चुके हैं।

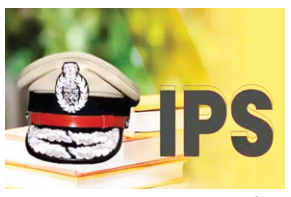

रिम्स के लावारिस शवों का किया गया सामूहिक अंतिम संस्कार

PHOTON NEWS RANCHI : रिम्स में लगातार लवारिस शवों की संख्या बढ़ती जा रही है। इन शवों को ले जाने वाला जब कोई नहीं आया तो मुक्ति संस्थान ने रविवार को 25 शवों का सामूहिक अंतिम संस्कार किया। संस्थान द्वारा जुमार नदी तट पर इन शवों को मुक्ति प्रदान की गई। रिम्स में कानूनी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद इन लावारिस शवों अंतिम संस्कार किया गया। संस्था द्वारा अब तक 1671 लावारिस शवों का अंतिम संस्कार किया जा चुका है। इससे पहले पुलिस की ओर से इन शवों की पहचान के लिए कई प्रयास किए गए थे। पुलिस ने शवों की पहचान के लिए कई बार विज्ञापन भी निकाले। लेकिन इन शवों की पहचान नहीं हो सकी। लंबे समय से रखे गए इन शवों को सामूहिक दाह संस्कार के लिए संस्था को सौंप दिया गया।

चुनाव की तैयारी में जुटा वाम दल झारखंड की कई सीट पर करेंगे दावा

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड में इन दिनों सभी राजनीतिक पार्टियां चुनाव की तैयारी में जुट गई हैं। सभी राजनीतिक पार्टियां अब इस ताक में लगी हैं कि कौन सी सीट पर वह अपने प्रत्याशी को खड़ा करेंगे और किस सीट की गठबंधन से मांग की जाएगी। इसी को लेकर इंडिया गठबंधन के घटक दल भी अपनी मजबूत सीट पर प्रत्याशी की घोषणा की तैयारी में हैं। वाम दल के नेता बैठक के माध्यम से अपने नेताओं को महत्त्वपूर्ण दिशा निर्देश दे रहे हैं और क्षेत्र में जाकर जनसंपर्क अभियान चला रहे हैं।

झारखंड में इंडिया गठबंधन में अपनी अहम भूमिका निभाने वाली भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने भी स्पष्ट कर दिया है कि आने वाले लोकसभा चुनाव में वह गठबंधन के नेताओं से किस सीट के लिए दावा कर सकते हैं। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता और वरिष्ठ नेता अजय कुमार सिंह ने बताया कि झारखंड में कई ऐसे ऐसी सीटें हैं जहां पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी अपनी दावेदारी पेश कर सकती है लेकिन आने वाले लोकसभा चुनाव के लिए उन्होंने हजारीबाग सीट का चयन किया है।

हॉकी ओलंपिक क्वालिफायर्स : चिली महिला हॉकी टीम पहुंची रांची, जर्मनी से होगा पहला मुकाबला

ढोल नगाड़ों के साथ खिलाड़ियों का रांची की धरती पर वेलकम

PHOTON NEWS RANCHI : रांची में 13 से 19 जनवरी तक एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालिफायर का आयोजन किया जा रहा है। ओलंपिक में जगह बनाने की उम्मीद से एक-एक कर-के टीम का रांची आना शुरू हो गया है। इसी क्रम में चिली महिला हॉकी टीम रविवार को रांची पहुंची। इस दौरान रांची एयरपोर्ट पर वर्ल्ड रैंकिंग में 14वें स्थान पर शामिल चिली टीम के खिलाड़ियों, कोच का हॉकी झारखंड और हॉकी इंडिया के पदाधिकारियों ने जोरदार स्वागत किया। पारंपरिक तरीके से स्वागत के अलावा ढोल नगाड़ों संग खिलाड़ियों का रांची की धरती पर वेलकम किया गया। सह-कप्तान कमीला कराम व मानुएला उर्रोज के नेतृत्व में और हेड कोच सेर्जियो विगिल के मार्गदर्शन में चिली ने अंतरराष्ट्रीय मैदान पर अपनी पहचान बनाने का लक्ष्य बनाया है। वैश्विक रैंक में यह टीम 14वें स्थान पर है। इसके बावजूद चिली की टीम फआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालिफायर्स रांची 2024 में कोई कसर ना छोड़ने का दृढ़ संकल्प लेकर आयी है। मौके पर टीम की कमीला कराम, मैनुएल उर्रोज और कोच सेर्जियो विगिल ने उम्मीद जताते कहा कि वे ओलंपिक क्वालिफायर में अपने दमदार खेल से ओलंपिक के लिए पात्रता हासिल करने में सफल होंगे। चिली टीम पूल ए में है। उनका कैम्पेन 13 जनवरी को जर्मनी के साथ एक मुकाबले से शुरू होगा। इसके बाद उन्हें 14 जनवरी को चेक रिपब्लिक के खिलाफ मुकाबले में भिड़ना होगा। उनके पूल मैचों का समापन 16 जनवरी को जापान के खिलाफ होगा। इसके अलावा पूल बी में मेजबान भारत, न्यूजीलैंड, इटली और संयुक्त राज्य की हॉकी टीम है। 19 जनवरी तक चलने वाली इस प्रतियोगिता के आधार पर टॉप की तीन टीमें ओलंपिक 2024 के लिए क्वालिफाई करेंगी।

विदेशी टीमों को भा रहा रांची का मौसम, कर रही हैं जमकर अभ्यास

RANCHI : एफआइएच ओलिंपिक क्वालिफायर का आयोजन रांची के मरांग गोमके जयपाल सिंह एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम में 13 जनवरी से होना है। इसमें आठ देशों की टीमें भाग ले रही है। अब तक भारत समेत पांच टीमें रांची पहुंच चुकी हैं और यहां अभ्यास भी शुरू कर दिया है। इस समय रांची का मौसम भी शानदार हो गया है। ऐसे में विदेशी टीमों को यहां का मौसम भी पसंद आ रहा है। यही कारण है कि इटली की टीम ने अभ्यास के लिए सुबह और शाम का समय तय किया है, जबकि यूएसए की टीम रात के समय में अभ्यास कर रही है। इटली हॉकी टीम ने दो बार अभ्यास किया। इस टीम ने सबसे पहले सुबह आठ बजे अभ्यास का समय चुना। इसके बाद शाम छह बजे अभ्यास सत्र में हिस्सा लिया। वहीं यूएस हॉकी टीम ने केवल एक बार रात के 7.30 बजे अभ्यास किया। इससे पहले मेजबान भारतीय महिला हॉकी टीम ने मोरहाबादी एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम में सुबह 9.30 बजे अभ्यास किया। इसके बाद दोपहर में भारतीय टीम खूंटी चली गयी, जहां टीम ने शाम को फ्लड लाइट में अभ्यास सत्र में हिस्सा लिया। 13 से 19 जनवरी तक होनेवाले मुकाबले का कार्यक्रम तय हो चुका है।

BRIEF NEWS

सुंदरगढ़ में मना सड़क सुरक्षा सप्ताह

ROURKELA : क्षेत्रीय परिवहन विभाग, सुंदरगढ़ और स्वयंसेवी संगठन आशा सुंदरगढ़ के संयुक्त प्रयास से सुंदरगढ़ जिले के विभिन्न स्कूलों में सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। इस संबंध में आज देवकरणपुर हाई स्कूल, टिकिलीपाड़ा हाई स्कूल में सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। कार्यक्रम में संस्था के कर्मचारियों ने छात्रों को वीडियो दिखाया और ग्रामीणों को सड़क दुर्घटनाओं के बारे में चेतावनी संदेश देने के लिए जागरूकता पदयात्रा निकाली। संस्थान के महेंद्र कुमार स्वाई, प्रशांत कुटुआ, रिबेश साहू, विद्यालय के प्राचार्य मनोज माझी,सुमति नायक उपस्थित रहे और कार्यक्रम को सफल बनाया।

साकची में निशुल्क कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर का शुभारंभ

JAMSHEDPUR : मारवाड़ी युवा मंच स्टील सिटी सुरभि शाखा द्वारा श्री भगवान महावीर विकालांग सहायता समिति के सहयोग से साकची स्थित श्री अग्रसेन भवन में निःशुल्क कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया है। दो दिवसीय इस शिविर का रविवार को शुभारंभ हुआ। सुरभि शाखा अध्यक्ष निशा सिंघल एवं सचिव कविता अग्रवाल के सयुक्त नेतृत्व में शिविर का शुभारंभ शाखा की पूर्व अध्यक्षों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम संयोजिका ऊषा चौधरी एवं खुशबू काउंटिया ने बताया कि इस शिविर में 200 जरूरतमंद लोगों ने अपना पंजीकरण करवाया है। इस शिविर में जरूरत के अनुसार कृत्रिम हाथ, पांव, कैलिपर्स, वैशाखी, सुनने की मशीन उपलब्ध करवाई जाएगी। इसका आयोजन स्वर्गीय अशोक अग्रवाल की पुण्यतिथि में उनके अनुज कमल अग्रवाल (कमल फार्मास्यूटिकल्स) के द्वारा किया गया हैं। इस कार्यक्रम का समापन समारोह सोमवार 08 जनवरी की शाम 04।30 बजे होगा। समापन समारोह में मरवाड़ी समाज के कई गणमान्य लोग उपस्थित रहेंगें।

जायंट्स ग्रुप की नई कार्यकारिणी ने ली शपथ, समाज सेवा का लिया संकल्प

JAMSHEDPUR : सामाजिक संस्था जायन्ट्स ग्रुप ऑफ जमशेदपुर की नई कार्यकारिणी का रविवार को प्रतिष्ठापन समारोह आयोजित हुआ। बिष्टुपुर स्थित एक होटल में आयोजित इस कार्यक्रम में अध्यक्ष पद के लिए अरूण बाकरेवाल (अग्रवाल) को शपथ दिलाई गई। सभा का शुभारंभ जायन्ट्स वेलफेयर फाउंडेशन के केन्द्रीय समिति सदस्य वी के कपूर एवं अजय कान्त पाठक, फेडरेशन झ 8 अध्यक्ष आरके चौधरी, युनिट-1 के युनिट निदेशक प्रदीप अग्रवाल ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर एवं प्रार्थना के साथ हुआ। विश्व शांति के लिए एक मिनट का मौन रखकर उपस्थित सभी सदस्यों ने ईश्वर से प्रार्थना की। तत्पश्चात आये हुए लोगों का स्वागत पुष्प भेंटकर किया गया। निर्वतमान अध्यक्ष टी संभा शिवा राव ने सभी का स्वागत किया एवं ग्रुप द्वारा वर्ष 2023 में किये गए सामाजिक कार्यों का विवरण रखा।

अखिलेश सिंह गैंग के शातिर हरीश सिंह को पुलिस ने दबोचा

अजय कुमार के नाम से छुपा था राजगीर के एक होटल में

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के गैंगस्टर अखिलेश सिंह गैंग का शातिर अपराधी हरीश सिंह उर्फ छोटू सिंह को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने उसे बिहार के पटना से सटे राजगीर के एक होटल से गिरफ्तार किया था। वहां वह अपने परिवार संग घूमने गया था। रविवार को एसएसपी किशोर कौशल ने मामले का खुलासा कर दिया है। एसएसपी ने बताया कि हरीश के खिलाफ शहर और आस-पास के कई थानों में लगभग 30 मामले दर्ज हैं। पुलिस को हरीश की कई दिनों से तलाश थी। फरार होने के बाद से वह बिहार और झारखंड में लगातार आपना ठिकाना बदल रहा था। पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि हरीश परिवार के साथ राजगीर घूमने जाने वाला है। इसके बाद एक टीम का गठन कर बिहार भेजा गया, जहां हरीश को गिरफ्तार कर लिया गया।

मीडिया को जानकारी देते एसएसपी किशोर कौशल। ● फोटोन न्यूज

सीसीए लगाने की अनुशंसा करेगी पुलिस

एसएसपी ने बताया कि हरीश सिंह होटल में अजय कुमार के नाम से ठहरा था। जब पुलिस उसके पास पहुंची तो पहले उसने पुलिस को गुमराह करने के लिए अपना नाम अजय बताया। पुलिस ने जब उससे कड़ाई से पूछताछ की तो उसने सब कुछ कबूल कर लिया। तलाशी के क्रम में हरीश के पास से कुल चार मोबाइल फोन, दो सिम कार्ड और दो फर्जी आधार कार्ड मिले हैं। इस मामले में सीतारामडेरा थाना में एक प्राथमिकी भी दर्ज की गई है। एसएसपी ने बताया कि एक आधार कार्ड में फोटो हरीश की थी पर नाम अजय कुमार था, वहीं दूसरा आधार कार्ड संजय रविदास के नाम पर था। पुलिस हरीश को रिमांड पर लेकर पूछताछ करेगी और उसपर सीसीए लगाने की अनुशंसा करेगी।

पैदल ही साकची थाना से लेकर एसएसपी ऑफिस पहुंची पुलिस : पुलिस ने हरीश सिंह को जेल भेजने से पहले साकची थाना से पैदल ही एसएसपी ऑफिस लाया गया। हालांकि पुलिस का कहना है कि जिस वाहन में हरीश को लाया जा रहा था, वह वाहन खराब हो गई थी। इस कारण उसे पैदल ही एसएसपी ऑफिस लाया गया। इसके पूर्व कन्हैया सिंह को भी पुलिस ने इसी तरह पैदल एसएसपी ऑफिस लेकर आयी थी।

जमशेदपुर कोर्ट में वकील बनकर पहुंचा था हरीश : हरीश सीतारामडेरा गैंगवार मामले के बाद से ही फरार चल रहा था। 11 मार्च 2021 को कोर्ट में सुनवाई के दौरान वह वकील बनकर पहुंचा और अपना बयान दर्ज कराकर वहां से निकल गया। इसकी भनक पुलिस को भी नहीं लगी थी। इसके अलावा जेल में मनोज सिंह की हत्या और कोर्ट परिसर में उपेंद्र सिंह की हत्या में भी हरीश की संलिप्तता सामने आई थी। हरीश के खिलाफ जमशेदपुर समेत आस-पास के थानों में कुल 30 मामले दर्ज हैं वहीं उस पर पुलिस ने 40 हजार का ईनाम भी रखा है।

परिवहन विभाग ने सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को किया जागरूक

PHOTON NEWS ROURKELA : सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करना जैसे हेलमेट पहन सीट बेल्ट लगा का गाड़ी चलाने वालों फूलों से स्वागत किया गया। इसके विपरीत, जो लोग बिना हेलमेट के गाड़ी चला रहे लोगों को यमराज और चित्रगुप्त द्वारा गदा दिखा कर सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने का लिए हिदायत दिया गया। राउरकेला शहर में परिवहन विभाग एवं साई परिवार द्वारा आयोजित किया गया सड़क सुरक्षा दिवस। सड़क सुरक्षा, जीवन रक्षा। यह नारा लंबे समय से चला आ रहा है। लेकिन लोग इस बात पर ज्यादा ध्यान न देकर आए दिन ट्रैफिक नियम तोड़ रहे हैं। हेलमेट पहनके दोपहिया वाहन चलाने, सीट बेल्ट लगाने आदि के बारे में बार-बार चेतावनी दी जा रही है।

आज राउरकेला में लोगों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए सड़क सुरक्षा नायक द्वारा भी जागुरुक किया गया। नशे में गाड़ी चलाने पर प्रतिबंध होने के बावजूद लोग शराब के नशे में गाड़ी चलाते नजर आते हैं। गाड़ी चलाते वक्त मोबाइल फोन से बात ना करना। लोगों के मन में सड़क सुरक्षा कानूनों के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए 1 जनवरी से 7 जनवरी तक सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया गया।

राउरकेला में भी परिवहन विभाग के तत्वावधान में 1 जनवरी सोमवार से कार्यक्रम आरंभ होकर रविवार को समाप्त हुआ। आरटीओ समेत परिवहन विभाग के अधिकारी जूनियर एमवीआइ टी. सौरभ, असिस्टेंट ओएमभीडी बी. पाणिग्राही ट्रैफिक इनिस्पेक्टर प्रदीप साहू सड़कों पर वाहनों की जांच कर लोगों को सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूक कर रहे थे।

इस अवसर पर साई परिवार के सदस्य यमराज और चित्रगुप्त के पोशाक पहन कर बेहद प्रभावशाली अंदाज में लोगों को सड़क सुरक्षा जागरूकता संदेश देते नजर आए। इस कार्यकर्म में साई परिवार के निरंजन, भरत,बीजेडी के नगर अध्यक्ष गगन पंडा,छबि महंती,आरती चौधरी, सुनील बरुआ, एवं साई परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे।

लोगों को जागरूक करते पुलिस अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

श्रम मंत्री ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों में रखी विकास कार्यों की आधारशिला

कार्यक्रम में उपस्थित श्रम मंत्री व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला बसंती कॉलोनी, डीएवी तालाब, हरिपुर बस्ती सड़कें, नालियां, फैबर ब्लॉक, शौचालय और एसटीआई, राजीव बस्ती, सिविल टाउनशिप,में श्रम और बीमा मंत्री सारदा प्रसाद नायक ने मुख्य अतिथि के रूप में आधारशिला रखी। हरिपुर बस्ती में 10 लाख, सब्जी बस्ती में 10 लाख 80 हजार, डीएवी तालाब पुलिया 34 लाख, सीई ब्लॉक ड्रेन 4 लाख 73 हजार, बीएल ब्लॉक ड्रेन 7 लाख 37 हजार, ईएम ब्लॉक 4 लाख 50 हजार, राजीव बस्ती 21 लाख, सिविल टाउनशिप शौचालय 3 लाख की लागत से विकास कार्य होंगे। इन सभी कार्यों की लागत लगभग 95 लाख 40 हजार है। नगर अध्यक्ष गगन पांडा, अधिवक्ता सुदाम दास, पूर्व पार्षद बुलु महंती, गंगाधर जेना, श्रीवेजा कुओर, सुशांत राउत (बुबली), सुकांत स्वाई,कृष्णा प्रसाद सिंह, काबुली प्रतिहारी, सपन पांडा, ज्योस्ना नयाक, संगीता मिश्रा सहित अन्य शुसंत दास, शंकर अबुनि, पिंकू जयसवाल, बाबू नाइक, सुदशांशु सामल, कालंदी सुतार, सूर्या हांसदा, अजय दास, श्रीकांत राउत, ज्योस्ना स्वैन, मीनती जेना, प्रियंका प्रधान, दीपा शर्मा, उबार्शी मल्ला और पृथ्वी महंती प्रमुख थे।

ट्रैफिक व्यवस्था व प्रबंधन में सुधार के लिए डीसी ने नागरिकों व सिविल सोसाइटी से मांगे सुझाव

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जिले में ट्रैफिक व्यवस्था दुरूस्त करने के लिए उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने शहर के नागरिकों से ट्रैफिक व्यवस्था और प्रबंधन को लेकर सुझाव मांगे हैं। सभी अपने सुझाव ईमेल के माध्यम से ईमेल आईडी पर भेज सकते हैं। इसके अलावा लिखित रूप से भी अपने सुझाव जिला परिवहन कार्यालय में 15 जनवरी तक भेजे जा सकते हैं।

जिला प्रशासन द्वारा शहर की ट्रैफिक व्यवस्था और प्रबंधन में सुधार के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इस दिशा में नागरिकों और सिविल सोसायटी के सुझाव बहुत महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। डीसी के मुताबिक लोगों के सुझावों के आधार पर जिला प्रशासन द्वारा ट्रैफिक व्यवस्था और प्रबंधन में सुधार के लिए आवश्यक कदम भी उठाए जाएंगे।

सभी जागरूक नागरिकों से आग्रह है कि वे शहर की ट्रैफिक व्यवस्था और प्रबंधन में सुधार के लिए अपने सुझाव ईमेल के माध्यम से भेजकर सहयोग करें। इन पर गंभीरता से विचार किया जाएगा।

शहर की ट्रैफिक व्यवस्था और प्रबंधन में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाया जाएगा। सभी लिखित सुझावों को जिला परिवहन कार्यालय के कार्यालय दिवस के दौरान ही जमा किया जा सकेगा। जिला प्रशासन ने लोगों से अपने सुझाव स्पष्ट और साफ शब्दों में लिखित तौर पर देने की भी अपील की है। सभी प्राप्त सुझावों के आधारित रिपोर्ट पर डीसी की अध्यक्षता में नगर निकायों समेत अन्य सभी संबंधित विभागों के साथ एक निर्धारित बैठक में इसे अंतिम रूप दिया जाएगा।

पतंजलि योग समिति व भारत स्वाभिमान न्यास का मनाया गया स्थापना दिवस

PHOTON NEWS ROURKELA : जिला भारत स्वाभिमान न्यास एवं पतंजलि योग समिति द्वारा आज सेक्टर-8 सामुदायिक केंद्र भारत स्वाभिमान न्यास के प्रांगण में बीएसटी जिला अधीक्षक नरेंद्र बेहरा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि सूबे के मुखिया अक्रूर मार्था ने किया। अपने भाषण में उन्होंने योग के रहस्य और इससे मानव समाज को होने वाले लाभों पर प्रकाश डाला। उन्होंने योग के साथ-साथ यज्ञ, आयुर्वेद, स्वदेशी पद्धति, राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र समर्पण का सुझाव दिया। योग मनुष्य के लिए ब्रह्मांड और प्रकृति के साथ एकता खोजने का एक तरीका है। योग हमारी जीवनशैली को बदलता है और जागरूकता पैदा करता है। योग प्राचीन भारतीय परंपरा एवं संस्कृति का एक अनमोल उपहार है। इसका अभ्यास शरीर और मन के साथ-साथ विचार और कार्य में आत्म-संयम, पूर्णता की एकता और मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करता है। योग बिना किसी लागत के जीवन को स्वस्थ एवं पूर्ण बनाकर जीवन को सरल बनाता है। परमपूज्य स्वामीजी रामदेव महाराज ने घोषणा की योग पूरे विश्व में फैल गया है।

कार्यक्रम में जिला महिला प्रवर नितंबिनी स्वाई, जिला पतंजलि योग समिति प्रभारी प्रदीप साहू, जिला मीडिया प्रभारी गंगाधर दास ने योग के प्रचार-प्रसार के लिए सुझाव दिये।

जय जगन्नाथ अर्पण रथ का नगर भ्रमण शुरू, 10 दिनों तक चलेगा संग्रहण कार्यक्रम

PHOTON NEWS ROURKELA : श्री मंदिर परिक्रमा परियोजना का भूमि पूजन समारोह 17 जनवरी को पूरी मंदिर में आयोजित किया जाएगा। महाप्रभु श्रीजगन्नाथ के इस भव्य उत्सव पर प्रत्येक ओडिया जुड़ सके और दिव्य अनुभव प्राप्त कर सके, इसके लिए राज्य सरकार द्वारा एक अभिनव प्रयास शुरू किया गया है। 'जय जगन्नाथ प्रखण्ड रथ' के रूप में पुरपल्ली से शहर भ्रमण करते हुए घर-घर से भगवान श्रीजगन्नाथ को चढ़ाने के लिए अरुया चावल और सुपारी संग्रह किया जा रहा है। इसी कड़ी में राउरकेला शहर से भी इस ५ रथ की परिक्रमा यात्रा की विधिवत शुरूआत से हो गयी है।

कार्यक्रम में उपस्थित भक्त। ● फोटोन न्यूज

राउरकेला शहर में अगले 15 तारीख तक 16 अर्पण रथ के माध्यम से सभी 40 वार्डों और सेक्टरों के हर घर से अरूया चावल और सुपारी एकत्र किया जाएगा। इसके लिए राउरकेला महानगर निगम की ओर से 16 रथ की व्यवस्था की गयी है। रथयात्रा के दौरान वातावरण को आध्यात्मिक व भक्तिमय बनाने के लिए अरुआ चावल व सुपारी एकत्रित कर संकीर्तन किया जायेगा। संग्रह किए गए अरुआ चावल और अमरूद को पास के ही जगन्नाथ मंदिर में रखा जाएगा। बाद में, उन्हें भगवान श्रीजगन्नाथ को अर्पित करने के लिए पुरी ले जाया जाएगा।

मतकमहातु व कमरहातु के ग्रामीणों की संयुक्त बैठक संपन्न

एक मार्च को माघे पर्व मनाने की हुई घोषणा

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिमी जिले के गांवों में माघे पर्व मनाने की तिथि की घोषणा का सिलसिला शुरू हो गया है। इसी क्रम में रविवार को शहर से सटे गांव मतकमहातु व कमरहातु में 1 मार्च को माघे पर्व मनाने की घोषणा की गयी है। इस संबंध में रविवार को मतकमहातु ग्रामसभा में मतकमहातु व कमरहातु के ग्रामीणों की संयुक्त बैठक हुई। मुख्य दिऊरी चंद्रमोहन देवगम उर्फ डाडू तथा ग्राम मुंडा धनुर्जय देवगम की अध्यक्षता में आयोजित इस ग्रामसभा में रायशुमारी के बाद सर्वसम्मति से माघे पर्व समेत अन्य पर्वों की तिथि निर्धारित की गयी। तत्पश्चात उसकी घोषणा की गयी।

बैठक में उपस्थित ग्रामीण। ● फोटोन न्यूज

घोषणा के मुताबिक इन दोनों गांवों में माघे पर्व एक मार्च को होगा। इसके अलावे बोड़ोबोंजी 21 फरवरी, अनादेर 25 फरवरी, गौमारा 26 फरवरी, गोवा बोंगा ओते इली 28 फरवरी, गुरीई पोरोब 29 फरवरी, माघे पोरोब एक मार्च, माघे जतरा 2 मार्च, हर मागेया 3 मार्च को मनाया जायेगा। वहीं बा पर्व मनाने के लिये 15 मार्च की तिथि तय की गयी। ग्राम मुंडा धनुर्जय देवगम ने कहा कि संस्कृति ही हमारी मौलिक पहचान है। इसके संरक्षण की नैतिक जिम्मेदारी हम सबों की है। लिहाजा अपने पर्व-त्योहार को ना भूलें। दिऊरी डाडू देवगम ने कहा कि हमें अपनी परंपराओं और रुढ़िगत मान्यताओं को आत्मसात करने की जरूरत है। तभी हम अपनी संस्कृति को निकट से जान सकेंगे। इस मौके पर मतकमहातु मुंडा धनुर्जय देवगम, कमरहातु मुंडा बिरसा देवगम,

दियुरी चंद्रमोहन देवगम, जतरा दिउरी मंगल सिंह देवगम, चाहत देवगम, धर्मराज देवगम, सुरेंद्र देवगम, नारायण देवगम, तुराम देवगम, नरंगा देवगम उर्फ पप्पू, मानकी देवगम, सन्नी देवगम, सविता देवगम, मंजु देवगम, कुन्ती देवगम, गंगाराम देवगम, विक्रम देवगम, संध्या देवगम, अर्जुन गोप समेत अन्य ग्रामीण मौजूद थे।

गोल्डन जुबली आमंत्रण कप क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन

यंग झारखण्ड को हराकर जेएससीए एकादश बना चैंपियन

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम जिला क्रिकेट संघ से निबंधित गोल्डन जुबली आमंत्रण कप क्रिकेट प्रतियोगिता के फाईनल मैच में झारखण्ड राज्य क्रिकेट संघ की टीम ने यंग झारखण्ड क्रिकेट क्लब चाईबासा को एकतरफा मुकाबले में 121 रनों से पराजित कर खिताब पर कब्जा जमाया।

अपने स्थापना काल के पचास वर्ष पूरे होने के अवसर पर फ्रेंडस क्लब चाईबासा द्वारा स्थानीय बिरसा मुंडा क्रिकेट स्टेडियम मैदान पर खेले गए स्वर्ण जयंती आमंत्रण कप क्रिकेट प्रतियोगिता के फाईनल मैच में टॉस यंग झारखण्ड के कप्तान हर्ष कुमार ने जीता तथा विपक्षी टीम को पहले बल्लेबाजी का न्यौता दिया।

पहले बल्लेबाजी करते हुए जेएससीए एकादश की टीम 18.5 ओवर में 179 रन बनाकर आल आउट हो गई। सबसे अच्छी बल्लेबाजी कप्तान अतुल सिंह सुरवर ने की जिसने पांच चौकों एवं चार छक्कों की मदद से मात्र 38 गेंदों पर 59 रन बनाए। अन्य बल्लेबाजों में सत्येंद्र प्रजापति ने 29, विवेक कुमार ने 24, आदित्य नारायण ने 20 रन तथा रिषिकेश तिवारी ने 18 रन बनाए। यंग झारखण्ड क्रिकेट क्लब की ओर से रिशु सिंह चौहान ने 26 रन देकर 5 विकेट चटकाए जबकि आशीष चौधरी ने 50 रन देकर तीन विकेट हासिल किए।

ट्रॉफी के साथ विजेता जेएससीए एकादश की टीम। ● फोटोन न्यूज

जीत के लिए निर्धारित बीस ओवर में 180 रनों का पीछा करने उतरी यंग झारखण्ड क्रिकेट क्लब की पूरी टीम 12.1 ओवर में मात्र 58 रन ही बना सकी और 121 रन से फाईनल मैच गंवा बैठी। यंग झारखण्ड की ओर से अर्पित यादव ने 20 एवं राजीव रंजन ने 10 रन बनाए। अन्य कोई भी बल्लेबाज दहाई अंक तक नहीं पहुंच पाया। जेएससीए एकादश की ओर से रवि कुमार यादव ने तीन तथा युवराज कुमार, शुभम कुमार सिंह एवं अमित कुमार यादव ने दो-दो विकेट अपने नाम किए।

मैच समाप्ति के बाद आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में उपायुक्त अनन्य मित्तल ने विजेता टीम को ट्राफी के साथ 51000/- रुपये का नगद पुरस्कार तथा विशिष्ट अतिथि टीम इंडिया के पूर्व क्रिकेटर तथा झारखण्ड रणजी टीम के कप्तान सौरभ तिवारी ने उपविजेता टीम को ट्राफी के साथ 31000/- रुपये का नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। फाईनल मैच के मैन आफ द मैच का पुरस्कार जेएससीए एकादश के अतुल सिंह सुरवर को तथा मैन आफ द सीरीज का पुरस्कार यंग झारखण्ड के आशीष चौधरी को दिया गया। पूरे प्रतियोगिता में शानदार गेंदबाजी के लिए सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी का पुरस्कार यंग झारखंड के रिशु सिंह चौहान को तथा सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजी का पुरस्कार जे एस सी ए एकादश के रिषिकेश तिवारी को दिया गया। ये सभी पुरस्कार मुख्य अतिथि ने प्रदान की। प्रतियोगिता के सफल संचालन के लिए सभी अंपायरों एवं स्कोररों को आयोजन समिति के अध्यक्ष मुकुंद रुंगटा ने पुरस्कृत किया। फ्रेंडस क्लब चाईबासा के पचास वर्ष पूरे होने के अवसर पर क्लब के संस्थापक सदस्य एवं अपने समय के मशहूर क्रिकेटर सुप्रियो फौजदार को मुख्य अतिथि ने विशेष रूप से सम्मानित किया। पुरस्कार वितरण समारोह में मंच संचालन राजर्षि फौजदार ने तथा धन्यवाद ज्ञापन आयोजन समिति के अध्यक्ष मुकुंद रुंगटा ने किया।

सीजीपीसी की परियोजना में सीतारामडेरा गुरुद्वारा प्रबंधन ने दिया वृहद सहयोग

JAMSHEDPUR : सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (सीजीपीसी) की महत्वाकांक्षी समाज कल्याण परियोजना में गुरुद्वारा साहिब शहीद बाबा दीप सिंह, सीतारामडेरा प्रबंधक कमेटी ने 5.51 लाख रुपये का भरवां (वृहद) आर्थिक सहयोग दिया है. इससे जहां शिक्षा और स्वास्थ्य मिशन को बल मिलेगा वहीं, कार्य जल्द पूर्ण करने का मार्ग भी प्रशस्त होगा. शनिवार को सीतारामडेरा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान सरदार हरजिंदर सिंह ने सदस्य अमरजीत सिंह धंजल, गुरबक्श सिंह विलखु, सरबजीत सिंह संधू, मंजीत सिंह औलख, जसवंत सिंह, इंद्रजीत सिंह सैनी, अभिषेक वोहरा, धनदीप सिंह, कमलजीत सिंह और लवप्रीत सिंह के साथ सीजीपीसी के प्रधान सरदार भगवान सिंह को 5.51 लाख का चेक सौंपा. इस अवसर पर हरजिंदर सिंह ने कहा कि पिछले दिनों उन्होंने एक बैठक बुलायी थी, जिसमें सीजीपीसी की जनकल्याण परियोजना में आर्थिक सहयोग करने का निर्णय लिया गया था।

खेल प्रेमी समिति ने वृद्ध सेवाश्रम में वृद्धों के बीच बांटे राशन सामग्री

राशन सामग्री का वितरण करते समिति के लोग। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम खेल प्रेमी समिति चाईबासा की ओर से रविवार को झींकपानी स्टेशन कॉलोनी में अवस्थित वृद्ध सेवाश्रम की स्थिति का जायजा एवं वृद्धों से मिलने का पुनित कार्य किया गया। इस कड़ी में समिति के पदाधिकारियों ने वृद्धों की अवश्यक सामग्री (राशन सामग्री) भी वहां देख-रेख कर रहे सदस्यों को भेंट किया। जानकारी हों कि यह समिति पूर्व में भी कई ऐसे ही खेल से जुड़े हुए तथा खेल में योगदान दिये विभूतियों को जिला स्तर पर सम्मान दे चुकी है। साथ ही बुजुर्गों में सेहत को अच्छा एवं फिट रखने की प्रेरणा से जागरूक करने के लिए भी कार्यक्रम कर चुकी है । इसी क्रम में यह भी एक प्रयास था कि जो वृद्ध अपने घर तथा अपनों से दूर रहने को विवश है, उनके होंठो या चेहरे पर मुस्कान लाना था। इस कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष देव कुमार बनर्जी, सचिव देवी शंकर दत्ता, संरक्षक गारदी मुंडा सदस्य के रूप में सूर्यकांत बोस, मतलूब आलम, दिवाकर गोप, सुशील कुमार साव, बिरजु रजक एवं जनक किशोर गोप शामिल थे।

7 साल से अफेयर: ग्रामीणों ने करायी शादी

मंदिर में लड़का बोला-मेरी मर्जी के खिलाफ लगवाए फेरे, लड़की ने कहा-इन्हीं के साथ रहूंगी

वैशाली । ग्रामीणों ने मिलकर एक प्रेमी जोड़े की जबरदस्ती शादी करा दी। लड़की ने बताया कि दोनों 7 साल से एक दूसरे से प्रेम करते हैं। बावजूद इसके, लड़का शादी करने से मना करता रहा है। हालांकि, लड़की ने कहा कि मैं इनके साथ रहना चाहती हूं। मामला वैशाली के महनार का है। जहां स्टेशन रोड स्थित संगत मंदिर में दोनों की शादी कराई गई। हालांकि, इस शादी से लड़का जरा भी खुश नहीं है। लड़के का कहना है कि उसकी जबरदस्ती शादी कराई जा रही है। वह उस लड़की को नहीं जानता। वहीं, लड़के ने जब लड़की का जयमाला पहनाने से इनकार किया तो शादी करा रहे पंडित ने भी पीछे से उसके सिर में मारकर माला पहनाने को कहा। लड़की की पहचान महनार नगर परिषद क्षेत्र के सब्जी मंडी रोड वार्ड संख्या 11 निवासी शिव करण राम की पुत्री संगीता कुमारी (23) के रूप में हुई है। जबकि, लड़के की पहचान सहदेई बुजुर्ग प्रखंड के बाजितपुर कस्तूरी वार्ड संख्या 7 निवासी सुरेंद्र राम के पुत्र अरुण कुमार (26) के रूप में हुई है। संगीता कुमारी ने बताया कि अरुण अपनी बहन के यहां आया था। जहां मेरी इनसे मुलाकात हुई। इस बीच दोनों में प्रेम हो गया, जो 7 साल से चल रहा है। संगीता ने बताया कि अरुण ने उससे शादी का वादा कर के परिवार वालों को उसकी शादी दूसरी जगह नहीं करने दिया। वह कई बार मुझे अपने घर और अन्य जगहों पर घुमाने भी ले गया। जब मेरे परिजनों ने अरुण पर शादी का दबाब बनाया तो अरुण ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। इन सबके बीच अरुण आज महनार आया था। जिसके बाद लड़की के परिजनों ने शादी कराने के लिए दोनों प्रेमी जोड़े को मंदिर में ले आएं। खबर फैलते ही मंदिर में लोगों की भीड़ जमा हो गई। स्थानीय लोगों ने दोनों को बालिग देख मंदिर में शादी करा दी। वही, अरुण ने कहा ये लोग मुझ पर झूठा आरोप लग रहे हैं। ये शादी जबरदस्ती कराई गई है। शादी मर्जी के खिलाफ हुई है। मैं तो फैसला करने के लिए अध्यक्ष के पास आया था, लेकिन यहां के लोग मुझे वहीं से पकड़ कर ले आए और मेरी शादी करा दी। मैं इस शादी को नहीं मानता हूं। शादी के दौरान की जाने वाली हिंदू धार्मिक रीति रिवाजों में लड़का बार-बार इनकार करता रहा, लेकिन मौके पर मौजूद पंडित और स्थानीय लोगों जबरन शादी करा दी। इसके बाद लोगों की दबिश पर लड़का लड़की को अपने घर ले गया। लड़की की मां सुशीला देवी ने बताया कि लड़का हमेशा मेरे घर आता था। कहता था मैं आपकी बेटी से शादी करूंगा। तो मैं सोचती थी मिया राजी तो क्या दिक्कत है। हम चावल बेचकर इनको 15 हजार रुपए भी दिए हैं, लेकिन अब ये शादी से मना करने लगा। इसलिए सब ने मिलकर दोनों की शादी करा दी। लड़की की भाभी बोली अक्सर दोनों साथ में घूमने जाते थे। दोनों साथ में फोटो भी खींचाते थे। दोनों एक दूसरे से प्यार करते थे। लड़का शादी के बोलता था, अब वह शादी से मना कर रहे है।

चलती बाइक पर युवक-युवती का किसिंग वीडियो

खगड़िया । चलती बाइक पर किस करते युवक और युवती का वीडियो सामने आया है। वीडियो सोशल मीडिया पर डाला है। कई लोगों ने इस वीडियो को शेयर किया है। खगड़िया पुलिस को भी वीडियो टैग किया है। एक यूजर ने लिखा है कि ये घटना खगड़िया का है, क्या इस पर कोई कार्रवाई होगी। इस पर पुलिस ने रिप्लाई किया है कि मामले की जांच की जा रही है। जल्द ही आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। वीडियो में दिख रहा है कि एक युवक बाइक चला रहा है। दूसरा युवक और एक युवती बाइक पर बैठे हैं। पीछे बैठे युवक और युवती किस कर रहे हैं। पीछे से चल किसी बाइक वाले ने यह वीडियो बनाया है।

वीडियो में भोजपुरी गाना चल रहा है, जो नए साल से रिलेटेड है। बताया जाता है कि चलती बाइक पर रोमांस फरमाते जा रहे युवक-युवती का यह वीडियो एनएच-31 पर खगड़िया शहर के पास का है। बाइक के नंबर की जब जांच की तो बाइक किसी प्रदीप राम नामक व्यक्ति के नाम पर रजिस्टर्ड है। अब पुलिस बाइक सवारों की पहचान में जुटी है। मोटर वाहन अधिनियम की धारा 194अ के अनुसार, इस नियम का उल्लंघन करने पर 1,000 रुपए का चालान कटता है। हेलमेट का चालान भी एक हजार रुपए है। वहीं स्टंट करने पर भी चालान कटता है।

इस मामले में खगड़िया के यातायात प्रभारी जेपी यादव ने बताया कि बाइक सवार के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई करते हुए जुमार्ना वसूला जाएगा। बगैर हेलमेट और ट्रिपल लोड सवारी करना परिवहन नियम के विरुद्ध है। कार्रवाई की प्रक्रिया अपनाई जा रही है।

बड़े भाई की गला दबाकर मारने की कोशिश

आरा। शहर के नवादा थाना क्षेत्र के चंदवा मोहल्ले में शनिवार को घरेलू विवाद को लेकर भाई ने बड़े भाई की पहले जमकर पिटाई की। इसके बाद उसका गला दबाकर उसकी जान से मारने की कोशिश की। चीखने-चिल्लाने की आवाज सुनने के बाद अन्य परिजनों ने दोनों को अलग किया गया। जिससे उसकी हालत काफी गंभीर हो गई। इसके बाद परिजन उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल लाए। युवक के पिता कलेक्टर ठाकुर ने बताया कि उनका छोटा बेटा नारायण बराबर शराब पीकर नशे की हालत में घर में आकर मारपीट और गाली-गलौज करता है। घर का बर्तन,समान नशा करने के लिए चोरी कर बेच देता है । वह नशे की हालत में आकर गाली-गलौज कर रहा था। तभी उसके बड़े भाई ओम कुमार ने उसे मना करने किया तो उसने कहा कि तुम मना करने वाले कौन हो।

इसी बात को लेकर उसने उसकी पहले पिटाई की। इसके बाद बड़े भाई गर्दन दबाने लगा। इससे उसकी हालत काफी गंभीर हो गई।

बर्थडे से लौट रहे 3 दोस्तों की मौत

भागलपुर । दोस्त की बर्थडे पार्टी से लौट रहे तीन दोस्तों की मौत हो गई। गश्ती के दौरान पुलिस को क्षतिग्रस्त बाइक दिखी। पुलिस मौके पर पहुंची तो तीनों के शव दिखे, जो एक-दूसरे पर चढ़ा हुआ था। पुलिस ने बताया कि तीनों की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई थी। प्रिंस कुमार के पास से आधार कार्ड बरामद किया। इसके आधार पर उसकी पहचान हुई। पुलिस ने सोशल मीडिया पर तीनों की फोटो डाली, तब परिवार को पता चला। बताया जाता है कि गोपालपुर थाना के हरनाथचक में अंशु कुमार के बर्थडे पार्टी से तीनों लौट रहे थे। इसी दौरान हादसा हो गया। घटना में तीन दोस्तों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। मरने वाले की पहचान सहरसा जिला के रघुनाथपुर थाना के महुआ बाजार निवासी जनार्दन मंडल के पुत्र प्रिंस कुमार (24), कदवा ओपी के प्रतापनगर निवासी मसरुल कुमार राय के पुत्र सुकेश कुमार (20) इस्माइलपुर थाना के मंथन टोला निवासी रामजी मंडल के पुत्र राहुल कुमार उर्फ सूरज कुमार (18) के रूप में हुई है। तीनों दोस्त थे। पुलिस को घटना की जानकारी तब हुई जब सुबह पुलिस गश्ती पर निकले थे। इसी दौरान सड़क पर क्षतिग्रस्त बाइक पर नजर पड़ी। तीन युवकों का शव एक दूसरे पर पड़ा दिखा। तीनों युवक की घटना स्थल पर ही मौत हो गई थी, पुलिस ने प्रिंस कुमार के पास मिले आधार कार्ड से पहचान किया, एवं दो अन्य युवक अज्ञात थे। पुलिस ने तीनों युवक के शव की तस्वीर सोशल मीडिया पोस्ट की। इसके बाद परिजनों ने पहचान की और नवगछिया सदर अस्पताल पहुंचे। तीनों शव को पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। प्रिंस कुमार कदवा में प्राइवेट डॉक्टर के यहां लैब टेक्नीशियन का काम करता है। प्रिंस के मित्र सुकेश भी देर रात बर्थडे पार्टी में गया था, लेकिन सुकेश देर रात ही बर्थडे पार्टी से वापस लौट गया था।

पिता का दोस्त पोर्न एडिक्ट था: बेटी के अपहरण

पटना । माउंट कार्मेल स्कूल में पढ़ने वाली छह साल की बच्ची के अपहरण की साजिश रचने वाले जालसाज को कोतवाली पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मामले में पुलिस ने उत्तराखंड के ललित सिंह को गिरफ्तार किया है। ललित दस दिनों से बच्ची के अपहरण की साजिश रच रहा था। इंटरनेट पर वह एक हफ्ते से चाइल्ड पॉर्नोग्राफी और स्कूल का नाम सर्च कर रहा था। शुक्रवार की दोपहर करीब एक बजे ललित सिंह अपहरण के इरादे से बच्ची को लेने उसके स्कूल पहुंच गया। स्कूल की शिक्षिका ने बच्ची से पूछा तो उसने ललित को पहचान लिया और कहा कि ये मेरे पापा के दोस्त हैं। लेकिन उसने ललित के साथ जाने से मना कर दिया। इसके बाद बच्ची के परिजनों को इसकी जानकारी दी गई। अगमकुआं में रहने वाले बच्ची के पिता उत्तम कुमार अन्य दोस्तों के साथ स्कूल पहुंचे। बच्ची और ललित को अपने साथ लेकर चले गए। रात के करीब नौ बजे उत्तम कुमार ने फोन कर कोतवाली थाने की पुलिस को पूरी जानकारी दी और ललित सिंह को लेकर थाना पहुंच गए। ललित दस दिनों से उत्तम की बेटी के अपहरण की साजिश रच रहा था। इंटरनेट पर वह एक हफ्ते से चाइल्ड पोर्नोग्राफी और स्कूल का नाम सर्च कर रहा था। कुछ दिन पहले वह नेपाल गया था। वहां से वह होटल की चाबी लेकर ही भाग आया। वहां की एक महिला कर्मी से संबंध बनाया। उससे भी 20 हजार की ठगी कर ली। इस महिला का एटीएम लेकर भी भाग आया। ललित नेपाल, गोरखपुर, गाजियाबाद सहित कई जगह के लोगों से करोड़ों की ठगी कर चुका है। ललित नेपाल, गोरखपुर, गाजियाबाद के लोगों से करोड़ों की ठगी कर चुका है।

शुरू हुई चापानलों की मरम्मत

रोहतास। जिले के कैमूर पहाड़ी क्षेत्र में सर्दी खत्म होने के पहले ही चापानल की मरम्मति कार्य की जा रही है। रोहतास किला जाने वाले रास्तें में के खराब नलों को ठीक कर दिया गया है। ग्रामीणों ने बताया कि बीते दिनों रोहतास किला और चौरासन शिव मंदिर घाट के नीचे का चापानल क्षतिग्रस्त हो गया था, जिसकी मरम्मत कर दी गई है। रोहतास नगर पंचायत के मुख्य पार्षद के प्रतिनिधि तोराब नियाजी ने बताया कि नल-जल और पानी से जुड़ी समस्या का समाधान नगर पंचायत रोहतास के अधीन नहीं बल्कि पीएचईडी विभाग के अंतर्गत आता है। पानी और नल-जल से जुड़ी समस्याओं का समाधान विभाग को करना होता है। पीएचईडी विभाग ही क्षेत्र में चापा नलों को ठीक कर रहा है। रोहतास पीएचईडी के जेई रिंकू राज ने कहा कि पहाड़ी क्षेत्रों में विभाग ने डीप बोरिंग नल लगाए हैं। गर्मी शुरू होने के पहले सभी नलों को दुरुस्त करने का लक्ष्य है। जहां-जहां से शिकायत आ रही है मरम्मत की जा रही है। पिछले दिनों लगभग 105 चापानलों को ठीक किया गया है।

ठंड की वजह से बदला सरकारी स्कूलों का समय

बेगूसराय। जिले में लगातार बढ़ रहे ठंड को देखते हुए बेगूसराय में सरकारी विद्यालय के शिक्षण कार्य समय में परिवर्तन कर दिया गया है। वहीं, आंगनबाड़ी केंद्र में शिक्षण कार्य को बंद कर दिया गया है। आंगनबाड़ी केंद्रों में सिर्फ पूरक पोषाहार चलेगा। स्कूलों के समय में बदलाव किया गया है। सरकारी विद्यालयों में सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक पढ़ाई होगी। लेकिन शीतलहर को देखते हुए शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव ने आवश्यक कदम उठाने का निर्देश दिया है। 31 जनवरी तक सभी सरकारी विद्यालयों में पहली से आठवीं तक की पढ़ाई 10 बजे से 3:30 बजे तक और नौवीं से 12वीं तक की पढ़ाई 9:30 बजे से 4:00 बजे तक होगी। आठवीं तक के छात्र-छात्राओं के लिए संचालित मिशन दक्ष तथा 9वीं से 12वीं तक के छात्र-छात्राओं के लिए संचालित विशेष कक्षा भी उसी अवधि में होगा। लेकिन सभी शिक्षक अपने सुबह 9 बजे से 5 बजे तक में विद्यालय में उपस्थित रहेंगे। इसके साथ ही आंगनबाड़ी केन्द्रों पर संचालित स्कूल पूर्व शिक्षा कार्यक्रम बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव की संभावना को देखते हुए आईसीडीएस निदेशक ने शिक्षण कार्य स्थगित कर दिया है।

अगले तीन दिन 4 डिग्री तक गिरेगा पारा

पटना। बिहार में अगले दो से तीन दिनों तक लोगों को ठंड से राहत नहीं मिलेगी। पश्चिमी विक्षोभ की वजह से शुक्रवार देर रात हुई हल्की बारिश से ठंड बढ़ गई है। अगले दो-तीन दिन तक ठंड और बढ़ेगी और सुबह में कुहासा छाएगा। मौसम विभाग के अनुसार अगले दो दिन तक न्यूनतम तापमान में 2 से 4 डिग्री सेल्सियस तक की कमी देखने को मिल सकती है। वहीं, राज्य के उत्तर पश्चिम उत्तर दक्षिण और उत्तर मध्य भागों में घना कोहरा छाए रहने की संभावना जताई गई है। कोहरे का असर ट्रेन और फ्लाइट्स पर दिख रहा है। आज भी इंडिगो की दिल्ली फ्लाइट को कैंसिल कर दिया गया है। दूसरी फ्लाइट्स के लेट होने की संभावना है। शुक्रवार को 10 फ्लाइट्स लेट हुई थीं, जबकि 4 को रद्द करना पड़ा था। पिछले 24 घंटे की बात करें तो 26 ऐसे शहर रहे हैं। जिनके न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी देखने को मिली है। भागलपुर का सबौर 9.8 डिग्री सेल्सियस के साथ सबसे ठंडा शहर रहा हैं। इनका न्यूनतम तापमान 12 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच दर्ज किया गया है। मौसम विभाग ने आज 31 जिलों में घने कोहरे को लेकर येलो अलर्ट जारी किया है। जिसमे पटना, नालंदा, शेखपुरा, लखीसराय, नवादा, जमुई, बांका, मुंगेर, खगड़िया, समस्तीपुर, दरभंगा, मधुबनी, मोतिहारी, सीतामढ़ी, शिवहर, वैशाली, पूर्वी और पश्चिमी चंपारण, गया, जहानाबाद, औरंगाबाद, रोहतास, भोजपुर, बक्सर, समेत अन्य जिले शामिल हैं। शनिवार को राज्य के 9 जिले के 12 शहरों में बूंदाबांदी से लेकर हल्की बारिश हुई है। गया के शेरघाटी में सर्वाधिक 23 मिमी बारिश हुई। गया के बाराचट्टी में 8.2 मिमी, नवादा के नरहट में 7.8 मिमी, औरंगाबाद के देव में 6.4 मिमी, भभुआ के चांद में 6.4 मिमी, रोहतास के डेहरी में 6.2 मिमी, अरवल के कलेर में 5.8 मिमी, गया के फतेहपुर में पांच मिमी, पटना के श्रीपालपुर में 4.8 मिमी, जहानाबाद में 4.8 मिमी और औरंगाबाद के मदनपुर में 4.6 मिमी बारिश हुई। पटना समेत राज्य के कई शहरों के लोगों को वायु प्रदूषण से राहत नहीं मिल रही है। शनिवार को भागलपुर देश में टॉप पर रहा। वहां का एक्यूआई लेवल 401 दर्ज किया गया। वहीं पांच जिलों में एक्यूआई लेवल 300 से 400 के बीच रहा। राजधानी के लोगों ने लगातार तीसरे दिन प्रदूषित हवा में सांस ली। शनिवार को पटना का एक्यूआई लेवल 314 दर्ज किया गया है। इसके अलावा सहरसा का एक्यूआई लेवल 370, राजगीर का 355, छपरा का 343, आरा का 336, अररिया का 316 रहा। पटना में कोहरे की वजह से रविवार की सुबह में विजिबिलिटी 1000 मीटर से कम होने के चलते इंडिगो की दिल्ली की फ्लाइट को कैंसिल कर दिया गया है। यही विजिबिलिटी दिन के 12 बजे तक बनी रहने की उम्मीद है। अगर विजिबिलिटी ऐसे ही रही तो पहली फ्लाइट करीब 2 घंटा लेट पटना एयरपोर्ट पर उतर सकेगी। पटना एयरपोर्ट पर आने वाली इंडिगो की पहली फ्लाइट हैदराबाद पटना 6ए6719 के आने की अभी तक कोई सूचना नहीं है। वहीं, दिल्ली से पटना आने वाली 6ए 2769 को कम विजिबिलिटी के कारण रद्द कर दिया गया है। विजिबिलिटी कम होने का असर कई फ्लाइटों पर पड़ेगा। इसमें 12 बजे के पहले आने वाली फ्लाइट भी शामिल है। कुहासे की वजह से शनिवार को दिल्ली से पटना पहुंची विस्तारा की फ्लाइट यूके 717 लैंड नहीं कर सकी और दो-तीन चक्कर लगाने के बाद कोलकाता डायवर्ट हो गई थी। विमान के डायवर्ट होने से पटना से दिल्ली जाने वाले 164 यात्री चार घंटे तक पटना एयरपोर्ट पर फंसे रहे। इन यात्रियों को लेकर विमान 2:51 बजे दिल्ली रवाना हुआ था। उधर, इंडिगो की हैदराबाद, रांची, दिल्ली और

संक्षिप्त डायरी

चलती ट्रेन से कूदा कैदी, पोल से टकराने के बाद मौत

दरभंगा। दिल्ली से गिरफ्तार बेनीपुर उपकारा से फरार बंदी ने दरभंगा आने दौरान ट्रेन से छलांग लगा दी। इसमें उसकी मौत हो गई। घटना देर रात दिल्ली-हावड़ा रेलखंड के सराय भूपत रेलवे स्टेशन के पास घटी। मृतक की पहचान सोनू दास(19) के रूप में हुई है। सोनू दास (19) को दिल्ली पुलिस की कस्टडी से लेकर बहेड़ा थाने की पुलिस स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस से दरभंगा आ रही थी। सोनू पर दहेज प्रताड़ना और हत्या का मामला दर्ज था। वो 2023 में उपकारा से पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया था। इसी बीच सराय भूपत रेलवे स्टेशन के पास सोनू शौचालय जाने के बहाने हाथ छुड़ाकर 100 की स्पीड में चल रही ट्रेन से छलांग लगा दी। इसमें वह खंभे टकराकर नीचे गिरा और उसकी मौत हो गई। इसके बाद दरोगा रंजीत सिंह और सिपाही सतीश कुमार ने चेन पुलिंग की। ट्रेन रुकने पर शव को इटावा जीआरपी ने बरामद किया और आगे की कार्रवाई में जुटी। पुलिस की टीम शव को लेकर मृतक के परिजन के पास पहुंची। वहां पहले से तैयार जन प्रतिनिधि के साथ परिजनों ने रेलवे से मुआवजा की मांग को लेकर शव को लेने से इंकार किया। काफी देर तक कड़ी मशक्कत के बाद विरोध कर रहे परिजन माने और शव का अंतिम संस्कार करने के लिए तैयार हुए। दहेज प्रताड़ना और हत्या मामले में गिरफ्तार सोनू को चार जून 2023 को बेनीपुर उपकारा में भेजा गया था। जहां से वह 10 जुलाई 2023 की सुबह को सुरक्षा व्यवस्था को चकमा देकर जेल से फरार हो गया। इसके बाद बहेड़ा थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई। इस बीच पुलिस को कोई सफलता नहीं मिली। लेकिन कुछ दिनों पहले दरभंगा पुलिस को सूचना मिली की सोनू दिल्ली में रह रहा है इसके बाद दरभंगा पुलिस ने दिल्ली पुलिस से संपर्क कर उसे अरेस्ट किया था।

ईश्वर ने कांग्रेस सांसद डॉ. जावेद आजाद को दिया सद्बुद्धिः डॉ. दिलीप कुमार

किशनगंज। किशनगंज मेडिकल कॉलेज निर्देशक सह विधान पार्षद डॉ दिलीप कुमार जायसवाल ने निशाना साधते हुए कहा कि ईश्वर ने किशनगंज कांग्रेस सांसद डॉ मोहम्मद जावेद आजाद को सद्बुद्धि दिया। जो उन्होंने यह स्वीकार किया कि औरंगजेब और अकबर तानाशाह थे। विधान पार्षद जायसवाल ने कहा कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को जो व्यक्ति लौटने का काम कर रहा है। वह तानाशाह कैसे हो सकता है। मालूम हो कि किशनगंज सांसद डॉक्टर मोहम्मद जावेद आजाद ने शुक्रवार को प्रेस वार्ता कर पीएम नरेंद्र मोदी की तुलना औरंगजेब और अकबर से की थी और कहा था कि जिस तरह औरंगजेब और अकबर कार्य करते थे उसी प्रकार से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कार्य करते हैं। विधान पार्षद जायसवाल ने कहा कि भारत जोरो यात्रा को लेकर कहा कि राहुल गांधी के किशनगंज आगमन को लेकर भारत को जोड़ने का कार्य बाद में करें। सर्वप्रथम उन्हें अपनी पार्टी को जोड़ना चाहिए । क्योंकि कांग्रेस की वजूद ममता बनर्जी या नीतीश कुमार स्वीकार करने वाली नहीं है। क्योंकि इंडि गठबंधन में जितने भी डाल हो उनके क्षेत्र से उनको गुजरा है। बिहार में नीतीश कुमार के क्षेत्र से गुजरा है, असम में गुजरा है। जो जिस क्षेत्र से वह मोहब्बत की दुकान खोलना चाहते हैं। इंडि गठबंधन को पता है कि नफरत की दुकान खोलने के लिए आ रहे हैं और कांग्रेस की वजूद को नीतीश कुमार ममता बनर्जी कोई भी कबूल करने वाला नहीं है।

नकली शराब फैक्ट्री का भंडाफोड़

मुजफ्फरपुर। उत्पाद विभाग की टीम ने नकली शराब फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया है। मौके से चार शराब कारोबारियों को गिरफ्तार किया गया है। साथ ही भारी संख्या में खाली बोतल, ढक्कन व अन्य सामग्री जब्त की गई है। अन्य के गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रहे है। मामला जिले अहियापुर थाना का है। प्रभारी उत्पाद अधीक्षक अभिनव कुमार को मिली कि जिले के अहियापुर थाना क्षेत्र के राघोपुर में एक मकान में नकली शराब बनाने का कारोबार चल रहा है। पुलिस की टीम ने पहले मकान को चारों तरफ से घेर लिया। दूसरी मंजिल पर नकली शराब बनाने का कारोबार चलता था। पुलिस ने मौके से चार शराब कारोबारियों को गिरफ्तार किया है। इस दौरान एक पिकअप भी जब्त की गई। उसके अंदर रखी हजारों खाली बोतल, कमरे से शराब पैकिंग करने की सामग्री, 25 लीटर स्पिरिट क्षमता के 10 से अधिक खाली गैलन, रैपर, ढक्कन समेत अन्य सामान बरामद किए गए। करीब पांच कार्टन नकली तैयार विदेशी शराब भी जब्त की गई। गिरफ्तार चारों आरोपितों और स्थानीय लोगों से पूछताछ कर टीम आगे की कार्रवाई की जा रही है। पूरे मामले पर उत्पाद विभाग के प्रभारी निरीक्षक अभिनव कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर अहियापुर थाना क्षेत्र के राघोपुर में छापेमारी की गई। एक मकान के दूसरी मंजिल पर नकली शराब बनाई जा रही थी। मौके से चार शराब कारोबारियों को गिरफ्तार किया गया है। साथ ही शराब बनने की कई सामग्री भी जब्त की गई है।

ब्यूरोक्रेसी को मोटिवेट करता मोदी का संदेश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जयपुर में देशभर के डीजी-आईजी कॉन्फ्रेंस के दौरान तीन दिन की जयपुर यात्रा के पहले दिन राजस्थान भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय में विधायकों-संगठन पदाधिकारियों के बीच जिस तरह से डबल इंजन की सरकार का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने पर जोर दिया, वहीं ब्यूरोक्रेसी और तबादलों को लेकर जो संदेश दिया है वह ना केवल समसामयिक है अपितु देश की ब्यूरोक्रेसी के लिए भी उत्साहवर्द्धक है। दरअसल सरकार बदलते ही पूर्व सरकार से जुड़े ब्यूरोक्रेसी में बदलाव का दौर आरंभ हो जाता है और ब्यूरोक्रेसी के अधिकारियों की निष्ठा और प्रतिबद्धता पर प्रश्न उठाये जाने लगते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्यूरोक्रेसी को लेकर साफ संदेश दिया है कि ब्यूरोक्रेसी कभी भी किसी पार्टी की नहीं होती। ब्यूरोक्रेसी हमेशा सरकार की मंशा और मेंडेट के अनुसार काम करती है। जो सरकार होती है और उसकी जो रीति-नीति होती है उसको धरातल पर अमलीजामा पहुंचाने की जिम्मेदारी ब्यूरोक्रेसी की होती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में बड़ी बात कही कि ब्यूरोक्रेसी जिस पार्टी की सरकार होगी, उसके अनुरूप ही काम करती है। इस संदेश में सबसे बड़ी बात यह है कि प्रधानमंत्री ने एक तरह से देश और प्रदेशों की ब्यूरोक्रेसी पर विश्वास जताने के साथ ही उत्साहवर्द्धन भी किया है। दरअसल ब्यूरोक्रेसी सरकार की रीति-नीति और योजनाओं-कार्यक्रमों को अमलीजामा पहनाने का काम करती है। ब्यूरोक्रेसी में कुछ अधिकारी प्रोएक्टिव होते हैं तो कुछ अधिकारी अपनी गति से चलते हैं। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि अपवाद स्वरूप एकाध अधिकारी हो सकते हैं जो पार्टी विशेष की धारा के अनुसार चलते हैं या चलने का प्रयास करते हैं पर सरकार की निगाह में ऐसे अधिकारी आ ही जाते हैं और सरकार स्वयं उन्हें किनारे करने में देरी नहीं करती। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि कुछ ब्यूरोक्रेट्स रिजल्ट ओरियंटेड होते हैं तो कुछ अधिकारी क्राइसिस मैनेजमेंट में एक्सपर्ट होते हैं। अब होता यह है कि प्रोएक्टिव, क्राइसिस मैनेजमेंट में आगे रहने वाले या रिजल्ट ओरियंटेड अधिकारी निगाह में भी जल्दी आ जाते हैं और कुछ लोगों को उनका इस तरह से आगे आना या आगे रहना सुहाता नहीं है। बदलाव के समय इन्हें कुछ समय के लिए खामियाजा भी भुगतना पड़ता है। इसीलिए आज के संदर्भ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संदेश खास अहमियत रखता है। वैसे भी जब सरकार बनती है तो मुख्यमंत्री विश्वासनीय और रिजल्ट ओरियंटेड अधिकारी को लेकर अपनी टीम बनाते हैं। सरकार बदलने पर कुछ समय के लिए यह अधिकारी अवश्य नजरों में रहते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यहां तबादला डिजायरों से भी दूर रहने की सलाह दी है और इसके लिए भैरो सिंह जी के समय का उदाहरण भी दिया है। मुझे अच्छी तरह ध्यान है कि उस समय जब अत्यधिक दबाव पड़ने लगा तो तत्कालीन सहकारिता मंत्री सुजान सिंह यादव का साफ कहना था कि यदि अधिकारी की शिकायत है तो वे जनप्रतिनिधि की शिकायत पर उस पद से हटाने में कोई देरी नहीं करेंगे पर जहां तक उस पद पर किसी को लगाने की बात है तो उन्होंने साफ कहा कि सरकार वहां अपनी सोच और समझ के अनुसार अधिकारी लगाएगी। यानी डिजायर आप अधिकारी को हटाने की तो कर सकते हैं पर अपनी पसंद के अधिकारी को लगाने की नहीं। इस तरह के अनेक उदाहरण मिल जाएंगे। दरअसल गंभीरता से देखा जाए तो यह तबादला उद्योग और डिजायर सिस्टम सरकार की बदनामी का भी बड़ा कारण बनता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साफ संदेश देने का प्रयास किया है। फिर ब्यूरोक्रेसी से काम लेने की कला तो सरकार में होनी ही चाहिए, यह अपेक्षा की जाती रही है। देखा जाए तो लोकतांत्रिक व्यवस्था में ब्यूरोक्रेसी की खास भूमिका होती है। भारतीय चिंतकों से लेकर देश-दुनिया के जाने माने चिंतकों ने ब्यूरोक्रेसी के महत्व को स्वीकारने के साथ ही ब्यूरोक्रेसी की भूमिका भी अपने अपने तरीके से तय की है। कौटिल्य के ह्यअर्थशास्त्रह्न में ब्यूरोक्रेसी यानी नौकरशाही के बारे में विस्तार से बताया गया है, लेकिन आज हम जिस रूप में ब्यूरोक्रेसी को देखते हैं उसको किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता। प्राचीन मिस्त्र और रोम में भी नौकरशाही की मौजूदगी के प्रमाण मिलते हैं, लेकिन प्राचीन नौकरशाही प्रमुखतः राजशाही पर आधारित थी, शासक के निजी विचार व भावनाओं पर शासन चलता था। किंतु आज की ब्यूरोक्रेसी कानून-कायदों से चलने वाली व्यवस्था है। पूंजीवाद और प्रजातंत्र के विस्तार ने आधुनिक नौकरशाही को सरकार का अनिवार्य अंग बना दिया है। 1745 में फ्रांसीसी अर्थशास्त्री विन्सेट डी गोर्नी ने ब्यूरोक्रेसी शब्द का प्रयोग किया। नौकरशाही को अंग्रेजी में ब्यूरोक्रेसी कहते हैं, जो लेटिन भाषा के ब्यूरो जिसका अर्थ है मेज और ग्रीक भाषा के क्रेसी जिसका अर्थ है शासन से मिलकर बना है। इस प्रकार ब्यूरोक्रेसी का तात्पर्य मेज का शासन से है। जॉन स्टुअर्ट मिल के अनुसार नौकरशाही का अर्थ समाज में सरकार के व्यावसायिक रूप से दक्ष प्रशासकों से है। जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर पहले ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने नौकरशाही के नकारात्मक पहलुओं के बजाय सकारात्मक पहलुओं पर ज्यादा बल दिया और नौकरशाही के आदर्श मॉडल का प्रतिपादन किया। वेबर ने नौकरशाही के बारे में बताया कि नियुक्त किये गए अधिकारियों का समूह ब्यूरोक्रेट कहलाता है। साल 1920 में वेबर की किताब विर्टशॉफ्ट एंड गेसलशॉफ्ट प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने सत्ता के सिद्धांत के बारे में बताया है। वेबर के अनुसार सत्ता के तीन रूप हैं- ट्रेडिशनल पॉवर, मिराकूलस पॉवर एवं लीगल पॉवर। यह भी साफ हो जाना चाहिए कि शासन में ब्यूरोक्रेसी की भूमिका लगभग तय होती है, जहां चुनी हुई सरकार कानून कायदे, योजनाओं, कार्यक्रमों या यों कहें कि अपना एजेंडा प्रस्तुत करते हैं वहीं धरातल पर अमली जामा पहनाने की जिम्मेदारी व अहम भूमिका ब्यूरोक्रेसी की होती है। इसमें कोई दो राय नहीं कि प्रजातंत्र में चुनी हुई सरकार की ईच्छा शक्ति और वीजन का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

अयोध्या के हनुमान

ANALYSIS

रामबहादुर राय

जाने-माने पत्रकार भानुप्रताप शुक्ल ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में एक राज खोला। वह यह कि उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक गुरुजी गोलवलकर से एक दिन पूछ ही लिया कि 'आपकी आयु तो अब निश्चित हो गयी है तो फिर आपके बाद हिन्दुत्व का कार्य कौन करेगा?' इस प्रश्न पर वे एक क्षण शांत रहे। फिर बोले कि 'मैं अदृश्य रह कर यह कार्य करता रहूंगा।' उनके इस उत्तर से भानुप्रताप शुक्ल की जिज्ञासा शांत नहीं हुई इसलिए पुनः पूछा कि 'हमें दृश्यमान कौन दिखाई देगा?' इस पर उन्होंने धीरे से कहा-'अशोक सिंघल।' यह 1972 की बात है। गुरुजी गोलवलकर लखनऊ आए हुए थे। उससे पहले उनके कैंसर का ऑपरेशन हो गया था। भानुप्रताप शुक्ल उनकी सेवा में थे। तभी यह वार्ता हुई थी। जिसे उन्होंने अपने मन में ही रखा था। जब उन्हें लगा कि वे चंद दिनों के ही मेहमान हैं तब इसे एक दिन उजागर किया। वे अशोक सिंघल के पास पहुंचे। यह बात बताई। जो अज्ञात- सी रही है।

जाने-माने पत्रकार भानुप्रताप शुक्ल ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में एक राज खोला। वह यह कि उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक गुरुजी गोलवलकर से एक दिन पूछ ही लिया कि 'आपकी आयु तो अब निश्चित हो गयी है तो फिर आपके बाद हिन्दुत्व का कार्य कौन करेगा?' इस प्रश्न पर वे एक क्षण शांत रहे। फिर बोले कि 'मैं अदृश्य रह कर यह कार्य करता रहूंगा।' उनके इस उत्तर से भानुप्रताप शुक्ल की जिज्ञासा शांत नहीं हुई इसलिए पुनः पूछा कि 'हमें दृश्यमान कौन दिखाई देगा?' इस पर उन्होंने धीरे से कहा-'अशोक सिंघल।' यह 1972 की बात है। गुरुजी गोलवलकर लखनऊ आए हुए थे। उससे पहले उनके कैंसर का ऑपरेशन हो गया था। भानुप्रताप शुक्ल उनकी सेवा में थे। तभी यह वार्ता हुई थी। जिसे उन्होंने अपने मन में ही रखा था। जब उन्हें लगा कि वे चंद दिनों के ही मेहमान हैं तब इसे एक दिन उजागर किया। वे अशोक सिंघल के पास पहुंचे। यह बात बताई। जो अज्ञात- सी रही है। अशोक सिंघल के निधन के बाद उसे एकल अभियान के प्रणेता श्याम गुप्त ने एक संस्मरण में लिखकर उजागर किया है। अगर वे इसे न लिखते तो यह रहस्य ही बना रहता। ऐसी स्थिति में सिर्फ यही पता होता कि एक समय ऐसा भी आया था जब वे प्रचारक जीवन से अलग होकर वेदों के प्रचार-प्रसार में लगना चाहते थे। इसी आशय का पत्र उन्होंने गुरुजी गोलवलकर को लिखा था। जिसके उत्तर में उन्होंने सलाह दी थी कि 'आप अपनी अंतःप्रेरणा के अनुकूल कार्य में संलग्न हों।' अशोक सिंघल ने अनुमति मांगी। उन्हें सरसंघचालक ने अनुमति दे दी। इसके बावजूद वे संघ कार्य में बने रहे। कैसे? इसकी भी एक कहानी है। उन्हें भाऊराव देवरस ने समझाया। कहा कि 'तुम्हारे निर्णय पर मुझे आश्चर्य है। अरे भाई, संघ कोई व्यसन है, जो छोड़ा जा सकता है? संघ तो विचार है। विचार कभी छूटता नहीं। उसमें आपका योगदान उतना न हो पाए, यह अलग बात है। पर आप संघ से मुक्त हो जाएंगे, यह संभव ही नहीं है। इसलिए चिंता किस बात की।' कुछ इसी तरह की सलाह उन्हें पंडित रामचंद्र तिवारी ने दी। जिन्हें अशोक सिंघल अपना गुरु मानते थे। उन्होंने कहा था कि 'एक लक्ष्य प्राप्ति के लिए दूसरे मार्ग से जाकर क्या अंतर पड़ जाएगा?' ऐसे परामर्श पर उन्हें गहन आत्मचिंतन करना पड़ा। उसका ही परिणाम था कि अशोक सिंघल ने निर्णय किया-संघ कार्य ही उनके लिए श्रेष्ठ है। उसके बाद 'वे अधिक स्फूर्ति, शक्ति और चेतना के साथ संघ कार्य में जुट गए थे।' लेकिन वेद प्रचार के लिए भी सक्रिय रहे। वैदिक यज्ञ में उन्हें अपार शांति मिलती थी। इसे बहुत बार उन्होंने जब-तब बातचीत में बताया है। 1964 की घटना है। वे वैदिक यज्ञ में एक पखवाड़े शामिल हुए। जहां उन्हें अनुभव हुआ कि सबकुछ छोड़कर यही कार्य करना चाहिए। उन्हें सहसा जो भान हुआ वह उनकी गहरी संवेदनशीलता का परिचायक है। इस प्रसंग से उनके व्यक्तित्व का एक अचर्चित प्रश्न सामने आता है। इससे यह बात भी निकलती है कि समाज-सेवा के लिए समर्पित हर श्रेष्ठ व्यक्ति के जीवन में कभी-न-कभी ऐसा कोई क्षण आता अवश्य है, जब वह सहज मानवीय मनोद्वेलन में अपने कार्य और लक्ष्य के प्रति कभी-कभी स्वयं ही संदिग्ध हो उठता है। ऐसे समय में सही परामर्श से वह व्यक्ति अपनी नियति से चाहे अनचाहे साक्षात्कार कर लेता है। ऐसा ही एक क्षण अशोक सिंघल के जीवन में आया था। एक तरफ वे द्वंद से गुजर रहे थे तो दूसरी तरफ उसी साल गुरुजी गोलवलकर की पहल पर स्वामी चिन्मयानंद के संदीपनी आश्रम में विश्व हिन्दु परिषद् की स्थापना का विचार हो रहा था। जिससे वे संयुक्त महासचिव के रूप में बहुत बाद में जुड़े फिर महासचिव बनाए गए। और अंततः अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष का पद संभाला। इस प्रकार विश्व हिन्दू परिषद् में भी वे अपने पांव चलकर शिखर पर अपनी योग्यता और प्रतिभा से पहुंचे। विश्व हिन्दू परिषद् उनकी नियति थी। उस नियति ने जो सुनिश्चित कर रखा था वह ही उस समय हुआ जब वे विश्व हिन्दू परिषद् में पहुंचे। इसे श्याम गुप्त ने इन शब्दों में लिखा है- 'हम सबके लिए वे साक्षात परम पूज्य गुरुजी (माधव सदाशिवराव गोलवलकर) के अवतार थे। 1973 में गुरुजी का निधन होता है और यही वर्ष जब अशोक जी यमराज को वापस लौटाकर पुनः जीवन प्राप्त करते हैं। अध्यात्म के शिखर पुरुष के प्रतिनिधि के नाते उन्होंने संत महात्माओं को एक मंच पर लाने का जो अद्भुत कार्य करके दिखाया वह हिन्दुत्व के पुनर्जागरण के इतिहास में सदा अविस्मरणीय रहेगा।' हिन्दू समाज के जागरण का वे उपकरण बन सके। इसके मूल कारण की जब भी खोज की जाएगी तो निष्कर्ष निकलेगा कि मीनाक्षीपुरम की घटना न हुई होती तो वे संघ कार्य में ही रहे होते। वृहत्तर दायित्व का अवसर न आया होता। लेकिन नियति ने उन्हें पुकारा। यह कहना अत्यंत कठिन है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तीसरे सरसंघचालक बाला साहब देवरस उस रहस्य को जानते थे या नहीं, जिसे गुरुजी गोलवलकर ने भानुप्रताप शुक्ल को बताया था। पर यह तो सभी जानते हैं कि मीनाक्षीपुरम की घटना को बाला साहब देवरस ने संघ की वैचारिक दिशा के लिए मील का पत्थर बनाया। पूरे देश से संघ के जिला प्रचारकों का एक सम्मेलन हुआ जो बेंगलुरू के पास पांच दिनों तक चला। उसमें ही संघ की दलित नीति भी निर्धारित हुई। उसका ही एक परिणाम था कि 'विराट हिंदू समाज' नाम का मंच बना, जिसमें हिंदू समाज के हर संप्रदाय के आचार्य सम्मिलित हुए। उसका पहला समागम दिल्ली में हुआ, जिसका संचालन अशोक सिंघल ने किया। तब वे संघ में दिल्ली प्रांत प्रचारक थे। विराट हिंदू समाज के उस समागम में देशभर से 5-6 लाख लोग आए। वह एक नया मोड़ था धर्मांतरण से उत्पन्न जागरण का। देशव्यापी वह प्रकटीकरण था। उस समागम की सफलता को स्थायित्व प्रदान करने के लिए जरूरी था कि विश्व हिन्दू परिषद में प्रखरता आए। वह था असाधारण चुनौतीपूर्ण कार्य। उसे पूरा करने का बीड़ा अशोक सिंघल के अलावा दूसरा उठा पाने में शायद ही कोई समर्थ रहा होगा। इसलिए उन पर नया दायित्व आया। वह कैसे आया? इसे सरसंघचालक मोहन भागवत ने उस समय प्रसंगवश बताया जब अशोक सिंघल का 90वां जन्मदिन का एक समारोह दिल्ली में हुआ। वह उनका पहला और अंतिम जन्म दिन समारोह था। वहां थोड़ी भूमिका बनाकर सरसंघचालक मोहन भागवत ने बेंगलुरू सम्मेलन को याद किया। वह 1981 में हुआ था। जहां संघ के प्रचारकों के राष्ट्रीय जमावड़े में इस पर विमर्श हुआ कि मीनाक्षीपुरम की घटना से उत्पन्न चुनौती का सामना कैसे करें? इसे चिन्हित करते हुए मोहन भागवत ने थोड़े विनोद में कहा कि वहां जिस तरह हिंदुत्व की भावी दिशा पर अशोक सिंघल बोले थे, उससे हमने यह अनुमान लगा लिया था कि उन्हें विश्व हिंदू परिषद् में भेजा जाएगा। कहावत भी है जो बोले, वह दरवाजा खोले। यही अशोक सिंघल पर अक्षरशः घटित हुआ। तत्कालीन सरसंघचालक बाला साहब देवरस के इस निर्णय से दो लक्ष्य सिद्ध हुए। पहला यह कि विश्व हिंदू परिषद् का कायाकल्प हो गया। उससे पहले वह वानप्रस्थियों का एक आश्रम जैसा था। अशोक सिंघल ने उसे हिन्दुत्व के लड़ाकूओं का बड़ा अखाड़ा बना दिया। ऐसा अखाड़ा नहीं जहां पहलवान कुश्ती लड़ते हैं, बल्कि धर्म की रक्षा के लिए समय-समय पर हिन्दू समाज ने जो अखाड़े बनाए उसी परंपरा को उन्होंने पुनर्जीवित किया। पुराने शब्द को नया अर्थ वे ही दे सकते थे। क्या उनमें ऐसा पुरुषार्थ अचानक प्रकट हुआ? यह कोई भी पूछ सकता है। प्रश्न दो कारणों से पूछे जाते हैं। जिज्ञासावश या संदेह उत्पन्न होने पर। जिस 'कारण से हो, अगर कोई यह जानना चाहता है तो उसे यहां इतना ही बताया जा सकता है कि कानपुर में रहते हुए अशोक सिंघल ने करीब ढाई दशक तक उत्तर प्रदेश के छात्र-युवा आंदोलनों के सूत्रधार की सफल और सार्थक भूमिका निभाई थी। मैं कह सकता हूँ कि वह उनकी मूल पूंजी थी जो अयोध्या आंदोलन में काम आई। लेकिन इसे कितने लोग जानते हैं! दूसरी बात जो हुई वह अकल्पनीय थी। किसी की कल्पना से भी परे थी। वह यह कि विश्व हिंदू परिषद में अशोक सिंघल ने नई जान डाल दी। इसमें ज्यादा वक्त नहीं लगा।

लेखक, हिन्दुस्थान समाचार के समूह सम्पादक हैं।

'मोहल्ला क्लीनिक' में भ्रष्टाचार के आरोप

मोहल्ला क्लीनिक योजना पर लगे फजीवाड़े के आरोप ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की छवि पर एक बार फिर बड़ा प्रहार किया है। मोहल्ला क्लीनिक उनकी ऐसी योजना रही है जिसे उन्होंने अभी तक अपने चुनावी जीत वाले मंत्र के तौर पर इस्तेमाल किया। इसलिए अन्य योजनाओं के मुकाबले उनकी ये सबसे अग्रणी योजना रही है। इसे उन्होंने चुनावी ह्यमॉडलह्न के रूप में प्रचारित किया और उसका नाम लेकर लोगों से वोट भी मांगे। लेकिन अब इसमें भी भ्रष्टाचार का दीमक लग गया है। 2023-24 के लिए दिल्ली सरकार ने 80 हजार करोड़ रुपए का बजट निर्धारित किया था जिसमें मोहल्ला क्लीनिक के लिए करीब एक तिहाई बजट रखा। पर, इस भारी-भरकम धनराशि की ऐसी बंदरबांट होगी, इसकी दिल्ली वासियों ने कल्पना तक नहीं की होगी। अन्य राज्यों के मुकाबले दिल्ली में टैक्स देने वालों की संख्या कहीं अधिक है। लेकिन उन्हें क्या पता उनके टैक्स के पैसों पर यूं डाका डाला जाएगा। आरोप निश्चित रूप से बेहद गंभीर हैं। हालांकि, मोहल्ला क्लीनिक में गड़बड़झाला है, इसकी भनक खुद केजरीवाल हो चुकी थी, तभी उन्होंने पिछले वर्ष अगस्त में इसकी जांच के आदेश दिए थे। जांच में पैथोलॉजी और रेडियोलॉजी टेस्ट में जमकर फजीवाड़ा पाया लेकिन ये रिपोर्ट स्वास्थ्य विभाग ने उन्हें न देकर सीधे उप-राज्यपाल को थमा दी। नतीजतन, केंद्रीय गृह मंत्रालय से मंत्रणा के बाद एलजी ने बिना देर किए तुरंत सीबीआई जांच की सिफारिश कर दी। जांच की परतें जब एक-एक कर खुलेंगी तो कई बेनकाब होंगे। हालांकि, मौजूदा स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने पल्ला झाल लिया। लेकिन इतनी आसानी से वह भी नहीं बच पाएंगे। मोहल्ला क्लीनिक में भ्रष्टाचार के खुलासे के बाद दिल्ली के लोग बस यही कह रहे हैं कि जब आरोप साबित हो जाएं तो स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने वालों को ऐसी कठोर सजा मिले जो सभी के लिए नजीर हो। चुनावी फायदे के तौर पर देखें तो आम आदमी पार्टी ने मोहल्ला क्लीनिक को कभी योजना नहीं माना, उन्होंने हमेशा चुनावी मॉडल के रूप में इसे प्रस्तुत किया। दरअसल ये योजना उनके लिए अप्रत्याशित वोटबैंक रही जिसके जरिए आम आदमी पार्टी की चुनावी नैया पार हुई। पर, अब ये चुनावी नौका समुद्र के बीच मंझधार में फंसती दिखने लगी है। निश्चित रूप से लोकसभा चुनाव से पहले चिकित्सा विभाग में भ्रष्टाचार के ये आरोप आम आदमी पार्टी की विश्वसनीयता पर गहरा चोट करेंगे। भाजपा के अलावा कांग्रेस भी हमलावर हो जाएगी। इंडी गठबंधन को भी तगड़ा धक्का लग सकता है। विरोधी दल जानते हैं कि प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए मोहल्ला क्लीनिक योजना अरविंद केजरीवाल सरकार की प्रमुख पहल में से एक है। जिसमें भ्रष्टाचार के आरोप लगने का मतलब है विपक्ष को बैठे-बिठाए बड़ा मुद्दा हाथ लगना। भाजपा अब केजरीवाल की रही-सही इमेज को डेमेज करने में शायद ही कसर छोड़े। आरोप लगने के बाद दिल्ली में भाजपा की समूची टीम आम आदमी पार्टी पर हमलावर हो गई है। चुनाव के ऐन वक्त लगा ये झटका शायद ही केजरीवाल को जल्द उबरने दे। मोहल्ला क्लीनिक पर भ्रष्टाचार का जो आरोप लगा है, उसकी पृष्टभूमि पर गौर करें तो दिल्ली विजिलेंस डिपार्टमेंट ने जब अपनी प्रारंभिक जांच की और निरीक्षण के लिए राजधानी में बने मोहल्ला क्लीनिक पहुंचे तो किसी भी क्लीनिक में उन्हें कोई डॉक्टर नहीं मिला। जो मिले, वो चिकित्सक नहीं बल्कि चतुर्थ श्रेणी स्टॉफ थे। कई जगहों पर तो अनुभवहीन स्टाफ मरीजों को दवा और टेस्ट लिखते दिखाई दिए। जब उनसे पूछा गया तो वो भाग खड़े हुए। दरअसल, ये सब दिल्ली सरकार की नाक के नीचे हुआ। गडबड़झाले की खबर जानते हुए भी दिल्ली सरकार अनजान बनी रही। बहरहाल, योजना के कमजोर पड़ने का एक वाजिब कारण ये भी है कि जब से निवर्तमान स्वास्थ्य मंत्री सतेंद्र जैन भ्रष्टाचार में फंसकर जेल गए हैं, तभी से दिल्ली का स्वास्थ्य विभाग रामभरोसे हो गया। विभाग से जुड़े अधिकारी-कर्मचारी बेलगाम हुए, भ्रष्टाचारी दीमक के कीड़े उन्होंने ही सबसे पहले इस योजना में लाकर छोड़े। बीते करीब दो-ढाई वर्षों से आम आदमी पार्टी किसी न किसी पचड़े में फंसती ही रही है। उनके प्रमुख नेता इस वक्त जेलों में हैं। केजरीवाल पर भी ईडी की गिरफ्तारी की तलवार लटकी हुई है। ईडी के बार-बार बुलावे पर नहीं पहुंच रहे। अब ये नई आफत और उनके गले पड़ गई। इसमें भी उनका नाम आना स्वाभाविक है। कुल मिलाकर लोक व्यवस्था से दिल्ली सरकार की पकड़ कमजोर हो गई है। विभागों में आनन-फानन में लगाए अनुभवहीन मंत्री बिगड़ी व्यवस्था को मैनेज नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए सभी क्षेत्र भ्रष्टाचार की दलदल में समाते जा रहे हैं। एक वक्त ऐसा भी था जब मोहल्ला क्लीनिक की विदेशों में भी चर्चा हुई। अग्रणी मेडिकल जर्नल, द लैंसेट ने भी अपने संपादकीय कॉलम में टिप्पणी की थी कि दिल्ली मोहल्ला क्लीनिक स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित आबादी को सफलतापूर्वक सेवा देता है। उस रिपोर्ट को भी केजरीवाल ने बीते विधानसभा चुनाव में भुनाया था। आरंभ में निपुण चिकित्सक इस योजना को आगे बढ़ा रहे थे, बाद में उन्होंने भी किनारा कर लिया। नौबत ऐसी है कई मोहल्ला क्लीनिक में स्टॉफ के लोग ताश के पत्ते खेलते मिलते हैं। कई जगहों पर कुछ अप्रिय घटनाएं भी हुईं। पूर्वी दिल्ली के एक क्लीनिक में तो महिला स्टॉफ के साथ छेड़छाड़ की घटना भी घटी। कुल मिलाकर केजरीवाल के इस चुनावी जीत वाले मंत्र या मॉडल पर लगे आरोप उन्हें सियासी रूप से परेशान जरूर करेंगे।

Social Media Corner

सच के हक में...

अयोध्या में प्रभु श्री राम के दिव्य-भव्य मंदिर में राम लला के आगमन का इंतजार खत्म होने वाला है। देशभर के मेरे परिवारजनों को उनकी प्राण-प्रतिष्ठा की बेसब्री से प्रतीक्षा है। उनके स्वागत में गीताबेन रबारी जी का ये भजन भावविभोर करने वाला है।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'एक्स' पर पोस्ट)

बंगाल के तर्ज.पर झारखंड में भी ईडी के लोगों पर भविष्य में हमला करवाने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। सूत्रों के मुताबिक बीते 5 जनवरी को इस काम के लिये कुछ भाड़े के गुंडों को तैयार कर हवाई अड्डा के पीछे वाले इलाके में बुलाकर रखा गया था। सर्वविदित है कि इससे पहले ईडी के अफसरों को झूठे मुकदमों में फँसाने, असामाजिक तत्वों से धमकी दिलाने एवं कुछ महिलाओं को तैयार कर ईडी अफसरों को फँसाने का षड्यंत्र जेल से ही रचा जा रहा था, जिसका भांडा फूट जाने के कारण वो योजना विफल हो गया था। केन्द्रीय गृह मंत्रालय से अनुरोध है कि वो ऐसे षड्यंत्रकारियों पर कड़ी नजर रखे।

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी का 'एक्स' पर पोस्ट)

श्रद्धा और सत्य का मिलन ही आनंद प्राप्ति का उपाय

संशय का महत्व है। संशयी प्रत्यक्ष पर पूरा विश्वास नहीं करता। वह तर्क करता है। विश्वासी से संशयी बड़ा है। विश्वासी तृप्त है और संशयी बेचैन, अतृप्त। भारतीय जीवनशैली में अंधविश्वास को कोई जगह नहीं मिला। लेकिन विश्वासी और संशयी से भी बड़ा जीवन मूल्य है श्रद्धा। श्रद्धा और विश्वास में अंतर है। अस्तित्व के प्रति प्रेम का नाम है श्रद्धा। श्रद्धा साधारण प्रीति नहीं। परम प्रीति है। वैज्ञानिक संपूर्ण जानकारी के लिए प्रयासरत हैं। गैर जाने भाग के बारे में जानकारियां परिपूर्ण नहीं हैं। हमारी जानकारी ही है कि हम इसे नहीं जानते। लेकिन यह जानकारी भी पर्याप्त है। इससे शोध के प्रयास की तीव्रता बढ़ती है। अस्तित्व का इससे भी बड़ा भाग अज्ञेय है। जाने हुए, जानने की सूची में आए हुए और बिना जाने भाग सहित संपूर्ण अस्तित्व के प्रति हमारी प्रीति का नाम है श्रद्धा। श्रद्धा कोई विचार नहीं है। श्रद्धा, पंथ, मत, मजहब या रिलीजन के उपदेशों वाला विश्वास नहीं। श्रद्धा अनुभूति है। बूंद के हृदय में सागर का साक्षात। क्षर में अक्षर का प्रत्यक्ष। सोचना साधारण मानसिक कार्यवाही है। भारतीय दृष्टि में हरेक मानसिक या बौद्धिक कार्रवाई का आदि अंत ज्ञान है। लेकिन ज्ञान का अवसान कर्म में होना चाहिए। कोरे शब्द ज्ञान का कोई मतलब नहीं। वैसे कर्म का अवसान भी ज्ञान में होता है। कर्म करते-करते सप्रयास या अनायास अंतःकरण से कोई सुगंध उठती है। गंध आच्छादन होता है। कोई गीत उगता है। संगीत आता है। मेघ आते हैं, बिना मानसून ही और सब कुछ रसमय, गंधमादन और गीत संगीत से भर जाता है। यह हुई श्रद्धा। संभव है कि अब तक ऐसा नहीं हुआ हो लेकिन श्रद्धा है कि ऐसा हो सकता है किसी भी क्षण। उस क्षण या होनी की धैर्यपूर्ण प्रतीक्षा भी श्रद्धा ही है। मेघ आएंगे ही, बादलों को क्यों कोसना? सूर्य उगेंगे ही, अंधेरे से क्या उलाहना। ऊषा आएगी ही, अंधकार से क्यों उलझना? सूर्य अरुण तरुण होकर हमें प्रकाश किरणों से नहलाएगे ही अधीर क्यों होना? ऐसी आश्वस्त प्रतीक्षा श्रद्धा है। श्रद्धा आनंद आश्वस्ति है। भारतीय इतिहास का उत्तर वैदिक काल अग्निधर्मा था। यज्ञ प्रतिष्ठा की अग्नि आंच थी ही, ज्ञान अग्नि के ताप से तपे उपनिषदों के आग्नेय मंत्र भी इसी समय उगे। इसी साहित्य के एक आनंदवर्द्धन मंत्र में श्रद्धा को पत्नी और सत्य को यजमान कहा गया है- श्रद्धा पत्नी सत्यं यजमानः। यहाँ यज्ञ का सुन्दर प्रतीक है। यज्ञ में पति-पत्नी साथ बैठते थे। पुरोहित लोककल्याण और यज्ञ आयोजक के लिए मंत्र बोलते थे। यज्ञ के आयोजक यजमान कहे जाते थे। पत्नी के बिना पारंपरिक कर्मकाण्ड पूरे नही होते। इस मंत्र में सत्य यजमान है। यज्ञ साधारण हवन नहीं। वैदिक अनुभूति में अस्तित्व की पूरी गतिविधि भी यज्ञ ही है। विज्ञान, दर्शन, योग या शोध का उद्देश्य सत्य प्राप्ति है। यहां सत्य ही आनंद है। मंत्र का दूसरा भाग बड़ा रोमांचकारी और प्रीतिकर है - श्रद्धा सत्यं तत अत्युतमं मिथुनं। पत्नी श्रद्धा और यजमान सत्य का मिथुन - प्रेमपूर्ण मिलन अतिउत्तम है। इसी मिलन से आनंद लोक मिलते हैं। श्रद्धा और सत्य की लवस्टोरी रमणीय है। श्रद्धा और सत्य का मिलन ही आनंद प्राप्ति का उपाय है। मिलन भी सामान्य नहीं- श्रद्धया सत्येन मिथुने। ठीक से मिलन। जब दो नहीं बचे तब। अद्वय मिलन। श्रद्धा और सत्य दो अनुभूतियां जान पड़ती हैं। दोनों की प्रीति अजर अमर है। सत्य मिला तो श्रद्धा भी मिली। श्रद्धा आई, प्रगाढ़ हुई, संपूर्ण हुई तो सत्य की लब्धि। सत्य श्रद्धाहीन नहीं हो सकता। श्रद्धा सत्यविहीन नहीं हो सकती। सत्यहीन श्रद्धा अंधविश्वास है। बिना जाने, देखे, समझे और अनुभव रस के अभाव के बावजूद मान लेना श्रद्धा नहीं है। यहाँ लोकजीवन में वरिष्ठों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए अनेक शब्द हैं। श्रीमान कहने का अपना सुख है।

ईडी पर राजनीति

प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी को लेकर दो खबरें शुक्रवार को चर्चा में थीं। देश के दो अलग-अलग हिस्सों से आने वाली ये खबरें बताती हैं कि आर्थिक अपराध को रोकने के लिए बनी यह संस्था किस तरह से राजनीतिक विवादों में फंस रही है। पहली खबर तमिलनाडु की है, जहां ईडी ने दो गरीब किसानों के खिलाफ धन शोधन का मामला दर्ज करा दिया और उनके खिलाफ सम्मन भी जारी कर दिया। वह भी उस मामले में, जिसमें अदालत का फैसला दोनों भाइयों के पक्ष में आ चुका था। हालांकि, यह बात छह महीने पुरानी है, लेकिन अब जब कुछ लोगों ने इस मामले को सोशल मीडिया पर शेयर किया, तो हंगामा हो गया। ईडी ने अब अपनी गलती स्वीकार कर यह मामला वापस ले लिया है। इस बीच यह भी कहा गया कि ईडी ने राजनीतिक कारणों से दोनों भाइयों को फंसाया था। पुलिस द्वारा ऐसी ज्यादतियों के किस्से कभी-कभार सुनने को मिलते रहते हैं, मगर किसी विशिष्ट काम के लिए बनाई गई संस्था को लेकर ऐसी बात सामने आती है, तो निश्चित तौर पर संस्था के काम-काज का तरीका बदलने की जरूरत है। राजनीतिक कारणों से कार्रवाई करने के आरोप ईडी के लिए नए नहीं हैं, बल्कि आजकल तो जैसे ही वह किसी मामले की जांच शुरू करती है, तुरंत ही आरोप लगने शुरू हो जाते हैं कि यह काम राजनीतिक बदले की भावना से किया जा रहा है। ऐसी संस्था कैसे निष्पक्ष दिखाई दे और उसे लेकर ज्यादा विवाद न हों, इस पर पूरे देश को गंभीरता से कुछ सोचना और करना चाहिए, लेकिन इसे लेकर पश्चिम बंगाल में जो हुआ, वह उसका तरीका नहीं है, वह आपत्तिजनक और आपराधिक तो खैर है ही। ईडी की टीम राज्य के संदेशखली नामक स्थान पर राशन घोटाले की जांच के क्रम में छापा मारने पहुंची, तो भीड़ ने पहले उसके अधिकारियों का घेराव किया और फिर उन पर हमला किया गया। जिस गाड़ी में वे जा रहे थे, उसे बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया गया। हमलावर सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस के नेता शेख सजहान के समर्थक बताए जा रहे हैं।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899 Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

वाईब्रेंट गुजरात ने 55 अरब डॉलर का एफडीआई लाने में मदद की: अधिकारी

नई दिल्ली ।

गुजरात में निवेश आकर्षित करने के लिए वर्ष 2003 से हर दो साल पर आयोजित होने वाले वाइब्रेंट गुजरात वैश्विक शिखर सम्मेलन के जरिये राज्य को बीते दो दशकों में 55 अरब डॉलर का कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) जुटाने में मदद मिली है। गुजरात सरकार के अधिकारियों ने कहा कि निवेशक सम्मेलन के आयोजन के साथ सावधानी से बनाई गई रणनीतियों और उनके सुविचारित अमल ने वर्ष 2002 और 2022 के बीच बड़े पैमाने पर एफडीआई जुटाने में मदद की है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, राज्य ने पिछले 20 वर्षों में 55 अरब डॉलर का एफडीआई आकर्षित किया है। इसके मुताबिक, वर्ष 2022-23 में गुजरात को 37,059 करोड़ रुपये यानी 4.9 अरब डॉलर का एफडीआई हासिल हुआ। गुजरात के वाहन क्षेत्र में सर्वाधिक 13 प्रतिशत एफडीआई हुआ है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर यह अनुपात सिर्फ पांच प्रतिशत है। उद्योग जगत के दिग्गजों का मानना है कि वाइब्रेंट गुजरात वैश्विक सम्मेलन (वीजीजीएस) राज्य की अर्थव्यवस्था के साथ-साथ विकसित हुआ है और साधारण शुरुआत के बाद से यह राज्य में विदेशी निवेश के लिए प्रवेश द्वार साबित हुआ है। इस निवेशक सम्मेलन का 10वां संस्करण गांधीनगर में 10-12 जनवरी को आयोजित होने जा रहा है जिसका विषय 'भविष्य का प्रवेश-द्वार' रखा गया है। देश की अग्रणी वाहन विनिर्माता मारुति सुजुकी के एक अे धिकारी ने कहा` कि बात यह है कि निवेशक विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी होना चाहते हैं। लिहाजा अगर जगह आपके विनिर्माण को घरेलू बाजार और निर्यात बाजार दोनों में प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद करती है तो विनिर्माण में मदद करने के मामले में गुजरात सबसे अच्छा है। राज्य ने 2002 से 2022 तक कुल मिलाकर 55 अरब डॉलर का एफडीआई हासिल किया है। इस सम्मेलन के शुरुआती संस्करणों में कोई भागीदार देश नहीं होता था लेकिन इसके 2019 संस्करण में 15 देश भागीदार बने थे। पिछले साल एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बीते दो दशकों में बढ़ी भागीदार देशों और प्रदर्शकों की संख्या के बारे में बात की थी।

वनप्लस एसीई 3 स्मार्टफोन होता फास्ट चार्ज

-कंपनी का ये लेटेस्ट फ्लैगशिप स्मार्टफोन

नई दिल्ली ।

चीन में हाल ही में वनप्लस एसीई 3 को लॉन्च किया गया है। इसकी खासियत है कि यह मोबाइल बेहद फास्ट चार्ज होता है। ये कंपनी का लेटेस्ट फ्लैगशिप स्मार्टफोन है।

उम्मीद है कि इस महीने के अंत तक इसे भारत समेत ग्लोबल मार्केट में उतारा जा सकता है। इसमें क्वालकॉम स्नैपड्रेगन जन 2 प्रोसेसर दिया गया है। साथ ही इसमें 100 डब्ल्यू सुपर वॉक फास्ट चार्जिंग सपोर्ट भी दिया गया है।

इसके अलावा फोन में स्टीरियो स्पीकर्स से लेकर ट्रिपल कैमरा सेटअप जैसे फीचर्स भी दिए गए हैं।वनप्लस एसीई 3 की कीमत बेस 12जीबी + 256जीबीवेरिएंट के लिए सीएनवाय 2,599 (लगभग 30,000 रुपये), 16जीबी + 512जीबी वेरिएंट के लिए सीएनवाय 2,999 (लगभग 33,000 रुपये) और 16जीबी + 1टीबी वेरिएंट के लिए सीएनवाय 3,499 (लगभग 40,000 रुपये) रखी गई है।

फोन को ब्लू और ब्लैक कलर जैसे ऑप्शन में उतारा गया है। डुअल-सिम (नैनो) सपोर्ट वाला ये स्मार्टफोन एंड्रॉयड 14 बेस्ड कलर ओएस 14.0 पर चलता है और इसमें 4,500 नीटस पीक ब्राइटनेस और 360 एचझेड टच सैंपलिंग रेट के साथ 6.78-इंच (1,264म2,780 पिक्सल) ओरियंटल अमोलेड एलटीपीओ डिस्प्ले दिया गया है। इस डिस्प्ले में 120 एचझेड का रिफ्रेश रेट भी दिया गया है। वनप्लस के इस लेटेस्ट स्मार्टफोन में 16 जीबी तक एलपीडीडीआर 5एक्स रैम और अड्रेनो 740जीपीयू के साथ ऑक्टा-कोर 4 एनएम स्नैपड्रेगन 8 जन 2 प्रोसेसर मौजूद है। कनेक्टिविटी के लिहाज से फोन में 5जी, 4जी एलटीई, वायफाय 7, ब्ल्यूटूथ 5.3, बैडोयू, ग्लोनास, गालियू, जीपीएस और एनएफसीका सपोर्ट मौजूद है।

फोन में डोबी एटमॉस सपोर्ट के साथ स्टीरियो स्पीकर्स भी दिए गए हैं। वनप्लस एसीई 3 की बैटरी 5,500 एमएएच की है और यहां 100डब्ल्यू सुपर वॉक फास्ट चार्जिंग सपोर्ट दिया गया है। इससे फोन 27 मिनट में ही 0 से 100 प्रतिशत तक चार्ज हो जाएगा।फोटोग्राफी के लिए इसके रियर में 50एमपी प्राइमरी कैमरा, 8एमपी अल्ट्रा-वाइड एंगल कैमरा और 2एमपी मैक्रो कैमरा दिया गया है।

सेल्फी और वीडियो चैटिंग के लिए इसमें 16 एमपी का कैमरा फ्रंट में मौजूद है।

नए साल लॉन्च होगी 5 धांसू बाइक

-बस थोडा करना होगा इंतजार

नई दिल्ली ।

साल 2023 में ऑटो मैन्यूफैक्चरिंग कंपनियों ने शानदार प्रदर्शन किया और सेल्स में भी इजाफा देखने को मिला। बीते साल में कई कंपनियों की कई शानदार बाइक लॉन्च हुईं थी होंडा एनएक्स500 भी इस साल लॉन्च होगी। उम्मीद है कि जुलाई 2024 में इस बाइक को कंपनी बाजार में उतार सकती है। इसका मुकाबला मोटो मोरिनी एक्स-केप, सुजुकी वी-स्ट्रॉम 650 एक्सटी और होंडा एक्सएल750 से होगा। कंपनी की इस बाइक से ईआईसीएमए 2023 में पेश किया था। इस बाइक में अपग्रेटेड लुक, टीएफटी इंस्ट्रूमेंट कंसोल, ट्रैक्शन कंट्रोल और पावरिंग जैसे फीचर्स मिल सकते हैं। इसमें 471 सीसी का ट्विन लिक्विड कूल्ड इंजन मिलेगा। हीरो मोटोकॉर्प भारत में 22 जनवरी को अपनी सबसे पॉवरफुल बाइक हीरो 440सीसी लॉन्च करने जा रही है। हीरो की यह बाइक 440सीसी इंजन से लैस होगी। कंपनी इस बाइक के लॉन्च के साथ ही भारत में बिग इंजन बाइक्स बनाने वाली कंपनियों में शामिल हो जाएगी। यह बाइक रेट्रो-रोडस्टर डिजाइन में पेश हो सकती है। यह बाइक कुछ उसी तरह होगी जिस डिजाइन में हार्ले-डेविडसन एक्स440 को लॉन्च किया गया था। (तस्वीर में दिख रही बाइक हार्ले-डेविडसन 4403 है) साल 2023 के अंत में अप्रीलिया ने भारतीय बाजार में अप्रिला आरएस457 को लॉन्च किया था। इसकी कीमत 4 लाख से ऊपर है। बाइक का नाम है अप्रिला टयूनो 457। वैसे माना जा रहा है इस बाइक की कीमत अप्रिला आरएस457 से कम ही होगी। 457 सीसी लिक्विड-कूल्ड, ट्विन-सिलेंडर इंजन से आएगी, जो आरएस 457 पर 47.6 बीएचपी और 43.5 एनएम पीक टॉर्क के लिए ट्यून किया गया है। इसे क्विकशिफ्टर, ट्रैक्शन कंट्रोल, राइड मोड और एक डिजिटल कंसोल मिलेगा। इस लिस्ट में आखिरी बाइक है केटीएम 390 एडवेंचर। ये बाइक साल के मध्य तक लॉन्च हो सकती है। नई बाइक नए कलर कॉम्बिनेशन के साथ आ सकते हैं। इस नई बाइक अनुमानित कीमत 4 लाख रुपए के आसपास हो सकती है। कंपनी ने रॉयल इनफील्ड शॉटगन 650 की झलक पिछले साल गोवा में हुए मोटोवेर्स 2023 इवेंट में दिखाई थी। तब कंपनी ने कहा था कि यह बाइक शुरुआत में केवल 25 लोगों को ही दी जाएगी। आम ग्राहकों के लिए भी यह बाइक इस साल उपलब्ध हो जाएगी।

नोएडा फिल्म सिटी विकसित करने चार कंपनियों ने लगाई बोली

नई दिल्ली ।

यमुना विकास प्राधिकरण क्षेत्र में प्रस्तावित नोएडा फिल्म सिटी को विकसित करने के लिए टी-सीरीज के स्वामित्व वाली सुपर कैसेट्स इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड सहित चार कंपनियों ने बोली लगाई है। यमुना विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉक्टर अरुण वीर सिंह ने यह जानकारी दी। उन्होंने भरोसा जताया कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की इस महात्वाकांक्षी परियोजना को इसी साल धरातल पर उतार दिया जाएगा। सिंह ने कहा कि फिल्म सिटी की तकनीकी बोली की प्रक्रिया शुक्रवार को शुरू की गई। इसे विकसित करने के लिए चार कंपनियां आगे आई हैं। इस परियोजना में सुपर सोनिक टेक्न बिल्ड प्राइवेट लिमिटेड (मैडॉक फिल्म्स केप ऑफ गुड फिल्म्स एलएलपी और अन्य), मैसर्स बेव्यू प्रोजेक्ट्स एलएलपी बोनी कपूर और अन्य, मैसर्स सुपर कैसेट्स इंडस्टरीज प्राइवेट लिमिटेड (टी-सीरीज) और लायंस फिल्म्स प्राइवेट लिमिटेड केसी बोकाडिया एवं अन्य ने रुचि दिखाई है। उन्होंने बताया कि यमुना विकास प्राधिकरण क्षेत्र के सेक्टर 21 में एक हजार एकड़ में विकसित होने वाली इंटरनेशनल फिल्म सिटी परियोजना की विकासकर्ता कंपनी की तलाश के लिए वैश्विक निविदा निकाली गई थी। फिल्म सिटी के प्रथम चरण में 230 एकड़ भूमि को विकसित किया जाना है। इसके बाद अन्य चरणों पर कार्य किया जाएगा। यहां होटल, प्लाजा एवं मॉल बनाए जाएंगे जबकि 20 प्रतिशत भूमि को हरियाली के लिए आरक्षित किया गया है।

यूक्रेन और रूस में इंटरनेट सेवाएं सबसे सस्ती

यएई, सऊदी अरब और अमेरिका में है सबसे महंगा

नई दिल्ली ।

भारत में इंटरनेट सेवाएं पिछले कुछ साल में सस्ती हुई हैं पर अभी भी ये सबसे कम नहीं कहीं जा सकती हैं। सबसे सस्ती इंटरनेट सेवाएं पिछले डेढ़ साल से युद्ध लड़ रहे यूक्रेन और रूस में मिल रही हैं। वहीं सस्ती इंटरनेट सेवा के रुप में भारत तीसरे नंबर पर है। यूक्रेन में एक महीने इंटरनेट सेवाएं लेने के लिए आपको 5.86 डॉलर चुकाने पड़ते हैं जबकि रूस में इसकी कीमत छह डॉलर है। वहीं भारत में 60 एमबीपीएस या उससे अधिक स्पीड वाली इंटरनेट सर्विस के लिए आपको हर महीने आठ डॉलर खर्च करने पड़ते हैं। दूसरी ओर दुनिया में सबसे महंगा इंटरनेट यूएई में है। यहां आपको एक महीने इंटरनेट की सेवाएं लेने के लिए 102.18 डॉलर चुकाने होते हैं। इसके अलावा सऊदी अरब, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, नॉर्वे, जर्मनी और साउथ अफ्रीका में भी इंटरनेट सेवाएं काफी महंगी हैं। सऊदी अरब में इसके लिए आपको 72.63 डॉलर खर्च होंगे। वहीं अमेरिका में इसकी कीमत 74.12 डॉलर, कनाडा में 65.35 डॉलर, ऑस्ट्रेलिया में 59.42 डॉलर, नॉर्वे में 54.78 डॉलर, जर्मनी में 51.78 डॉलर, साउथ अफ्रीका में 41.14 डॉलर, यूके में 38.38 डॉलर, वेनेजुएला में 37.77 डॉलर, स्पेन में 35.14 डॉलर।

यूक्रेन, रूस और भारत के बाद सबसे सस्ता इंटरनेट रोमानिया में है। वहां एक महीने इंटरनेट सेवाओं का आनंद लेने के लिए आपको 9.17 डॉलर देने होंगे। वियतनाम में हर महीने इंटरनेट शुल्क 9.78 डॉलर, तुर्की में 9.85 डॉलर, नेपाल में 10.01 डॉलर, ईरान में 10.34 डॉलर, बेलारूस में 10.49 डॉलर और मिस्र में 10.88 डॉलर है। श्रीलंका में महीनेभर इंटरनेट सेवा के लिए आपके 12.12 डॉलर, चीन में 12.39 डॉलर, कजाकस्तान में 12.43 डॉलर, बुलगारिया मे 13.12 डॉलर और पाकिस्तान में 14.68 डॉलर देने होंगे। अर्जेंटीना में इसके लिए 18.59 डॉलर और बांग्लादेश में 18.90 डॉलर चुकाने होंगे।

चीन ने अमेरिका की पांच रक्षा कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए

बीजिंग ।

चीन ने ताइवान को हथियार बेचने और चीनी कंपनियों तथा नागरिकों पर प्रतिबंध लगाए जाने के जवाब में अमेरिका की रक्षा से जुड़ी पांच कंपनियों पर रोक लगा दी है। विदेश मंत्रालय ने ऑनलाइन जारी किए एक बयान में कहा कि इन प्रतिबंधों से चीन में इन कंपनियों की संपत्ति कुर्क हो जाएगी और चीन में स्थित संगठन और लोगों के उनके साथ कारोबार करने पर मनाही होगी। जिन कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए गए हैं उनमें बीएई सिस्टम्स लैंड एंड आर्मामेंट, एलियंट टेकसिस्टम्स ऑपरेशन, एयरोविरोनमेंट वियासैट एंड डेटा लिंक सॉल्यूशंस शामिल हैं। विदेश मंत्रालय ने कहा कि अमेरिका के कदमों ने चीन की संप्रभुत्ता और सुरक्षा हितों को नुकसान पहुंचाया है, ताइवान जलडमरूमध्य में शांति एवं स्थिरता को कमजोर किया है और चीनी कंपनियों तथा नागरिकों के अधिकारों व हितों का उल्लंघन किया है। मंत्रालय ने कहा कि चीन सरकार राष्ट्रीय संप्रभुत्ता, सुरक्षा और क्षेत्रीय अखंडता की सुरक्षा और चीनी कंपनियों तथा नागरिकों के कानूनी अधिकारों और हितों की रक्षा के हमारे संकल्प पर अडिग है।

स्लाविया और कुशाक मॉडल की कीमतें बढाई

-नए साल ज्यादातर वाहन निर्माताओं ने बढाई कीमतें

नई दिल्ली । अधिकांश वाहन निर्माताओं ने भारत में जनवरी 2024 में कीमतों में बढ़ोतरी की घोषणा की। स्कोडा ऑटो इंडिया ने स्लाविया और कुशाक मॉडल की कीमतें बढ़ा दी हैं। स्कोडा स्लाविया, जो पहले 10.89 लाख रुपये की शुरुआती कीमत पर उपलब्ध थी, अब 11.53 लाख रुपये से शुरू होती है और 19.20 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) तक जाती है। वैरिएंट के आधार पर, स्लाविया की कीमत में 14,000 रुपये से लेकर 64,000 रुपये तक की बढ़ोतरी हुई है। स्कोडा कुशाक, पहले 10.89 लाख रुपये की शुरुआती कीमत पर उपलब्ध थी, जिसकी कीमत में 1 लाख रुपये बढ़ा दी गई है। नई कीमत 11.89 लाख रुपये से लेकर 19.79 लाख रुपये तक जाती है। स्लाविया और कुशाक के दोनों एंट्री-लेवल वेरिएंट की कीमतों में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी हुई है। हालाँकि, दोनों मॉडलों के मैट और एलिगेंस एडिशन की कीमतें समान हैं। कीमत में वृध्दि के अलावा इसके फीचर्स और मकैनिकल पार्टस में कोई बदलान नहीं हुए हैं। जानकारी के लिए बता दें कि स्कोडा कुशाक और स्लाविया दोनों को दो पावरट्रेन ऑप्शन के साथ पेश किया गया है- एक 1.0-लीटर और एक 1.5-लीटर पेट्रोल इंजन। 1.0-लीटर इंजन 114 बीएचपी और 178 एनएम टॉर्क पैदा करता है, जबकि 1.5-लीटर इंजन 148 बीएचपी और 250 एनएम टॉर्क पैदा करता है। मालूम हो कि टोयोटा के बाद अब स्कोडा ने भी अपने मॉडल्स की कीमतों में बढ़ोतरी का ऐलान कर दिया है। कीमत वृध्दि के पीछे कंपनी ने मुद्रास्फीति और बढ़ती इनपुट लागत का हवाला दिया है।

जनवरी के पहले सप्ताह में एफपीआई ने बाजार में किया 4,800 करोड़ का निवेश

नई दिल्ली । देश की मजबूत आर्थिक बुनियाद को लेकर आशान्वित विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने जनवरी के पहले सप्ताह में शेयर बाजारों में लगभग 4,800 करोड़ रुपये का निवेश किया है। डिपॉजिटरी के आंकड़ों के अनुसार समीक्षाधीन अवधि में एफपीआई ने ऋण या बांड बाजार में भी 4,000 करोड़ रुपये डाले हैं। बाजार विशेषज्ञों ने कहा है कि वर्ष 2024 में अमेरिका में ब्याज दरों में लंबे समय तक गिरावट की उम्मीद है, जिससे एफपीआई अपनी खरीदारी बढ़ा सकते हैं। विशेषकर आम चुनावों से पहले नए साल के शुरुआती महीनों में उनका निवेश बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि इसके अलावा 2024 में ऋण बाजार में भी एफपीआई का प्रवाह अच्छा रह सकता है। आंकड़ों के मुताबिक विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने इस महीने पांच जनवरी तक भारतीय शेयरों में 4,773 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इससे पहले दिसंबर में उन्होंने शेयर बाजार में 66,134 करोड़ रुपये और नवंबर में 9,000 करोड़ रुपये निवेश किया था। उन्होंने कहा कि भारत के घरेलू निवेशकों का निरंतर प्रवाह, चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के अच्छे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़े, कंपनियों के मजबूत तिमाही नतीजे और बैंकों की अच्छी सेहत विदेशी निवेशकों को भारतीय बाजार की तरफ आकर्षित कर रही है। कुल मिलाकर बीते साल 2023 में एफपीआई ने भारतीय बाजारों में 2.4 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया है। इसमें से 1.71 लाख करोड़ रुपये का निवेश शेयरों में 68,663 करोड़ रुपये का ऋण या बांड बाजार में रहा है।

कंपनियों के तिमाही परिणाम, वैश्विक रुख तय करेंगे शेयर बाजार की चाल: विश्लेषक

-कच्चे तेल के दाम और रुपए-डॉलर का उतार-चढ़ाव भी बाजार की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेंगे

नई दिल्ली ।

इस सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों की दिशा सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और इन्फोसिस के तिमाही पे रिणामों तथा वैश्विक रुख से तय होगी। विश्लेषकों का कहना है कि इसके अलावा वैश्विक स्तर पर ब्रेंट कच्चे तेल के दाम, रुपये-डॉलर का उतार-चढ़ाव और विदेशी निवेशकों की गतिविधियां भी बाजार की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेंगी। बाजार विशेषज्ञों ने कहा` कि घरेलू मोर्चे पर सभी की नजरें कंपनियों के चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही के पे रिणामों पर रहेगी। बाजार भागीदार डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल और कच्चे तेल की कीमतों पर भी नजर रखेंगे। उन्होंने कहा कि विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) और घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) के निवेश का रुख भी बाजार के लिए महत्वपूर्ण रहेगा। इन्फोसिस और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज के तिमाही नतीजों की घोषणा गुरुवार को होगी। वहीं एचसीएल टेक्नोलॉजीज और विप्रो के नतीजे शुक्रवार को आएंगे। तीसरी तिमाही के नतीजों का सीजन जनवरी के दूसरे सप्ताह से शुरू होगा। यह शेयर बाजार को दिशा देने का एक बड़ा कारक होगा। वृहद आर्थिक मोर्चे पर दिसंबर के मुद्रास्फीति के आंकड़े और नवंबर के औद्योगिक उत्पादन (आईआईपी) के आंकड़े शुक्रवार को बाजार बंद होने के बाद आएंगे। बाजार के जानकारों के मुताबिक बाजार घरेलू वैश्विक वृहद आर्थिक आंकड़ों, वैश्विक बॉन्ड प्रतिफल, कच्चे तेल के भंडार, डॉलर सूचकांक के उतार-चढ़ाव और एफआईआई तथा डीआईआई की निवेश गतिविधियों पर प्रतिक्रिया देगा। उन्होंने कहा` कि अमेरिकी के मुद्रास्फीति और बेरोजगारी दावे के आंकड़े, चीन का महंगाई का आंकड़ा और ब्रिटेन का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर का आंकड़ा भी बाजार की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगा। उनका कहना है` कि बाजार आगामी सप्ताह तिमाही नतीजों के सीजन से संकेत लेगा, जिसकी शुरुआत 11 जनवरी को टीसीएस और इन्फोसिस के साथ होगी। इसके अलावा सप्ताह के दौरान एचसीएल टेक, विप्रो और एचडीएफसी लाइफ जैसी कुछ अन्य कंपनियों के तिमाही नतीजे भी आएंगे।

यूनिकॉमर्स ने आईपीओ के लिए सेबी में मसौदा दस्तावेज जमा किए

नई दिल्ली । ई-कॉमर्स पर केंद्रित सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) फर्म यूनिकॉमर्स ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के जरिये कोष जुटाने के लिए बाजार नियामक सेबी के समक्ष शुरुआती दस्तावेज जमा कराए हैं। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के समक्ष दाखिल मसौदा दस्तावेजों के मुताबिक यह निर्गम पूरी तरह से बिक्री पेशकश (ओएफएस) होगा, जिसमें शेयरधारकों के पास मौजूद कुल 2.98 करोड़ इक्विटी शेयर शामिल होंगे। ओएफएस के तहत जापान के सॉफ्टबैंक की सहयोगी कंपनी एसबी इन्वेस्टमेंट होल्डिंग्स (यूके) लिमिटेड 1.61 करोड़ शेयर बेचेगी। इसके अलावा प्रवर्तक ऐसवेक्टर लिमिटेड 1.14 करोड़ शेयर बेचेगी और बी2 कैपिटल पार्टनर्स 22 लाख शेयरों की बिक्री करेगी। आईपीओ के पूरी तरह से ओएफएस आधारित होने से इससे होने वाली पूरी आय विक्रेता शेयरधारकों को जाएगी और कंपनी को कुछ नहीं मिलेगा।

लग्जरी कार ऑडी खरीदना चाहते हैं तो करें जल्दी

-कंपनी जल्द कीमतों में करने जा रही है इजाफा

नई दिल्ली ।

अगर आप लग्जरी कार ऑडी खरीदने का सपना रखते हैं तो जल्दी करें क्योंकि कंपनी जल्द कीमतों में इजाफा करने जा रही है। पिछले साल 2023 में बिक्री में वृद्धि की मुख्य वजह क्यू 3 स्पोर्टबैक, क्यू 8 ई-ट्रॉन और क्यू 8 स्पोर्टबैक ई-ट्रॉन को बाजार में पेश किया जाना, साथ ही ए 4, ए 6 तथा क्यू 5 की निरंतर मांग रही।

इसके अलावा, क्यू7, क्यू8, ए8 एल, एस5 स्पोर्टबैक, आरएस5 स्पोर्टबैक, आरएस क्यू8, ई-ट्रॉन जीटी और आरएस ई-ट्रॉन जीटी जैसे टॉप-एंड मॉडल की मजबूत मांग बनी रही। ऑडी इंडिया के प्रमुख बलबीर सिंह ढिल्लों ने कहा, ''2023 हमारे लिए एक और सफल वर्ष रहा। हमारे विभिन्न खंड में मजबूत मांग बनी हुई है। हमें विश्वास है कि यह वृद्धि 2024 में भी जारी रहेगी।'' वहीं, स्वीडिश कार निर्माता वोल्वो कार्स की कैलेंडर वर्ष 2023 में भारत में कुल बिक्री 31 प्रतिशत बढ़कर 2,423 इकाई हो गई। कंपनी की ओर से जारी एक बयान के अनुसार, वोल्वो कार इंडिया ने 2022 कैलेंडर वर्ष में घरेलू बाजार में 1,851 कार की बिक्री की थी।

बयान के अनुसार, ऑल-इलेक्ट्रिक एक्ससी40 रिचार्ज ने असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन किया। इस अवधि में इसकी 510 इकाइयां बेची गईं। वहीं एक्ससी60 की सबसे अधिक 921 इकाइयों की बिक्री हुई। वॉल्वो कार इंडिया की प्रबंध निदेशक ज्योति मल्होत्रा ने कहा, ''2023 वृद्धि की दृष्टि से प्रभावशाली रहा। 2022 की तुलना में 31 प्रतिशत की वृद्धि उपभोक्ताओं के विश्वास को दर्शाती है।'' बता दें कि भारत में लग्जरी कारों की डिमांड में काफी बढ़ोतरी देखी जा रही है। जर्मनी की लक्जरी कार निर्माता कंपनी ऑडी की 2023 में भारत में खुदरा बिक्री सालाना आधार पर 89 प्रतिशत बढ़कर 7,931 इकाई रही। कंपनी ने 2022 में 4,187 इकाइयों की बिक्री की थी।

ज्योति सीएनसी ऑटोमेशन का आईपीओ 9 जनवरी को खुलेगा

नई दिल्ली । ज्योति सीएनसी ऑटोमेशन का आईपीओ 9 जनवरी मंगलवार को खुल रहा है। यह साल 2024 का पहला आईपीओ है। गुजरात बेस्ड यह कंपनी आईपीओ के जरिए 1000 करोड़ रुपये जुटाने की कोशिश कर रही है। इसमें आप 11 जनवरी तक बोली लगा सकते हैं। कंपनी ने शेयरों के अलॉटमेंट के लिए 12 जनवरी की तारीख तय की है। इसके अलावा असफल निवेशकों को उनके पैसे 15 जनवरी को रिफंड कर दिए जाएंगे। वहीं सफल निवेशकों को डीमैट खाते में शेयरों 15 जनवरी को ट्रांसफर कर दिए जाएंगे। जानकारी के मुताबिक शेयरों की लिस्टिंग 16 जनवरी को होगी। शेयर बीएसई और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट होंगे। कंपनी ने आईपीओ से पहले अपने प्रति शेयर के प्राइस बैंड का भी ऐलान कर दिया है। ज्योति आईपीओ का प्राइस बैंड 315 से 331 रुपये प्रति शेयर के बीच तय किया गया है। इस आईपीओ में कंपनी ने निवेशकों के लिए 45 शेयरों का एक लॉट तय किया है। ऐसे खुदरा निवेशक कम से कम एक लॉट और अधिकतम 13 लॉट खरीद सकते हैं। ऐसे शेयरों में कम से कम 14,895 रुपये और अधिकतम 1,93,635 रुपये की बोली लगाई जा सकती है। इस आईपीओ में हाई नेट इंडिविजुअल के लिए 15 फीसदी, क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स सबसे ज्यादा 75 फीसदी और खुदरा निवेशकों के लिए 10 फीसदी रिजर्व कर दिया गया है.

आरएफएल मनी लां ड्रिंग मामले में ईडी की नौ जगहों पर रेड

नई दिल्ली । आरएफएल मनी लॉन्ड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने एक साथ कई जगहों की तलाशी ली है, जिनमें रेलिगेयर फिनवेस्ट लिमिटेड और आरएचसी होल्डिंग्स के दफ्तर भी शामिल हैं। ईडी ने यह कार्रवाई शुक्रवार को देर शाम की। ईडी ने यह एक्शन 2000 करोड़ रुपये से ज्यादा के आरएफएल (रेलिगेयर फिनवेस्ट लिमिटेड) मनी लॉन्ड्रिंग मामले में की है। रिपोर्ट के अनुसार, ईडी ने एक साथ नौ जगहों की तलाशी ली। ईडी की इस कार्रवाई में कई दस्तावेज मिले और जांच एजेंसी को मनी लॉन्ड्रिंग से जुड़े सबूत भी हाथ लगे। ईडी की इस कार्रवाई के दौरान यह भी पता लगा कि मनी लॉन्ड्रिंग के पैसों का किस तरह से इस्तेमाल किया गया। वहीं दूसरी ओर रेलिगेयर का कहना है कि ईडी की यह कार्रवाई खुद कंपनी के द्वारा की गई शिकायत के बाद हुई है। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि रेलिगेयर फिनवेस्ट लिमिटेड के मौजूदा प्रबंधन ने कॉरपोरेट लोन बुक की चल रही जांच के संबंध में ईडी के पास एक शिकायत दर्ज की थी, ताकि जांच की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ सके. उसके आधार पर ईडी ने यह कार्रवाई की। गौरतलब है कि रेलिगेयर के पूर्व प्रवर्तकों मालविंदर मोहन सिंह, शिविंदर मोहन सिंह और उनके सहयोगियों के ऊपर कंपनी के फंड का हेर-फेर करने का आरोप है। इसी संबंध में ईडी की जांच चल रही है।

यह रहस्य

भगवान शिव की शक्ति के ओज मंडल तक ले जाता है

भगवान शिव जी की अर्धांगिनी पार्वती जी को ही शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री आदि नामों से जाना जाता है। आदि शक्ति मां दुर्गा का ध्यान करने वाले के जीवन में कभी शोक और दुख नहीं आता। मां का केवल एक रूप है, अनेक नहीं इस रहस्य का ज्ञात होने से जातक भगवान शिव की शक्ति के ओज मंडल में शामिल हो जाता है।

संपूर्ण संसार की उत्पत्ति के पीछे आदि शक्ति मां जगत जननी ही मूल तत्व हैं और जगत माता के रूप में उनकी उपासना की जाती है। शक्ति सृजन और नियंत्रण की पारलौकिक शक्ति है। पुराणों के मतानुसार शिव भी शक्ति के अभाव में शव या निष्क्रिय बताएं गए हैं। मनुष्य की विभिन्न प्रकार की शक्तियों को प्राप्त करने की अनंत इच्छा ने शक्ति की उपासना को व्यापक आयाम दिया है। यहां प्रस्तुत है माता के अनेकों रूपों का वर्णन। इन्होंने ने अपने योग्य पुरूषों का निर्माण किया जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश कहे जाते हैं।

माता पार्वती, उमा, महेश्वरी, दुर्गा, कालिका, शिवा, महिसासुरमर्दिनी, सती, कात्यायनी, अम्बिका, भवानी, अम्बा, गौरी, कल्याणी, विंध्यवासिनी, चामुन्डी, वाराही, भैरवी, काली, ज्वालामुखी, बगलामुखी, धूम्रेश्वरी, वैष्णोदेवी, जगधात्री, जगदम्बिके, श्री, जगन्मयी, परमेश्वरी, त्रिपुरसुन्दरी, जगात्सारा, जगादान्द्कारिणी, जगाद्विघंदासिनी, भावंता, साध्वी, दुख्दारिर्द्यनाशिनी, चतुर्वर्ग्प्रदा, विधात्री, पुर्णेदुवदना, निलावाणी, पार्वती,सर्वमंगला, सर्वसम्पत्प्रदा, शिवपूज्या, शिवप्रिता, सर्वविध्यामयी, कोमलांगी, विधात्री, नीलमेघवर्णा, विप्रचित्ता, मदोन्मत्ता, मातंगी, देवी खडगहस्ता, भयंकरी,पद्मा, कालरात्रि, शिवरुपिणी, स्वधा, स्वाहा, शारदेन्दुसुमनप्रभा, शरद्ज्योत्सना, मुक्त्केशी, नंदा, गायत्री, सावित्री, लक्ष्मी ,अलंकार, संयुक्ता, व्याघ्रचर्मावृत्ता, मध्या, महापरा, पवित्रा, परमा, महामाया, महोदया इत्यादी देवी भगवती के कई नाम हैं।

किस यज्ञ से

कौन सा फल प्राप्त होता है

यज्ञदानतप: कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम।।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण जोर देकर कहते हैं कि यज्ञ, दान और तप का कभी त्याग नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि वे मनीषियों की आत्मशुद्धि के साधन हैं। यज्ञ से ही ब्रह्माण्ड का पालन-पोषण होता है। त्याग ही यज्ञ है। मानवता की निःस्वार्थ सेवा रूपी अग्नि में अपने अहंकार की आहुति देना एक महान यज्ञ है। आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करना महानतम यज्ञ है। यह सभी यज्ञों का जन्मदाता है। प्रत्येक निःस्वार्थ कर्म यज्ञ है। ऐसे प्रतीक कर्म से आपका हृदय पवित्र होता है और आप आत्म-साक्षात्कार के महान लक्ष्य के निकट पहुंचते जाते हैं। दान अत्यंत आवश्यक है। केवल रुपया-पैसा देना दान नहीं है। किसी के लिए प्रार्थना करना भी दान है। किसी की सेवा करना दान है। दया और प्रेम करना दान है। किसी दूसरे के द्वारा पहुंचाई गई हानि को भूल जाना और क्षमा कर देना दान है। किसी दुखी व्यक्ति के साथ सहानुभूति भरे शब्द बोल देना दान है। हर कोई दान कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमतानुसार किसी-न-किसी रूप में दान करना चाहिए।

शरीर, मन एवं वाणी का संयम तप है। भगवान ने स्पष्ट रूप से कहा है कि शरीर को प्रताड़ित करना वास्तविक तपस्या नहीं है। अपनी इन्द्रियों को शम, दम और तितिक्षा के अभ्यास से नियंत्रित कीजिए। विचार और विवेक के अभ्यास से अपने मन को नियंत्रित कीजिए। मौन, मित-भाषण एवं मधुर-भाषण के अभ्यास से अपनी वाणी को नियंत्रित कीजिए। यही तप है। इन कर्मों का कभी त्याग नहीं करना चाहिए। आध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति को हमेशा दूसरों के हित के लिए कार्य करते रहना चाहिए, कभी अकर्मण्य नहीं होना चाहिए।

...इसलिए गणेश जी को

आदिपूज्य भी कहते हैं

गणेश शिवजी और पार्वती के पुत्र हैं। उनका वाहन मूषक है। गणों के स्वामी होने के कारण उनका एक नाम गणपति भी है। ज्योतिष में इनको केतु का देवता माना जाता है, और जो भी संसार के साधन हैं, उनके स्वामी श्री गणेशजी हैं। हाथी जैसा सिर होने के कारण उन्हें गजानन भी कहते हैं। गणेशजी का नाम हिन्दू शास्त्रो के अनुसार किसी भी कार्य के लिये पहले पूज्य है। इसलिए इन्हें आदिपूज्य भी कहते है। महाभारत लेखन में गणेश जी का अपना वर्चस्व है जो कि उनकी पूजा-अर्चना से बिल्कुल भिन्न है। महाभारत में ऐसा वर्णन आता है कि वेदव्यास जी ने हिमालय की तलहटी की एक पवित्र गुफा में तपस्या में संलग्न तथा ध्यान योग में स्थित होकर महाभारत की घटनाओं का आदि से अन्त तक स्मरण कर मन ही मन में महाभारत की रचना कर ली। परन्तु इसके पश्चात उनके सामने एक गंभीर समस्या आ खड़ी हुई कि इस काव्य के ज्ञान को सामान्य जन साधारण तक कैसे पहुंचाया जाये क्योंकि इसकी जटिलता और लम्बाई के कारण यह बहुत कठिन था कि कोई इसे बिना कोई गलती किए वैसा ही लिख दे जैसा कि वे बोलते जाएं। इसलिए ब्रह्मा जी के कहने पर व्यास गणेश जी के पास पहुंचे और उन्हें महाभारत को लिखने के लिए निवेदन किया। गणेश जी मान तो गए मगर उन्होंने महर्षि वेदव्यास जी से एक प्रण लिया कि वे अपना लेखन कार्य बीच में नहीं छोड़ेंगे। जहां उन्होंने मन्त्रोच्चारण बन्द किया वहीं पर वह अपनी लेखनी को विराम दे देंगे तथा पुन- वह लेखनी हाथ में नहीं लेंगे। गणेश जी चाहते थे कि व्यास जी का श्लोक वाचन धारा प्रवाह होना चाहिए तथा उसमें अवरोध का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यह प्रण कोई सामान्य प्रण नहीं था क्योंकि किसी भी श्लोक की रचना के लिए तो कुछ समय अवश्य लगता है। परन्तु व्यास जी तो अनेकों ग्रंथों के ज्ञाता और महान ज्ञानी थे। व्यासजी जानते थे कि यह शर्त बहुत कठनाईयां उत्पन्न कर सकती है अत: उन्होंने भी अपनी चतुरता से एक शर्त रखी कि कोई भी श्लोक लिखने से पहले गणेश जी को उसका का अर्थ समझना होगा। इस तरह व्यास जी बीच-बीच में कुछ कठिन श्लोकों को रच देते थे, तो जब गणेश उनके अर्थ पर विचार कर रहे होते उतने समय में ही व्यास जी कुछ और नये श्लोक रच देते। इस तरह ऋषि व्यास जी तथा गणेश जी ने मिलकर एक ऐसे ग्रन्थ का र्निमाण किया जिसमें एक लाख श्लोक हैं। सम्पूर्ण महाभारत 3 वर्षों के अन्तराल में लिखी गयी। जो यहां (महाभारत में) है वह आपको संसार में कहीं न कहीं अवश्य मिल जायेगा, जो यहां नहीं है वो संसार में आपको अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा।

ज्योतिष में इनको केतु का देवता माना जाता है, और जो भी संसार के साधन हैं, उनके स्वामी श्री गणेशजी हैं। हाथी जैसा सिर होने के कारण उन्हें गजानन भी कहते हैं। गणेशजी का नाम हिन्दू शास्त्रो के अनुसार किसी भी कार्य के लिये पहले पूज्य है। इसलिए इन्हें आदिपूज्य भी कहते है।

क्या वास्तव में

हर चीज में भगवान हैं

विश्व में भगवान के अलावा किसी का भी अस्तित्व नहीं है। यदि आप भगवान शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहते हैं तो आप ऊर्जा या बुद्धि कह सकते हैं। सृष्टि का मूल सारे अस्तित्व में विद्यमान है और वह सिर्फ एक है; सिर्फ एक सूर्य, परन्तु आप उसे किसी भी खिड़की से देख सकते हैं। इस दुनिया में कई पैगंबर आए और चले गए। वे सब एक खिड़की के जैसे थे। किसी भी खिड़की से आप उसी सूर्य, आकाश को देख सकते हैं। एक आकाश जो एक दीवार के पीछे है, वह एक खिड़की के पीछे भी है। भगवान हर किसी में है। वह कुत्ते, बिल्ली, पेड़-पत्ती और चींटियों में भी है। वह सृष्टि की हर चीज में है। खिड़की से आप उससे चूक ही नहीं सकते क्योंकि खिड़की बहुत पारदर्शी होती है। सारे शब्द जिनका हम प्रयोग करते हैं और जो वार्तालाप हम करते हैं, उसका उद्देश्य हमारे दिलों में प्रेम और मौन का सृजन करना होता है। यदि शब्द लोगों के मन में अशांति लाते हैं, तो उन शब्दों ने सचमुच अपने आप को पूरा नहीं किया है और वे अपने सही पथ पर नहीं है। जब मन शिकायत कर रहा होता है तो वह इस बात से सजग नहीं होता कि वह शिकायत कर रहा है। उससे सजग होना पहला कदम है, फिर आपके पास क्या है उसके प्रति सजग होना है। आपका दिल आभार से परिपूर्ण हो जाएगा। फिर सारी शिकायत गायब हो जाएगी और आप काफी सरल, स्वाभाविक, प्रेमपूर्ण और मुक्त हो जाएंगे।

मंगलवार को इस जाप से होते हैं कार्य सिद्ध

घर में शांति और अपने कार्यों के सफल संपादन के लिए श्री हनुमान जी की साधना बेहद जरूरी है। इनकी पूजा हमेशा पूर्व दिशा की ओर बैठकर करें। ताम्र पात्र में शुद्ध जल लेकर श्री राम-हनुमान जी का ध्यान करें। पूजा कक्ष में घास या ऊन के आसन पर मंगलवार या शनिवार को इन श्लोकों का कम से कम 51 या 101 बार जाप करें।

कार्य सिद्धि के लिए
दीनानुबंधि मेधानि
प्रेमाकब्धे रामवल्लभ।
यद्येवं मारूते वीर!
मेकभीष्टं देहि सश्रवरं।।
ऊँ हनुमते नम:
गंभीर संकट निवारण के लिए
त्वमस्मिन् कार्यनिर्वाहे प्रमाणं हरि सश्रम् ।
तस्य चिन्तयतो यत्नों दु:खक्षयकरो भवेत् ।।
इनके अलावा हनुमत सहस्त्रनाम के 108 या 1008 बार जाप करने से गंभीर बीमारियां नष्ट होती हैं और घर में खुशहाली तथा सम्पन्नता आती है।

जम्मू में सीजन की सबसे ठंडी रात, तापमान पहुंचा माइनस में

श्रीनगर। श्रीनगर और जम्मू दोनों शहरों में शनिवार-रविवार को इस सीजन की अब तक की सबसे ठंडी रात देखी गई। इस दौरान यहां का न्यूनतम तापमान क्रमश- शून्य से 5.6 और 3.4 डिग्री नीचे गिर गया। पहाड़ों से आने वाली ठंडी हवाओं के साथ तीव्र शुष्क शीत लहर ने कश्मीर में लोगों की तकलीफें बढ़ा दी हैं। मौसम विभाग के जानकारी दी है कि श्रीनगर में न्यूनतम तापमान माइनस 5.6, गुलमर्ग में माइनस 4.4 और पहलगाम में माइनस 6.5 रहा। लद्दाख क्षेत्र के लेह शहर में न्यूनतम तापमान माइनस 15.3 और कारगिल में माइनस 14.3 रहा। जम्मू शहर में न्यूनतम तापमान 3.4, कटरा में 6, बटोटे में 2.1, भद्रवाह में माइनस 0.2 और बनिहाल में माइनस 2.2 रहा। यहां पर कड़ाके की ठंड की 40 दिनों की लंबी अवधि जिसे चिल्लई कलां के नाम से जाना जाता है, 21 दिसंबर को शुरू हुई और 30 जनवरी को समाप्त होगी। गर्मियों के महीनों के दौरान पीने और सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी की स्थानीय लोगों की उम्मीदें चिल्लई कलां के शेष हिस्से पर बची हुई हैं। यदि चिल्लई कलां के शेष भाग के दौरान पर्याप्त बर्फबारी होती है, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा, अन्यथा आने वाली गर्मियों में स्थानीय लोगों के लिए पीने के पानी की मुश्किलें आएंगी।

मोस्ट वॉन्टेड को छुड़ा ले गई भीड़, हाथ जोड़ती रही बिहार की पुलिस

जहानाबाद। जहानाबाद शहर के फिदा हुसैन रोड पर शनिवार की शाम भीड़ ने मोस्ट वांटेड को पुलिस से छुड़ा लिया। इस दौरान उलटे पुलिस हाथ जोड़ती रह गई। यहां उस वक्त हंगामे के साथ अफरातफरी मच गई, जब गया पुलिसकर्मियों की एक टीम कांड के एक वांछित मोस्ट वांडेट अपराधी को गिरफ्तार करने जहानाबाद आई थी। गया डीआईयू की टीम में शामिल पुलिसकर्मियों ने वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया लेकिन अचानक कुछ लोगों की भीड़ उग्र हो गई और पुलिसकर्मियों के साथ हाथापाई और धक्का मुक्की कर वांछित को छुड़ा ले गई। सूचना पर पहुंची नगर थाना की पुलिस ने बाद में भीड़ में शामिल रहे एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है। उससे पूछताछ की जा रही है। बताया जा रहा है कि गया का मोस्ट वांटेड अपराधी श्याम करीम को पुलिस पकड़ने आयी थी। उसके खिलाफ डकैती व लूट सहित अन्य मामले दर्ज हैं। वह पिछले एक वर्षों से फरार चल रहा था। नगर थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर निखिल कुमार ने बताया कि इस संबंध में कार्रवाई की जा रही है। घटना के संबंध में पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार गया सिविल लाइन थाना के नगमतिया रोड के निवासी श्याम करीम नामक आपराधिक मामले के आरोपित वांछित व 50 हजार का इनामी अपराधी को गया डीआईयू की टीम तलाश कर रही थी। टावर लोकेशन के आधार पर वह जहानाबाद शहर के फिदा हुसैन रोड में मिला। वह यहां अपने एक संबंधी के आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आया था। इस दौरान सादा लिवास में आयी गया पुलिस कार्यक्रम स्थल पर पहुंच गयी वहीं स्थानीय थाने की पुलिस पीछे रह गयी है। हालांकि हमला होने के बाद नगर थाने की पुलिस ने लोगों को नियंत्रित किया लेकिन तब तक अपराधी मौके का फायदा उठाकर भाग गया। उसके कुछ निजी और अन्य लोग उग्र हो गए और पुलिसकर्मियों से भिड़ गए। पुलिस के हथियारों को भी झिड़क दिया। हाथापाई हुई और इस बीच वांछित को लोगों ने छुड़ा लिया। आरोपित भाग निकला। जब इसकी सूचना मिली तो वह घटनास्थल पर पहुंचे। मामले की तहकीकात में एक व्यक्ति को हिरासत में लिया गया है। उससे पूछताछ की जा रही है।

अवैध रूप से रह रहे 3 बांग्लादेशी नागरिकों को पालघर से किया गिरफ्तार

पालघर। अवैध रूप से रहने के आरोप में तीन बांग्लादेशी नागरिकों को महाराष्ट्र के पालघर से वसई थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मिली जानकारी के अनुसार इन तीनों के खिलाफ पासपोर्ट नियमों और विदेशी अधिनियम के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया है। रविवार को पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि महाराष्ट्र के पालघर जिले में कथित तौर पर अवैध रूप से भारत में रहने वाले तीन बांग्लादेशी की सूचना मिली थी। सूचना के बाद पुलिस टीम ने 4 जनवरी को वसई इलाके में तलाशी ली थी। इसी दौरान तीन बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार कर लिया। तीनों विदेशी नागरिकों की उम्र 23 से 45 साल की बताई जा रही है। वसई पुलिस थाने के अधिकारी ने बताया कि तीन बांग्लादेशी नागरिकों से पूछताछ के दौरान पता चला कि उनके पास भारत में रहने के लिए वैध दस्तावेज नहीं थे। उनके खिलाफ पासपोर्ट (भारत में प्रवेश) नियमों और विदेशी अधिनियम के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई की गई है।

भारत, अमेरिका, रूस और चीन जैसे सुपर पॉवर देशों की नजर बांग्लादेश के चुनाव पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में आज आम चुनाव होने जा रहे हैं। इसमें शेख हसीना ने रिकॉर्ड चौथी बार सत्ता में आने का दमखम लगा दिया है। वहीं भारत, अमेरिका, रूस और चीन जैसे सुपर पॉवर देशो की नजर बांग्लादेश के चुनाव पर टिकी हुई हैं। जबकि मुख्य विपक्षी पार्टी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) ने बांग्लादेश मे चुनाव के बायकॉट का बिगुल बजा रखा है। इस बीच हिंसा से जूझ रहे बांग्लादेश के इन चुनावों पर दुनियाभर की नजरें टिकी हैं। भारत और चीन ही नहीं बल्कि रूस से लेकर अमेरिका तक की दिलचस्पी बांग्लादेश के चुनाव में बनी हुई है। लेकिन बांग्लादेश के चुनाव में इन सुपरपावर देशों की इतनी दिलचस्पी की वजह तथा इन देशों के हितों को समझने की जरूरत है। युद्ध की जमीन से 1971 में जन्मे बांग्लादेश का 52 सालों का इतिहास है। संघर्षों की दहलीज पार कर इस मुल्क की अर्थव्यवस्था 400 अरब डॉलर को पार कर गई है। बांग्लादेश आज आर्थिक और भू-राजनीतिक रूप से ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां दुनिया के कई कद्दावर देश उसकी तरफ कदम बढ़ा रहे हैं। जब भारत अपने पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश की तरफ देखता है, तो इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि 1996 से 2001 तक और फिर 2009 से लगातार भारत को बांग्लादेश की सुरक्षा एजेंसियों से सहयोग मिला है।

बांग्लादेश की शेख हसीना सरकार ने अपने देश में भारत विरोधी गतिविधियों पर लगाम लगाने के प्रयास किए हैं। बांग्लादेश चुनाव के नतीजों का यकीनन भारत के साथ उसके संबंधों पर असर पड़ने वाला है। प्रधानमंत्री शेख हसीना की अगुवाई में 14 पार्टियों का गठबंधन विपक्षी दल बीएनपी और जमात-ए-इस्लामी के खिलाफ खड़ा है। इसे एक तरह से विचारों की जंग कहा जा सकता है। गौरतलब है कि बांग्लादेश की शेख हसीना सरकार को लंबे समय से भारत का समर्थन मिला है। इसकी वजह है कि शेख हसीना की अवामी लीग सरकार देश में चरमपंथी और कट्टरपंथी तत्वों पर लगाम लगाने में काफी हद तक कामयाब रही है।

एक बात जरूर गौरतलब है कि भारत भी अपने पूर्वोत्तर राज्यों की सुरक्षा संबंधी हितों के लिए बांग्लादेश पर भरोसा करता है। यही वजह है कि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में हिंसा और घुसपैठ करने वाले जिहादी संगठनों पर बांग्लादेश समय-समय पर चाबुक चलाता रहा है। भारत और बांग्लादेश के हित एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। एक तरफ जहां पूर्वोत्तर के राज्यों की सुरक्षा और जिहादी संगठनों पर नकेल कसने के लिए भारत को बांग्लादेश की जरूरत है, वहीं मोदी सरकार की लुक ईस्ट और एक्ट ईस्ट पॉलिसी के लिए भी बांग्लादेश बहुत जरूरी है। इन नीतियों में क्षेत्रीय कनेक्टिविटी, डिजिटिल इंटीग्रेशन, व्यापार, निवेश और एनर्जी कोलेबोरेशन शामिल हैं। भारत ने रक्षा आयात के लिए बांग्लादेश को 50 करोड़ डॉलर का ऋण भी दिया है।

वहीं अमेरिका की पैनी नजर भी बांग्लादेश के चुनाव पर है। अमेरिका अक्सर शेख हसीना सरकार पर भ्रष्टाचार और लोकतंत्र का गला घोंटने के गंभीर आरोप लगाते रहा है। अमेरिका मुख्य विपक्षी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी का लगातार समर्थन कर शेख हसीना सरकार को दबाता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ढाका में अमेरिकी दूतावास विपक्ष के लिए जमीन तलाशने में जुटा हुआ है। बांग्लादेश के अर्धसैनिक बल रैपिड एक्शन बटालियन ने कहा ?कि दिसंबर 2021 से ही अमेरिका एक तरह से शेख हसीना पर लगातार दबाव बना रहा है। इसी कड़ी में पिछले साल अमेरिका ने बांग्लादेश के आला अधिकारियों, नेताओं और न्यायपालिका से जुड़े लोगों के लिए वीजा पर प्रतिबंध लगा दिए थे। राष्ट्रपति बाइडेन ने 2021 और 2023 में डेमोक्रेसी समिट से बांग्लादेश को कथित तौर पर जानबूझकर बाहर भी रखा था।

शांतिपूर्ण, भयमुक्त माहौल बनाने सिद्दारमैया ने पुलिस को दिये निर्देश

बेंगलुरु । कर्नाटक के सीएम सिद्दारमैया ने बेंगलुरु सिटी पुलिस को कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करने और राज्य में शांतिपूर्ण और भयमुक्त माहौल बनाने का निर्देश दिया। सीएम ने बेंगलुरु में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि जब से हमारी सरकार सत्ता में आई है, बेंगलुरु में अपराध कम हो गया है। हालांकि अपराध को पूरी तरह ख़त्म नहीं किया जा सकता, लेकिन इसे कम किया जा सकता है। पुलिस को रोके जा सकने वाले अपराधों को प्राथमिकता देनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने पुलिस अधिकारियों से कहा कि सभी स्तरों पर पुलिस अधिकारियों को समाज की भलाई के लिए ड्रग माफिया को खत्म करने के लिए उचित निर्णय लेना चाहिए और इसे लागू करना चाहिए। जो लोग अकेले रहते हैं, उनकी पहचान की जानी चाहिए, उनकी सुरक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और पुलिस बीट सिस्टम को भी मजबूत किया जाना चाहिए। सीएम ने कहा कि शहर में 241 होयसला वाहनों के गश्ती दल को मजबूत किया जाना चाहिए और उन्हें अधिक जिम्मेदारी से काम करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए रियल एस्टेट के मुद्दों में शामिल होना सही नहीं है। इससे लोगों का पुलिस व्यवस्था पर से भरोसा उठ जाएगा। मौजूदा सरकार आपको कभी भी गैरकानूनी काम में शामिल होने के लिए नहीं कहेगी। मुख्यमंत्री ने पुलिस अधिकारियों से कहा, हम उन लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेंगे जो अवैध गतिविधियों में शामिल हैं। शहर में उपद्रव को खत्म किया जाना चाहिए और किसी को भी कानून हाथ में लेने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए।

अब भारत 90 के दशक के पहले वाला नहीं, शक्तिशाली बन चुका है : धनखड़

- उपराष्ट्रपति ने किया एक से श्रेष्ठ के 500वें केंद्र का शुभारंभ

हमीरपुर (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने हमीरपुर में एक से श्रेष्ठ के 500वें केंद्र का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति 5 हजार वर्ष से अ?धिक पुरानी है और हमारी पहचान भारतीयता की है। अब भारत 90 के दशक के पहले वाला नहीं बल्कि नया और शक्तिशाली भारत बन चुका है। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्री अनुराग ठाकुर द्वारा उनके संसदीय क्षेत्र हमीरपुर में चलाए जा रहे शैक्षणिक कार्यक्रम एक से श्रेष्ठ के 500वें केंद्र का 20 हजार से भी ज्यादा लोगों की उपस्थिति में भव्य शुभारंभ हुआ। इस विशेष अवसर पर मुख्यातिथि के तौर पर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल उपस्थित रहे। सीएम सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश में आम लोगों की सरकार है। जब गरीब, किसान व आम आदमी की सरकार आती है तो उसके मन में संवेदनशीलता होती है। हम भाजपा की तरह डमरू नहीं बजाते कि डबल इंजन की सरकार है। हम तो सिर्फ यह चाहते हैं कि आमजन ने

सेवा का जो मौका हमें दिया है, उस मौके को आम आदमी तक पहुंचाया जाना हमारी जिम्मेदारी है। इस दौरान बागवानी मंत्री जगत सिंह नेगी ने भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के हिमाचल दौरे पर तंज कसा कि चुनावों को देखते हुए जिस जोश के साथ भाजपा नेता हिमाचल आ रहे हैं, ऐसा जोश यदि भाजपा के नेता आपदा के समय दिखाते तो बात कुछ और होती।

उन्होंने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि प्रदेश इतनी बड़ी प्राकृतिक आपदा से गुजरा लेकिन केंद्र से कोई बड़ी मदद प्रदेश को नहीं मिली।नेता प्रतिपक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने कहा कि 22 जनवरी भारत के इतिहास का स्वर्णिम दिन है और इस दिन हर घर दीपावली मनाई जाएगी। उन्होंने कहा कि भगवान भारत की सांझी सांस्कृतिक विरासत हैं और हर भारतीय को 22 जनवरी का बेसब्री से इंतजार है। भगवान राम की अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा भारत के इतिहास का स्वर्णिम दिन होगा।

कांग्रेस के बड़े नेता जाएंगे अयोध्या, 15 जनवरी को करेंगे राम मंदिर में दर्शन

लखनऊ (एजेंसी)। कांग्रेस के बड़े नेताओं ने अयोध्या जाने का ऐलान किया है। ये नेता आगामी 15 जनवरी को राम मंदिर में दर्शन करने जाएंगे। जानकारी के अनुसार यूपी के सहारनपुर से शुरू हुई कांग्रेस की यूपी जोड़ो यात्रा के लखनऊ में समापन के बाद पार्टी के प्रदेश प्रभारी अविनाश पांडे ने यह निर्णय लिया। नेताओं और कार्यकर्ताओं संग बैठक में प्रदेश अध्यक्ष अजय राय समेत, पूर्व सांसद, विधायक और कई बड़े नेता मौजूद रहे। इस दौरान कांग्रेस नेताओं ने राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा से पहले ही अयोध्या जाने का अपना प्लान भी सामने रखा। बैठक में तय हुआ कि यूपी कांग्रेस के नेता 15 जनवरी को अयोध्या में रामलला के दर्शन करेंगे। यूपी प्रभारी अविनाश पांडे के साथ प्रदेश अध्यक्ष अजय राय समेत कुछ नेता अयोध्या जाएंगे। खरमास खत्म होने पर 15 जनवरी को ये सभी नेता राम लला के दर्शन करेंगे। दरअसल 15 जनवरी को सुबह 9.15 पर खरमास समाप्त हो रहा है। इसके बाद कार्यालय से राष्ट्रीय महासचिव, प्रभारी उत्तर प्रदेश अविनाश पांडे व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और पूर्व मंत्री अजय राय के नेतृत्व में कांग्रेस नेता अयोध्या के लिए निकलेंगे। अयोध्या पहुंचने के बाद सभी नेता सरयू नदी में स्नान करेंगे और फिर रामलला और हनुमान गढ़ी के दर्शन भी करेंगे।

गौरतलब है कि अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को होनी है। इसको लेकर राम नगरी में तैयारियां चल रही हैं। पीएम नरेंद्र मोदी इस कार्यक्रम में मुख्य आयोजक होंगे। वहीं राम मंदिर ट्रस्ट की ओर से सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, ममता बनर्जी समेत कई विपक्षी नेताओं को इस कार्यक्रम के लिए न्योता दिया गया है। राम मंदिर ट्रस्ट की ओर से कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और अधीर रंजन चौधरी को भी न्योता मिला है। अब तक कांग्रेस की ओर से यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि पार्टी के नेता अयोध्या में होने वाले समारोह में शामिल होंगे या नहीं। बिहार के सीएम नीतीश कुमार और पूर्व सीएम लालू यादव को भी कार्यक्रम में बुलाया गया है।

एक दिन में कोविड-19 के 774 नये मामले आए, 2 की हुई मौत

नई दिल्ली । केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया है कि देश में पिछले 24 घंटों में कोविड-19 के 774 नए मामले सामने आए हैं। वहीं दो मरीजों की मौत हुई है। ये मौतें तमिलनाडु और गुजारत में हुई हैं। वहीं शुक्रवार को 12 लोगों की मौत हुई थी। जिसमें केरल में पांच, कर्नाटक में चार, महाराष्ट्र में दो और उत्तर प्रदेश में एक व्यक्ति की मौत हुई थी। देश में नये मामले सामने आने के बाद कुल एक्टिव मामलों की संख्या 4,187 हो गई है। देश में जनवरी 2020 से अब तक कोरोना वायरस (कोविड-19) से संक्रमित मरीजों की कुल संख्या 4,50,17,378 तक पहुंच गई है। जबकि, नई मौतों के बाद देश में कोरोना से मरने वालों लोगों का आंकड़ा 5,33,387 हो गया है। बताया जा रहा है ?कि नया जेएन.1 सब-वैरिएंट ओमिक्रॉन सब-वैरिएंट का वंशज है जिसे बीए.2.86 या पिरोला के नाम से जाना जाता है। इसका केरल राज्य में पहला मामला आया है। भारतीय एसएआरएस-सीओवी-2 जीनोमिक्स कंसोर्टियम (आईएनएसएसीओजी) के अनुसार, केरल, कर्नाटक में जेएन.1 प्रकार के मामले देखे गए। जबकि, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, राजस्थान, तेलंगाना, ओडिशा और हरियाणा भी प्रभावित हुए। जानकार बताते हैं कि जेएन.1 वैरिएंट, नए मामलों या अस्पताल में भर्ती होने और मौतों में वृद्धि का कारण नहीं बन रहा है। इन राज्यों ने सामूहिक रूप से गुरुवार तक सब-वैरिएंट के 619 मामले दर्ज किए हैं, जिसमें कर्नाटक 199 मामलों के साथ आगे है। जबकि केरल 148 मामलों के साथ दूसरे स्थान पर है। आईएनएसएसीओजी के आंकड़ों से पता चला है कि दिसंबर 2023 में 239 और नवंबर 2023 में 24 कोविड-19 मामलों की पहचान जेएन.1 वैरिएंट की उपस्थिति से की गई थी। देश में कोरोना वायरस से ठीक होने वाले मरीजों की संख्या 4.4 करोड़ से ज्यादा पहुंच गई है, जो 98.81 प्रतिशत की राष्ट्रीय रिकवरी दर के बराबर है।

दिल्ली सरकार का फरवरी में आएगा बजट, तैयारी में जुटे सीएम केजरीवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार का वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए बजट फरवरी महीने में आने वाला है। इसके लिए सरकार ने तैयारियां शुरू कर दी है। बजट को लेकर सीएम अरविंद केजरीवाल ने मंत्रियों के साथ पहली बैठक की है। इस बैठक में उन्होंने दिल्ली की जनता की प्राथमिकताओं को लेकर मंत्रियों से विचार-विमर्श किया। सरकार का कहना है कि इस बार दिल्ली का बजट फरवरी माह के मध्य या अंत तक आ जाएगा। आगामी बजट में शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, सड़क और इंफ्रास्ट्रक्चर समेत अन्य प्रमुख मुद्दों पर विशेष फोकस किए जाने की उम्मीद है। सीएम अरविंद केजरीवाल ने सभी मंत्रियों को बजट की तैयारियां तेज करते हुए अपनी प्राथमिकताएं तय करने का निर्देश दिया है। अगले सप्ताह सीएम की अध्यक्षता में सभी मंत्रियों और अफसरों की बैठक होगी, जिसमें प्राथमिकताओं को अंतिम रूप दिया

जाएगा। इसके बाद बजट पर दिल्ली के सभी हितधारकों से भी सुझाव लेकर उन्हें शामिल भी किया जाएगा। दिल्ली की केजरीवाल सरकार का कहना है कि यह बजट दिल्ली की जनता को कई बड़ी सौगात देने वाला होगा। शनिवार को हुई बैठक में पानी, सड़क, शहरी विकास और विभिन्न विकास कार्यों पर भी चर्चा हुई। इन सभी पर आगामी वित्तीय वर्ष में क्या प्राथमिकताएं होंगी, यह तय किया गया। सीएम ने संबंधित मंत्री से इन कार्यों के लिए आगामी वित्तीय वर्ष में कितने बजट की जरूरत होगी, उस पर गहन विचार किया। उन्होंने सभी मंत्रियों को एक सप्ताह के अंदर अपने-अपने विभाग से जुड़ी प्राथमिकताएं तय करने को कहा है। जिसमें वो अपनी प्राथमिकताएं तय करते समय जनता को ध्यान में रखेंगे। साथ ही, सभी विधायकों से भी बजट पर सुझाव लिए जाएंगे। इन सभी से मिले सुझावों का विश्लेषण किया जाएगा।

लोकसभा चुनाव से पहले राहुल गांधी की न्याय यात्रा बन सकती है चुनौती

-सत्ता पक्ष के साथ विपक्ष के लिए भी हो सकती हैं मुश्किलें, यूपी में खास फोकस

लखनऊ (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस नेता और लोकसभा सांसद राहुल गांधी की न्याय यात्रा चुनौती बन सकती है। गौरतलब है कि राहुल एक बार फिर भारत न्याय यात्रा निकालने जा रहे हैं। यह यात्रा करीब 11 दिन यूपी में रहेगी। जानकारों का कहना है कि उनकी यह यात्रा सत्ता पक्ष के साथ विपक्ष के लिए भी चुनौती बन सकती है। राजनीतिक विश्लेषक बताते हैं कि इसके रूट प्लान से साफ है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी फिर से उत्तर प्रदेश की राजनीति पर फोकस कर रहे हैं। वे इसी बहाने अमेठी भी लौट रहे हैं। यात्रा के दौरान सत्ता पक्ष के साथ विपक्ष का भी ध्यान रहेगा कि राहुल गांधी का उत्तर और दक्षिण की राजनीति को लेकर जनता के बीच क्या स्टैंड है। इसके अलावा, अयोध्या में बने माहौल के बीच उन्हें सनातन पर भी अपना रुख स्पष्ट करना होगा। स्टालिन की पार्टी के गठबंधन की बात को भी

उन्हें सही साबित करना है। भारत जोड़ो न्याय यात्रा' का जो रूट मैप है, उसमें राहुल गांधी सबसे ज्यादा समय यूपी में गुजारेंगे।

मिली जानकारी के अनुसार यूपी में वह 11 दिन में 1,074 किलोमीटर की यात्रा तय करेंगे। इस दौरान 20 जिलों की 23 लोकसभा सीटों को छुएंगे। राहुल गांधी यूपी में चंदौली से प्रवेश करेंगे और उसके बाद प्रधानमंत्री मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी होते हुए अपने गढ़ अमेठी और रायबरेली पहुंचेंगे। भारत न्याय यात्रा जिन राज्यों से होकर गुजरेगी, वहां कांग्रेस और इंडिया के सहयोगियों से सीटों का तालमेल एक बड़ी चुनौती है। कांग्रेस और इंडिया के सहयोगी दलों में शामिल दलों के बीच सीटों का तालमेल एक बड़ा मुद्दा हैं। कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि पार्टी जिन सीटों पर चुनाव लड़ने की सोच रही उन्हीं 22 जिलों से राहुल गांधी की यात्रा गुजरेगी। इसी कारण कांग्रेस अपनी फोकस सीटों के रास्ते से राहुल गांधी को ले जाने का प्लान बनाया है।

इधर पूर्वांचल से लेकर अवध, रुहेलखंड से पश्चिमी यूपी और बृज क्षेत्र तक को मथने की रणनीति है। उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों में से कांग्रेस की प्रदेश इकाई कई सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती है। वहीं गठबंधन से बात करने के लिए बनी समिति ने करीब दो दर्जन सीटें छांटी हैं, जिन पर वह मजबूत दावा पेश करेगी। साथ में यह भी कहा है कि भाजपा को हराने के लिए दोनों दल पूरी तरह साथ आएंगे तभी बात बनेगी। लेकिन यह साथ केवल कहने के लिए नहीं होना चाहिए, बल्कि सीटों में उसे भी बड़ी हिस्सेदारी देनी पड़ेगी। कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता अंशू अवस्थी की मानें तो राहुल गांधी की पहले निकल चुकी भारत जोड़ो यात्रा ने पूरे देश में व्यापक असर डाला था। इस बार की भारत जोड़ो न्याय यात्रा उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा 11 दिन रहकर 1,074 किलोमीटर का सफर तय करेगी।

600 मिलियन डॉलर के मालिक आंखों में आंसू लिए जज के सामने कांपते रहे

-जेट एयरवेज के फाउंडर नरेश गोयल हुए नाउम्मीद, जेल में मरने की मांगी इजाजत

मुंबई। 538 करोड़ रुपये के केनरा बैंक धोखाधड़ी केस में आरोपी जेट एयरवेज के संस्थापक नरेश गोयल ने अदालत से अनुरोध किया- कि उन्हें जेजे अस्पताल न भेजा जाए, इसके बजाय जेल में ही मरने दिया जाए। गोयल ने कहा कि उन्होंने जीवन की हर उम्मीद खो दी है और ऐसी स्थिति में जीवित रहने से बेहतर है कि उन्हें मर जाना चाहिए। बता दें कि 2023 की रेटिंग में गोयल 600 मिलियन डॉलर के मालिक बताए जाते हैं, लेकिन जज के सामने आंसू लिए जीवन और मौत के बीच उम्मीद की किरण तलाशते नजर आए। जानकारी के अनुसार जेट एयरवेज के संस्थापक नरेश गोयल शनिवार को मुंबई की एक विशेष अदालत में पेशी के दौरान भावुक हो गए। गोयल ने हाथ जोड़कर अदालत से कहा कि उन्होंने जीवन की हर उम्मीद खो दी है और वह अपनी वर्तमान स्थिति में जीने की अपेक्षा जेल में मरना पसंद करेंगे। बता दें कि नरेश गोयल 538 करोड़ रुपये के केनरा बैंक धोखाधड़ी केस में आरोपी हैं। कोर्ट के रिकॉर्ड के अनुसार, सत्तर वर्षीय नरेश गोयल की आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने कोर्ट से कहा कि वह अपनी पत्नी अनीता को बहुत मिस करते हैं, जो कैंसर के एडवांस स्टेज में हैं। ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) ने कथित बैंक धोखाधड़ी के मामले में पिछले साल 1 सितंबर को गोयल को गिरफ्तार किया था। वह फिलहाल मुंबई की आर्थर रोड जेल में न्यायिक हिरासत में हैं। गोयल ने विशेष न्यायाधीश एम जी देशपांडे के समक्ष जमानत याचिका दायर की थी। उन्हें शनिवार को अदालत में पेश किया गया और कार्यवाही के दौरान गोयल ने कुछ मिनटों की व्यक्तिगत सुनवाई का अनुरोध किया, जिसे न्यायाधीश ने अनुमति दे दी। अदालत के रोजनामा (दैनिक सुनवाई का रिकॉर्ड) के अनुसार, नरेश गोयल ने हाथ जोड़कर कहा कि उनका स्वास्थ्य बहुत खराब है। इस दौरान वह लगातार कांप रहे थे।

सात सुरक्षा एजेंसियों ने लगाये अयोध्या में कैंप, कमांडो करेंगे मंदिर की निगरानी

- -प्राण प्रतिष्ठा के दिन चप्पे-चप्पे पर तैनात होंगे 30,000 पु ?लिस के जवान

अयोध्या (एजेंसी)। रामलला मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के दौरान 30,000 पुलिस के जवान चप्पे-चप्पे पर तैनात रहेंगे। इसके लिए अयोध्या में सात सुरक्षा एजेंसियों ने अपना डेरा जमा लिया है। महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा की सुरक्षा उत्तर प्रदेश विशेष सुरक्षा बल की छठवीं वाहिनी को सौंपी गई है। ये जवान आतंकी खतरों से निपटने की क्षमता रखते हैं। यहां तीन इंस्पेक्टर, 55 उप निरीक्षक, 22 मुख्य आरक्षी और 194 आरक्षी लगाए गए हैं। 22 जनवरी को लेकर सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हैं। स्टेट एजेंसियों के अलावा केंद्र की एजेंसियों ने भी जिले में कैंप किया है। 15 टीमें विभिन्न इलाकों में छानबीन करने में जुटी हैं। वहीं, श्रीराम मंदिर की सुरक्षा का जिम्मा कमांडो के हवाले किया गया है। रामनगरी में लगभग 30,000 जवान तैनात किए जा रहे हैं। प्राण प्रतिष्ठा को लेकर जिले में आईबी, एलआईयू, एटीएस, एसटीएफ, मिलिट्री इंटेलिजेंस समेत सात सुरक्षा एजेंसियों ने पीएम के आगमन से पूर्व ही कैंप किया है। खुफिया जानकारी जुटा रही टीमों में एक डिप्टी एसपी, एक निरीक्षक व छह-छह सिपाही लगे हैं। इन्हें मोबाइल ट्रैकिंग सिस्टम समेत तमाम आधुनिक उपकरणों से लैस किया गया है।

अयोध्या में होने वाली तमाम संभावित गतिविधियों पर उनकी नजर है। फिदाइन हमले रोकने के लिए मंदिर के आसपास क्रैश रेटेड बोलार्ड लगाए जा रहे हैं। सीसीटीवी कैमरों से आसपास के इलाकों की निगरानी होगी। महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा की सुरक्षा उत्तर प्रदेश विशेष सुरक्षा बल की छठवीं वाहिनी को सौंपी गई है। ये जवान आतंकी खतरों से निपटने की क्षमता रखते हैं। यहां तीन इंस्पेक्टर, 55 उप निरीक्षक, 22 मुख्य आरक्षी और 194 आरक्षी लगाए गए हैं। सुरक्षा बलों की कुल संख्या 294 है। इन्हें वॉच टावर के साथ सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर तैनात किया गया है।

अयोध्या में स्क्रीन के जरिये पूरे एयरपोर्ट की सुरक्षा की सतत निगरानी शुरू कर दी गई। यूपीएसएसएफ के मीडिया प्रभारी विवेक श्रीवास्तव ने बताया कि तैनाती के पहले जवानों को अपर पुलिस महानिदेशक एलवी एंटनी देव कुमार ने सुरक्षा के अहम बिंदु समझाए। इन्हें तीन माह का विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। यूपी एटीएस से आधुनिक हथियारों को चलाने का और यूपीएसडीआरएफ से आपदा से निपटने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। एयरपोर्ट की सुरक्षा के लिए पांच दिन का इंडक्शन कोर्स, 14 दिन का बेसिक कोर्स, पांच दिन का ऑन जॉब ट्रेनिंग, पांच दिवस का स्क्रीनर्स से संबंधित विशेष प्रशिक्षण भी मिला है।

एसपी सिटी मधुबन सिंह ने बताया कि रामनगरी को सेक्टरों में बांटा गया है। इसके लिए लगभग 100 डिप्टी एसपी, 300 निरीक्षक, 800 उपनिरीक्षक व 4500 मुख्य आरक्षी/आरक्षी की मांग की गई है। 20 कंपनी पीएसी भी तैनात रहेगी। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों ने सुरक्षा का ब्लू प्रिंट तैयार कर लिया है। पुलिस के रडार पर रहने वाले लोगों को इस दौरान

अयोध्या में घुसने नहीं दिया जाएगा। पुलिस ने मय फोटो इनका डाटाबेस तैयार कर लिया है। इनकी गतिविधियों पर अभी से नजर रखी जा रही है। श्रीराम मंदिर की सुरक्षा को पहले से अब और तगड़ी कर दी गई है।

ऋषि सुनक की पत्नी अक्षता मूर्ति की निवेश कंपनी बंद होने पर विपक्ष ने उठाए सवाल

लंदन । ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की पत्नी अक्षता मूर्ति की निवेश कंपनी बंद होने जा रही है। वहीं निवेश कंपनी के बंद होने को लेकर लेबर पार्टी ने निशाना साधा है। लेबर पार्टी इस साल के आखिर में आम चुनाव की संभावना के मद्देनजर प्रचार अभियान में जुट गई है। उसने इश्तहार देकर पीएम सुनक पर जनता के साथ नाइंसाफी करने का आरोप लगाया है। लेबर पार्टी के चुनाव प्रचार अभियान के संयोजक पैट मैक फाड्डेन ने 4 जनवरी को उप प्रधानमंत्री ओलिवर डाउडेन को

लिखे पत्र को सोशल मीडिया पर पोस्ट किया। उस पत्र में मैक फाड्डेन ने मूर्ति के कैटामरन वेंचर्स को समेटने से जुड़ी स्थितियों पर सवाल उठाया है। इंफोसिस के सह-संस्थापक नारायण मूर्ति की 43 वर्षीय व्यापारी पुत्री अक्षता मूर्ति ने 2013 में इस उद्यम को शुरू किया था। उनके पति ऋषि सुनक उसके एक निदेशक बने थे। जिन्होंने 2015 में इस पद से इस्तीफा दे दिया। पिछले साल वित्तीय ब्योरे में सामने आया कि मूर्ति ने इस कंपनी को बंद करने का फैसला किया है। इस मामले में मैक फाड्डेन ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि पिछले कुछ महीनों में कैटामरन वेंचर्स के व्यापारिक सौदों के बारे में कई रिपोर्ट सामने आयी हैं। जिनमें यह खुलासा हुआ कि पीएम की पत्नी द्वारा संचालित इस कंपनी को स्वयं ऋषि सुनक द्वारा तैयार की गयी कोविड सहयोग योजना के तहत 20 लाख पाउंड मिला। मैक फाड्डेन ने कहा कि फिर यह सामने आया कि जिन कारोबार में श्रीमती मूर्ति ने पैसे लगाये, वह ठप हो गया और करदाताओं को 10 लाख पाउंड की चपत लगी। सहयोगियों और मैंने सरकार के मंत्रियों को कई पत्र लिखे। लंबित सवालों के साथ, अपनी कंपनी को बंद करने श्रीमती मूर्ति के फैसले से कई अन्य सवाल खड़े होते हैं। उन्होंने कहा कि जनहित में स्पष्टकरण दिए जाने की जरूरत है। इस बात से इनकार करते हुए कि लेबर इस मुद्दे से राजनीतिक लाभ हासिल करने की कोशिश कर रही है। उनकी पार्टी सिर्फ यह सुनिश्चित करना चाहती है कि यहां सब कुछ ठीक से बताया जाए, क्योंकि यह उद्यम अब बंद हो गया है। बता दें कि पिछले साल की शुरुआत में ऋषि सुनक जांच के दायरे में आ गए थे, जब यह बात सामने आई थी कि उनकी अरबपति पत्नी के पास एक चाइल्डकेअर एजेंसी में शेयर थे, जिसे तत्कालीन बजट में घोषित एक नई नीति से लाभ हुआ था।

अल-अरूरी की मौत का बदला लेने हिज्बुल्ला ने इजरायल पर दागीं 62 मिसाइलें

गाजा । हमास नेता अल-अरुरी की मौत के बदले हिज्बुल्ला ने इजरायल पर एक के बाद एक 62 मिसाइलें दागी हैं। बता दें कि हमास नेता की मौत पिछले हफ्ते बेरूत में हो गई थी। हिज्बुल्ला का कहना है कि इजरायल पर ये हमला हमास नेता की मौत के जवाब में पहली कर्रवाई थी। हिज्बुल्ला ने ये मिसाइल अटैक उत्तरी इजरायल पर किया है। लेबनान के चरमपंथी संगठन हिज्बुल्ला ने इजरायल पर एक बार फिर बड़ा हमला किया है। हिज्बुल्ला ने ये हमला हमास लीडर शेख सालेह अल-अरुरी की मौत के जवाब में किया है। दावा है कि हिज्बुल्ला ने इजरायल पर एक के बाद 62 मिसाइलें दागीं हैं। हिज्बुल्ला ने ये मिसाइल अटैक करने के बाद बयान जारी कर बताया कि 62 अलग तरह-तरह की मिसाइलों से हमला किया है। ये हमला एयर कंट्रोल बेस पर किया गया है। हालांकि इजरायल ने भी इस हमले का जवाब दिया है। इजरायली सेना ने दावा किया है कि इस हमले के जवाब में उसने एक टेररिस्ट सेल को टारगेट किया गया है। हालांकि, इजरायली सेना ने इस हमले में किसी के हताहत होने नुकसान की कोई जानकारी नहीं दी है। सूत्रों की माने तो इजरायली वायुसेना मेरोन एयर कंट्रोल पर अपने लड़ाकू विमान नहीं उतार सकी, क्योंकि हिज्बुल्ला के हमलों से रनवे पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया था। बता दें कि कुछ ही दिन पहले लेबनान की राजधानी बेरूत में हमास लीडर शेख सालेह अल-अरुरी की मौत ड्रोन अटैक में हो गई थी। उस समय अल-अरुरी हमास से जुड़े फिलिस्तीनी और लेबनानी लोगों के साथ बैठक कर रहा था। इस ड्रोन अटैक के लिए सीधे तौर पर इजरायल को जिम्मेदार माना गया था। हालांकि, इजरायल ने न तो इसकी पुष्टि की थी और न ही इसे खारिज किया था।

ताइवान को हथियार देने के बदले चीन ने अमेरिका की 5 रक्षा कंपनियों को किया बैन

बीजिंग । ताइवान को हथियार बेचने और चीनी कंपनियों तथा नागरिकों पर प्रतिबंध लगाए जाने के जवाब में चीन ने अमेरिका की 5 रक्षा कंपनियों पर बैन लगा दिया है। जानकारी के अनुसार विदेश मंत्रालय ने ऑनलाइन जारी किए एक बयान में कहा कि इन प्रतिबंधों से चीन में इन कंपनियों की संपत्ति कुर्क हो जाएगी और चीन में स्थित संगठन और लोगों के उनके साथ कारोबार करने पर रोक रहेगी। जिन कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए गए हैं उनमें बीएई सिस्टम्स लैंड एंड आर्मामेंट, एलियंट टेकसिस्टम्स ऑपरेशन, एयरोविरोनमेंट वियासैट एंड डेटा लिंक सॉल्यूशंस शामिल हैं। विदेश मंत्रालय ने कहा कि अमेरिका के कदमों ने चीन की संप्रभुत्ता और सुरक्षा हितों को नुकसान पहुंचाया है, ताइवान जलडमरूमध्य में शांति एवं स्थिरता को कमजोर किया है और चीनी कंपनियों तथा नागरिकों के अधिकारों व हितों का उल्लंघन किया है। मंत्रालय के अनुसार चीन सरकार राष्ट्रीय संप्रभुत्ता, सुरक्षा और क्षेत्रीय अखंडता की सुरक्षा और चीनी कंपनियों तथा नागरिकों के कानूनी अधिकारों और हितों की रक्षा के हमारे संकल्प पर अडिग है। दरअसल चीन उसके पूर्वी तट पर स्थित स्वशासित ताइवान को अपना ही हिस्सा मानता है। चीन ने ताइवान को हथियार बेचने और चीनी कंपनियों तथा नागरिकों पर प्रतिबंध लगाए जाने के जवाब में अमेरिका की रक्षा से जुड़ी पांच कंपनियों पर रविवार को प्रतिबंध लगाए। विदेश मंत्रालय ने ऑनलाइन जारी किए एक बयान में कहा कि इन प्रतिबंधों से चीन में इन कंपनियों की संपत्ति कुर्क हो जाएगी और चीन में स्थित संगठन और लोगों के उनके साथ कारोबार करने पर मनाही होगी। जिन कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए गए हैं उनमें बीएई सिस्टम्स लैंड एंड आर्मामेंट, एलियंट टेकसिस्टम्स ऑपरेशन, एयरोविरोनमेंट वियासैट एंड डेटा लिंक सॉल्यूशंस शामिल हैं।

विमान के उड़ान भरते ही क्रू मेंबर की अचनाक हुई मौत

लंदन । ब्रिटिश एयरवेज के एक फ्लाइट अटेंडेंट की उड़ान भरते ही मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार विमान लंदन से उड़ान भरने वाला था, तभी वह मेंबर यात्रियों के सामने गिर पड़ा। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, फ्लाइट नए साल की पूर्वसंध्या पर लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे से हांगकांग के लिए रवाना होने वाली थी। विमान का दरवाजा पहले ही बंद कर दिया गया था और यात्री अपनी सीटों पर बैठे थे, तभी चालक दल के एक सदस्य की विमान में मौत हो गई। आपातकाल स्थिती के कारण उड़ान को रद्द करना पड़ गया था। जानकारी के मुताबिक, फ्लाइट में बैठे एक यात्री डॉक्टर ने उसे बचाने की भी कोशिश की। हालांकि फ्लाइट अटेंडेंट की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। लंदन एम्बुलेंस सेवा ने मेट्रो यूके को बताया कि दुर्भाग्य से, हमारे दल के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, एक मरीज को घटनास्थल पर ही मृत घोषित करना पड़ा। चालक दल के सदस्य के बारे में कोई और जानकारी नहीं दी गई, हालांकि उन्हें कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं थी। बता दें कि हाल के हफ्तों में मरने वाली यह ब्रिटिश एयरवेज की दूसरी फ्लाइट अटेंडेंट है। 52 वर्षीय एक अन्य क्रू सदस्य भी 23 दिसंबर को उड़ानों के बीच अपने होटल के कमरे में मृत पाया गया था। जिस कारण नेवार्क से लंदन जा रही उड़ान को रद्द करना पड़ा था। पिछले साल एक अन्य घटना में, ब्रिटिश एयरवेज की उड़ान में सवार एक 73 वर्षीय महिला की दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हुई थी। यह घटना सितंबर में लंदन से नीस की उड़ान पर हुई थी। इसी तरह जून में भी एक ब्रिटिश व्यक्ति की अस्थमा के दौरे के कारण लंदन से न्यूयॉर्क की उड़ान के दौरान मृत्यु हो गई थी।

भारतीय ड्राइवर ने लॉटरी में जीते 44 करोड़ रुपये

-मुनव्वर फैरूस ने बिग टिकट लाइव में पाया 20 मिलियन यूएई दिरहम का जैकपॉट पुरस्कार

अबू धाबी (ईएमएस)संयुक्त अरब अमीरात निवासी एक भारतीय ड्राइवर की किस्मत ऐसी चमकी की वह अचानक 44 करोड़ रुपयों का मालिक बन गया। दरअसल, 31 दिसंबर को यानी नए साल की शुरुआत में मुनव्वर फैरूस नामक भारतीय ने बिग टिकट लाइव में 20 मिलियन यूएई दिरहम का जैकपॉट पुरस्कार जीता है। कहते हैं कि अगर नए साल की शुरुआत अच्छी हो तो पूरा साल अच्छा जाता है। मुनव्वर फैरूस के जीवन का शुरुआती साल ही धमाकेधार रहा। वह अब तक यकीन नहीं कर पा रहे हैं कि उन्होंने 44 करोड़ की रकम जीती है।

अमेरिका में बर्फबारी के बीच ही घोड़ागाड़ी चलाता हुआ एक व्यक्ति।

अमरीकी विदेश मंत्री ब्लिंकन के दौरे से पहले इज्राइल ने भावी युद्ध का किया खाका प्रस्तुत

तेल अवीव । इज्राइली रक्षा मंत्री ने बृहस्पतिवार को गाजा में युद्ध के अगले चरण का ऐजेण्ड प्रस्तुत किया, जिसमें बताया गया है कि कैसे इजराइली सेना उत्तरी गाजा में अपनी नयी युद्ध नीति के तहत आवश्यकतानुसार हमास से जंग जारी रखेगी। अमेरिकी विदेश मंत्री के दौरे से पहले याओव गैलेंट ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें हमास को हराने के बाद गाजा को कैसे चलाया जाएगा इस बात का जिक्र है। प्रस्ताव में कई अहम चीजें शामिल हैं जैसे क्षेत्र में इजरायल सुरक्षा नियंत्रण रखेगा या नहीं जो फिलहाल अपरिभाषित है, प्रशासनिक गतिविधियों के लिए इजराइल के दिशा-निर्देशों वाली फलस्तीनी इकाई होगी जो अमेरिका तथा अन्य देश गाजा के पुनर्निर्माण की देखरेख करेंगे । युद्ध की समाप्ति के बाद गाजा के भविष्य को लेकर इजराइल पर भारी अंतरराष्ट्रीय दबाव बना हुआ है हालांकि अभी तक इजराइल ने इस बारे में कोई दृष्टिकोण जाहिर नहीं किया है। इस सप्ताह के अंत में अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन इजराइल और क्षेत्र के अन्य देशों के साथ वार्ता करेंगे, जिसमें यह मुद्दा उनके एजेंडे में रहने की संभावना है।करीब तीन महीने से जारी बमबारी और जमीनी हमलों के बाद अमेरिका ने इजराइल पर गाजा में हमलों की तीव्रता कम करने और सिर्फ और सिर्फ हमास को निशाना बनाने के लिए दबाव डाला है। लेकिन गैलेंट द्वारा तैयार खाके के कई प्रावधानों की अस्पष्टता के कारण यह आकलन करना मुश्किल हो गया है कि वे अमेरिका की बातों से कितना इत्तेफाक रखते हैं। गैलेंट ने युद्ध के तीसरे चरण के लिए दृष्टिकोण नाम का एक दस्तावेज जारी किया है।

भारत और चीन के लिए क्यों जरूरी है शेख हसीना की सरकार?

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में आज मतदान हो रहा है और आम चुनाव में शेख हसीना की जीत लगभग तय मानी जा रही है। शेख हसीना के विरोधी नेताओं ने चुनाव का बहिष्कार करने की घोषणा की है। उनमें इतनी ज्यादा नाराजगी है कि मतदान के शुरु में ही हिंसा होने लगी। देश के करीब 10 जिलों में आगजनी, तोड़फोड़ और कई मतदान केंद्रो में आग लगा दी। वे हसीना सरकार को अवैध और गैर कानूनी मानते हैं। तमाम आरोपों के बीच भारत और चीन की मंशा है कि बांग्लादेश में शेख हसीना की ही सरकार बनना चाहिए। इसमें उनके अपने फायदे हैं।

एक तरफ अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों ने हसीना सरकार की ओर से कथित तौर पर हजारों प्रतिद्वंद्वी राजनेताओं और समर्थकों को गिरफ्तार करने की रिपोर्टों पर बार-बार चिंता जताई है। पश्चिमी देशों ने बार-बार हसीना सरकार की लोकतांत्रिक साख पर सवाल उठाए हैं और अधिकार समूहों ने बांग्लादेश सरकार पर विपक्ष को पंगु बनाने का आरोप लगाते हुए निंदा की है तो वहीं भारत और चीन शेख हसीना सरकार के प्रति नरम रुख अपनाया है।भारत ने पिछले दो महीनों में इस बात को दोहराया है कि बांग्लादेश में होने वाला आम चुनाव उसका अपना मामला है। विदेश मंत्रालय के बयान को देखते हुए ऐसा माना जाता कि भारत पीएम शेख हसीना की सरकार के साथ खड़ा रहेगा। विदेश मंत्रालय ने कहा था, चुनाव बांग्लादेश का घरेलू मामला है और हमारा मानना है कि बांग्लादेश के लोगों को अपना भविष्य खुद तय करना है।

बांग्लादेश के साथ भारत के अपने हित हैं। करीब 170 मिलियन (17 करोड़) लोगों के मुस्लिम-बहुल देश को भारत लगभग तीनों तरफ से घेरता है। भारत के लिए बांग्लादेश केवल एक पड़ोसी ही नही, बल्कि एक रणनीतिक साझेदार और करीब सहयोगी है, जो उत्तर-

पूर्वी राज्यों की सुरक्षा और कनेक्टिविटी के लिए महत्वपूर्ण है।भारतीय नीति निर्माताओं का मानना है कि दिल्ली को ढाका में एक मैत्रीपूर्ण शासन जरूरत है और 2009 में दोबारा सत्ता में आने के बाद से शेख हसीना ने भारत के साथ घनिष्ठ राजनीतिक और आर्थिक संबंध बनाए हैं। यह मजबूत आर्थिक सहयोग अगरतला-अखौरा रेल लिंक और भारत-बांग्लादेश फ्रेंडशिप पाइपलाइन जैसी साझा बुनियादी ढांचा परियोजनाओं से साफ है, जिसने न केवल व्यापार को बढ़ावा दिया है बल्कि दोनों देशों के बीच कनेक्टिविटी में भी सुधार किया है। रिपोर्ट के मुताबिक, 2021-22 में भारत और बांग्लादेश के बीच द्विपक्षीय व्यापार 15 बिलियन डॉलर से ज्यादा हो गया था। दशकों तक चीन के रक्षा आयात पर प्रभुत्व बनाए रखने के बाद, सहयोग अब भारत से हथियार खरीदने वाले बांग्लादेश तक भी फैल गया है।

चीन बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार का समर्थन करता है. 2016 में बांग्लादेश चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) में शामिल हुआ था। बांग्लादेश को दो पनडुब्बियां बेचने के अलावा चीन कुतुबदिया में इनके लिए 1 बिलियन डॉलर का बेस बना रहा है। चीन ने कई बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में भी निवेश किया है। उसने अपने हथियारों की बिक्री जारी रखी है और बांग्लादेश में परियोजनाओं में 38 अरब डॉलर का निवेश करने का वादा किया है। बांग्लादेश में चीन की ऐसी मौजूदगी भारत या अमेरिका के लिए अनुकूल नहीं है, लेकिन नई दिल्ली के लिए राहत की बात यह है कि शेख हसीना की सरकार इस क्षेत्र में भारत के रणनीतिक हितों के प्रति सचेत रही है।बांग्लादेश में आम चुनाव के लिए रविवार को मतदान होगा, जिसमें मुख्य विपक्षी दल बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की अनुपस्थिति के कारण प्रधानमंत्री शेख हसीना के लगातार चौथी बार जीत दर्ज करने की उम्मीद है। विपक्षी दल बीएनपी ने चुनाव का बहिष्कार किया है और ''अवैध सरकार के खिलाफ 48 घंटे की राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान किया है। चुनाव आयोग ने कहा कि उसने देश भर के 300 निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान की तैयारी लगभग पूरी कर ली है और सुरक्षा व्यवस्था भी सुनिश्चित की है।

भारत को लेकर शेख हसीना ने कही बड़ी बात, पूरी दुनिया निकाल रही मायने

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने भारत को लेकर बडा बयान दिया है। उन्होंने अपने ही देश के विपक्षी नेताओं को न केवल नसीहत दी है बल्कि बांग्लादेश कैसे आगे बढ़ेगा इसको लेकर हाईलाइटर दिए हैं। बांग्लादेश के निर्वाचन आयोग के अनुसार, 42,000 से अधिक मतदान केंद्रों पर रविवार को होने वाले मतदान में कुल 11.96 करोड़ पंजीकृत मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। चुनाव में 27 राजनीतिक दलों के 1,500 से अधिक उम्मीदवार मैदान में हैं और उनके अलावा 436 निर्दलीय उम्मीदवार भी हैं। भारत के तीन पर्यवेक्षकों समेत 100 से अधिक विदेशी पर्यवेक्षक 12वें आम चुनाव की निगरानी रखेंगे। यह चुनाव कड़ी सुरक्षा के बीच कराया जा रहा है। निर्वाचन आयोग ने कहा कि नतीजे आठ जनवरी की सुबह से आने की उम्मीद है। सुबह आठ बजे वोटिंग करने करने आई प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कहा हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे पास भारत जैसा भरोसेमंद दोस्त है। मुक्ति संग्राम के दौरान उन्होंने हमारा समर्थन किया। 1975 के बाद जब हमने अपना परिवार खो दिया तो भारत ने हमें आश्रय दिया। भारत के लोगों को हमारी शुभकामनाएं। हसीना के इस बयान से दूसरे पड़ोसी देश अपने स्तर पर मायने निकाल रहे हैं।

प्रधानमंत्री हसीना की सत्तारूढ़ आवामी लीग के लगातार चौथी बार जीतने की उम्मीद है क्योंकि पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया (78) की पार्टी बीएनपी ने चुनाव का बहिष्कार किया है। खालिदा भ्रष्टाचार के आरोपों में दोषी ठहराए जाने के बाद घर में नजरबंद हैं। बीएनपी ने शनिवार से 48 घंटे की देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया है। जो 27 राजनीतिक दल चुनाव लड़ रहे हैं उनमें विपक्षी जातीय पार्टी भी शामिल है। बाकी सत्तारूढ़ अवामी लीग की अगुवाई वाले गठबंधन के सदस्य हैं जिसे विशेषज्ञों ने ''चुनावी गुट'' का घटक सदस्य बताया है।

उत्तर कोरिया ने रूस को दीं बैलिस्टिक मिसाइलें : व्हाइट हाउस

वाशिंगटन (एजेंसी)। उत्तर कोरिया ने हाल ही में रूस को कई बैलिस्टिक मिसाइलें और लॉन्चर मुहैया कराए हैं, जिनका इस्तेमाल यूक्रेन के खिलाफ हवाई हमलों में किया गया। व्हाइट हाउस के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने बताया कि अमेरिका के पास रूस को तीसरे देशों से मिल रहे सहयोग की नई जानकारी है। किर्बी ने कहा,हमारे प्रतिबंधों और निर्यात नियंत्रणों के कारण, रूस विश्व मंच पर तेजी से अलग-थलग हो गया है और उन्हें सैन्य उपकरणों के लिए समान विचारधारा वाले राज्यों की ओर देखने के लिए मजबूर होना पड़ा है। जैसा कि हम सार्वजनिक रूप से चेतावनी दे रहे हैं, उन राज्यों में से एक उत्तर कोरिया है। प्रवक्ता ने कहा कि 30 दिसंबर, 2023 को रूसी सेना ने यूक्रेन में उत्तर कोरियाई बैलिस्टिक मिसाइलों में से कम से कम एक से हमला किया। उन्होंने दावा किया कि ऐसा प्रतीत होता है कि मिसाइल ज़ापोरीज़िया क्षेत्र में एक खुले मैदान में गिरी है। किर्बी ने कहा कि 2 जनवरी को रूस ने यूक्रेन में कई उत्तर कोरियाई बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं, इसमें रात भर का हवाई हमला भी शामिल था। प्रवक्ता ने कहा हम अभी भी इन अतिरिक्त मिसाइलों के प्रभावों का आकलन कर रहे हैं। उत्तर कोरियाई बैलिस्टिक मिसाइलें लगभग 900 किलोमीटर तक मार करने में सक्षम हैं। व्हाइट हाउस के अधिकारी ने यह भी चेतावनी दी कि अमेरिका को आशंका है कि रूस यूक्रेन के नागरिक बुनियादी ढांचे को निशाना बनाने और निर्दोष यूक्रेनी नागरिकों को मारने के लिए अतिरिक्त उत्तर कोरियाई मिसाइलों का उपयोग करेगा। किर्बी ने कहा कि उत्तर कोरिया संभवतः अपने समर्थन के बदले में रूस से सैन्य सहायता मांग रहा है।

सुप्रीम कोर्ट ने ट्रंप को चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं तो मुश्किल में पड़ जाएगा अमेरिका

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप कई मामलों में फंसे है। अमेरिका की अदालतों में मामले चल रहे हैं। ऐसे में उन्हे चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी जा रही है। यदि उन्हे चुनाव नहीं लड़ने दिया तो क्या होगा। इस सवाल के जवाब में खुद ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका मुश्किल में पड़ जाएगा। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि मुझे बस यही उम्मीद है कि हमें उचित न्याय मिलेगा। अगर ऐसा नहीं होता है तो हमारा देश और मुसीबत में आ जाएगा। यहां हर कोई समझ रहा है कि मैं क्या कहना चाह रहा हूं। इस दौरान ट्रंप ने डेमोक्रेट्स पर निशाना साधा। बता दें कि डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति चुनाव लड़पाएंगे या नहीं, सुप्रीम कोर्ट 8 फरवरी को यह तय करेगा। कोर्ट इस

दिन कोलोराडो कोर्ट के फैसले की समीक्षा करेगा।अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट 8 फरवरी को कोलोराडो कोर्ट के फैसले की समीक्षा करेगा, जिसमें डोनाल्ड ट्रंप को अयोग्य ठहराया गया था। इससे पहले ट्रंप ने एक बड़ा बयान दिया है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा है कि अगर सुप्रीम कोर्ट मेरे पक्ष में फैसला नहीं देता है तो देश में बड़ी मुसीबत आ जाएगी। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति ने आयोवा की रैली में ये बातें कहीं। यूएस सुप्रीम कोर्ट ट्रंप की अपील पर सुनवाई करने को राजी हो गया है, जिसमें उन्होंने कोलोराडो कोर्ट के फैसले को पलटने का अनुरोध किया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि वह 8 फरवरी को कोलोराडो कोर्ट के फैसले की समीक्षा करेगा, जिसमें उन्हें अयोग्य ठहराया गया था। ट्रंप ने हाल ही में कोलोराडो कोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की दायर की थी। बता दें कि यह पूरा मामला 6 जनवरी 2021 का है, जब ट्रंप को राष्ट्रपति चुनाव में हार का सामना करना पड़ा था। नतीजे आने के बाद उन्होंने कैपिटल हिल पर धावा बोल दिया था। भारी संख्या में ट्रंप के समर्थन अमेरिकी संसद में घुस गए थे। इस दौरान उनके समर्थकों ने हिंसा भी की थी. इस घटना में पांच लोगों की मौत हो गई थी।

ब्रिटेन की तीन दिवसीय दौरे पर राजनाथ सिंह, 22 साल में किसी रक्षा मंत्री की पहली यात्रा

लंदन (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सोमवार से ब्रिटेन की तीन दिवसीय यात्रा पर होंगे। उनकी इस यात्रा को रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में भारत तथा ब्रिटेन के बीच द्विपक्षीय साझेदारी के लिए काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि 22 वर्षों के बाद किसी भारतीय रक्षा मंत्री की यह पहली ब्रिटेन यात्रा होगी। जून 2022 में राजनाथ सिंह की ब्रिटेन की पूर्व नियोजित यात्रा को भारतीय पक्ष ने प्रोटोकॉल कारणों का हवाला देते हुए रद्द कर दिया था। इसलिए सोमवार से शुरू होने वाली इस यात्रा को काफी अहम माना जा रहा है।

इस दौरान राजनाथ ब्रिटेन के रक्षा मंत्री ग्रांट शाप्स के साथ विभिन्न मुद्दों पर व्यापक बातचीत करेंगे। इसके अलावा वह औपचारिक 'गार्ड ऑफ ऑनर' का निरीक्षण करेंगे तथा लंदन में स्थित महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. आंबेडकर स्मारक भी जाएंगे। रक्षा मंत्री सिंह के ब्रिटेन में रहने वाले भारतीय समुदाय के लोगों से भी मुलाकात करने की उम्मीद है। लंदन स्थित विचार समूह 'इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट फॉर स्ट्रैटेजिक स्टडीज' (आईआईएसएस) में दक्षिण और मध्य एशियाई देशों के रक्षा, रणनीति और कूटनीतिक मामलों के वरिष्ठ फेलो राहुल रॉय चौधरी ने कहा, ''राजनाथ सिंह की यह यात्रा रणनीतिक और सामरिक दोनों ही दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

बीते 22 वर्षों के बाद किसी भारतीय रक्षा मंत्री की यह पहली ब्रिटेन यात्रा होगी। पिछली बार भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार में रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस ने 22 जनवरी 2002 को ब्रिटेन की यात्रा की थी।'' रॉय-चौधरी के अनुसार, राजनाथ सिंह की प्रस्तावित यात्रा ब्रिटेन के साथ भारत के राजनीतिक संबंधों में सुधार का संकेत देती है। इसके अलावा पिछले साल सितंबर में जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की भारत यात्रा के बाद दोनों देशों के रिश्तों में विकसित होती आपसी विश्वास की भावना का भी पता चलता है। उन्होंने कहा, ''वास्तविक रूप से राजनाथ की यह यात्रा ब्रिटेन के साथ सैन्य सहयोग और रक्षा औद्योगिक साझेदारी को मजबूत करने की दिशा में सार्थक प्रयास करेगी।'' नवंबर 2023 में दोनों देशों के बीच सचिव स्तर पर दिल्ली में रक्षा सलाहकार समूह (डीसीजी) की बैठक हुई थी।

इसके अलावा अक्टूबर 2023 में संयुक्त सचिवों के स्तर पर भारत और ब्रिटेन के बीच 2+2 विदेश और रक्षा वार्ता की पहलीबैठक हुई थी। रॉय-चौधरी ने कहा, ''ब्रिटेन अब भारत के शीर्ष पांच रणनीतिक साझेदारों में से एक नहीं है। हालांकि, रोल्स-रॉयस के साथ एयरो-इंजन पर चल रही परियोजनाओं की आपूर्ति के माध्यम से एक मजबूत भारत-ब्रिटेन रक्षा तकनीकी और औद्योगिक साझेदारी की शुरुआत हो सकती है।'' उन्होंने कहा, ''रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के अपनी ब्रिटेन यात्रा के दौरान ब्रिटेन के प्रमुख हथियार निर्माण स्थलों में से एक का दौरा करने की भी संभावना है।''

भारतीय रक्षा मंत्री की यह यात्रा इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि ब्रिटेन में खालिस्तान समर्थक हिंसा को लेकर भारत ने चिंता व्यक्त की है। इसके अलावा भारत को ब्रिटेन की रक्षा आपूर्ति पर कुछ विवादास्पद

ऐतिहासिक मुद्दों पर भी बातचीत होने की उम्मीद है। हालांकि, विश्लेषकों का मानना है कि मंत्री स्तर पर बातचीत के इस अवसर के साथ, रक्षा क्षेत्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत एजेंडे के कार्यान्वयन पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए।

अफगानिस्तान के खिलाफ भारतीय टीम घोषित

-रोहित और विराट की 13 महीने बाद टी20 टीम में वापसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान के खिलाफ तीन टी20 मैचों की सीरीज के लिए भारतीय टीम का ऐलान हो गया है। रोहित शर्मा और विराट कोहली की 13 महीनों बाद टी20 टीम में वापसी हुई है। रोहित शर्मा कप्तानी करेंगे। 2022 टी20 विश्व कप के बाद से न तो रोहित और न ही कोहली ने कोई अंतरराष्ट्रीय टी20 मैच खेला है। दोनों की वापसी से इतना तय माना जा रहा है कि आगामी टी20 विश्व कप में ये खेलते नजर आएंगे। अनुभवी खिलाड़ी हार्दिक पांड्या और सूर्यकुमार यादव के अलावा ऋतुराज गायकवाड़ को चोट के कारण नहीं चुना गया है।

भारतीय टीम इस प्रकार है। रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, यशस्वी जयसवाल, विराट कोहली, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), संजू सैमसन (विकेटकीपर), शिवम दुबे, वॉशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल, रवि बिश्नोई, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह , आवेश खान, मुकेश कुमार। अफगानिस्तान के खिलाफ सीरीज टी20 विश्व कप से पहले भारत की आखिरी द्विपक्षीय टी20 सीरीज है। चयनकर्ता चाहते होंगे कि उनकी पहली पसंद के सभी 15 खिलाड़ी चयन के लिए उपलब्ध हों, लेकिन ऐसा नहीं हो पाएगा। हार्दिक नवंबर में वनडे विश्व कप के दौरान पुणे में बांग्लादेश के खिलाफ लीग मैच के दौरान चोटिल हो गए थे। उसके बाद वह वापसी नहीं कर पाए हैं। सूर्यकुमार और हार्दिक दोनों के आईपीएल से वापसी की उम्मीद है। दिसंबर में दक्षिण अफ्रीका में टी20 में भारत का नेतृत्व करने वाले सूर्यकुमार को जोहान्सबर्ग में तीसरे और अंतिम मैच में फील्डिंग के दौरान टखने में चोट लग गई थी। हाल ही में उनके टखने की सर्जरी हुई है और उम्मीद है कि वह कुछ महीनों में ट्रेनिंग पर लौट आएंगे।

कोको गॉफ ने लगातार दूसरी बार ऑकलैंड क्लासिक का खिताब जीता

ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) (एजेंसी)। शीर्ष वरीयता प्राप्त कोको गॉफ ने पहला सेट गंवाने के बाद शानदार वापसी करके रविवार को यहां फाइनल में दूसरी वरीयता प्राप्त एलिना स्वितोलिना को हराकर ऑकलैंड टेनिस क्लासिक में अपने खिताब का सफलतापूर्वक बचाव किया। गॉफ ने स्वितोलिना को 6-7 (4), 6-3, 6-3 से हराया।

पूरे सप्ताह में यह पहला अवसर था जबकि गॉफ को तीन सेट तक जूझना पड़ा। वह बिना सेट गंवाए फाइनल में पहुंची थी। अमेरिका की इस खिलाड़ी ने पिछले साल यहां बिना सेट गंवाए खिताब जीता था। लेकिन इस बार फाइनल में उन्हें कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। यह मैच दो घंटे 23 मिनट तक चला। गॉफ 2018 और 2019 की चैंपियन जूलिया जॉर्जेस के बाद लगातार ऑकलैंड क्लासिक का खिताब जीतने वाली पहली खिलाड़ी बनीं।

यह 1989 के बाद पहला अवसर है जब किसी अमेरिकी खिलाड़ी ने इस प्रतियोगिता में अपने खिताब का बचाव किया। उनसे पहले पैटी फेंडिक ने 1988 और 1989 में ऑकलैंड क्लासिक का खिताब जीता था। गॉफ ने कहा, 'यह मेरे करियर में पहला अवसर है जबकि मैंने अपने खिताब का बचाव किया। इसलिए मैं वास्तव में बहुत खुश हूं कि आज मैं ऐसा करने में सफल रही।'

तितास ने अपनी सफलता का श्रेरु झूलन को दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई मुंबई (ईएमएस)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की युवा तेज गेंदबाज तितास साधु ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में चार विकेट लेकर भारतीय टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। वहीं तितास ने अपनी सफलता का श्रेय अनुभवी तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी को दिया है। इस युवा तेज गेंदबाज ने कहा है कि उन्हें झूलन गोस्वामी से मिली सलाह से लाभ हुआ है। तितास के अनुसार वह शुरुआत से ही झूलन की सलाह का पालन करती रही हैं। तितास ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 17 रन देकर 4 विकेट लिए थे। इससे भारत ने यह मैच 9 विकेट से आसानी से जीत लिया था। यह एक दशक के बाद पहलला अवसर था जबकि किसी भारतीय की किसी गेंदबाज ने मैच में 4 या इससे अधिक विकेट लिए। इससे पहले झूलन ने साल 2012 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 11 रन देकर 5 विकेट लिए थे। तितास ने मैच के बाद कहा, जब मेरी झूलन से पहली बार बात हुई थी तो उन्होंने कहा था कि बाकी चीजों के बारे में सोचना बंद करो और केवल तेज गेंदबाजी करने पर ध्यान दो। क्योंकि तुम तेज गेंदबाज हो और तुम्हें अधिक से अधिक तेज गति से गेंद करनी होगी। मुझे लगता है कि इसी कारण मुझे सफलता मिली है।

तितास ने कहा कि झूलन की उनकी जिंदगी में हमेशा जीवंत उपस्थिति रही है। उन्होंने कहा, झूलन मेरी जिंदगी का अहम हिस्सा रही हैं क्योंकि जब मैं 13 साल की थी तब मैंने पहली बार उन्हें देखा था और इसके बाद से ही हमेशा उनका मुझ पर प्रभाव रहा है। तितास ने कहा कि वह अभी बंगाल की टीम के साथ दिल्ली में हैं और शायद मुझे इस सीरीज के बाद वहां टीम से जुड़ना है। साथ ही कहा कि उनके साथ काम करने से काफी कुछ सीखने को मिलता है।

'मैं इससे खुश नहीं हूं', भारत बनाम दक्षिण अफ्रीका टेस्ट सीरीज में कम मैचों से नाजार एबी डिविलियर्स

डरबन (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के महान बल्लेबाज एबी डिविलयर्स इस बात से खफा हैं कि हाल में भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच समाप्त हुई श्रृंखला में केवल दो टेस्ट मैच ही खेले गए जिसके लिए उन्होंने दुनिया भर में धड़ल्ले से चल रही टी20 लीग को जिम्मेदार ठहराया। डिविलियर्स ने बड़ी श्रृंखला की वकालत करते हुए कहा कि अगर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीम का पता करना है तो 'कुछ तो बदलना होगा।

भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच खेली गयी टेस्ट श्रृंखला 1-1 से बराबरी पर छूटी जिसमें मेजबान टीम ने सेंचुरियन में शुरुआती टेस्ट पारी और 32 रन से जीता जबकि मेहमान टीम ने केप टाउन में सात विकेट से दूसरा टेस्ट मैच जीता। डिविलियर्स ने कहा, 'मैं इससे खुश नहीं हूं कि श्रृंखला में तीसरा टेस्ट नहीं था। आपको इसके लिए टी20 क्रिकेट को जिम्मेदार ठहराना होगा जो दुनिया भर में खेली जा रही हैं।'

उन्होंने कहा, 'मैं नहीं जानता कि किसे दोषी ठहराया जाए लेकिन मैं समझता हूं कि कुछ तो गलत है। अगर आप सभी टीमों को प्रतिस्पर्धा करते हुए देखना चाहते हो और दुनिया में कौन सर्वश्रेष्ठ टीम है, यह देखना चाहते तो कुछ तो बदलाव करना होगा।' दक्षिण अफ्रीका अब फरवरी में न्यूजीलैंड का दौरा करेगी जो भी दो टेस्ट मैच की श्रृंखला के लिए ही होगा। लेकिन जब क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने इस श्रृंखला के लिए दूसरे दर्जे की टीम की घोषणा की तो सभी काफी हैरान हो गए क्योंकि इसमें 'अनकैप्ड' (जिसने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नहीं खेला हो) नील ब्रांड टीम की अगुआई करेंगे।

इस श्रृंखला की तारीखें एसए20 लीग (दक्षिण अफ्रीका टी20 लीग) के दूसरे चरण के साथ पड़ रही हैं जो 10 जनवरी से 10 फरवरी के बीच खेली जाएगी जिसमें दक्षिण अफ्रीका के ज्यादातर खिलाड़ी खेल रहे हैं। डिविलियर्स को लगता है कि टेस्ट क्रिकेट दबाव में है और उन्हें स्वीकार किया कि खिलाड़ी और कोच उन्हीं टूर्नामेंट को चुनेंगे जिसमें अच्छी धनराशि मिल रही है। उन्होंने कहा, 'इससे दुनिया भर के क्रिकेट में हलचल मचा दी है और स्पष्ट कर दिया है कि टेस्ट क्रिकेट दबाव में है और यहां तक कि वनडे क्रिकेट भी क्योंकि पूरी प्रणाली ही टी20 क्रिकेट की ओर झुक रही है।' डिविलयर्स ने कहा, 'खिलाड़ी, बोर्ड और कोच उसी ओर झुकेंगे जहां ज्यादा धनराशि होगी। आप उन्हें दोषी नहीं ठहरा सकते क्योंकि वे अपने परिवार के साथ भविष्य के बारे में सोच रहे हैं।'

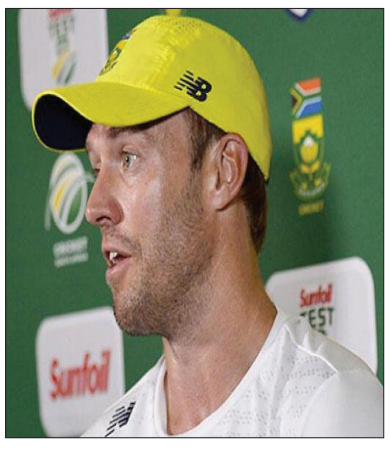

अफरीदी को आराम देने पर टीम प्रबंधन की कड़ी आलोचना, हफीज ने 3-0 से सीरीज गंवाकर बताई वजह

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के निदेशक मोहम्मद हफीज ने कहा कि तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी को कार्यभार प्रबंधन के तहत ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी में खेले गए तीसरे और अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच में विश्राम दिया गया था।

ऑस्ट्रेलिया ने सिडनी में शनिवार को पाकिस्तान को 8 विकेट से हराकर तीन मैच की श्रृंखला में क्लीनस्वीप किया। हफीज ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट मैच के बाद कहा, 'हमने शाहीन के कार्यभार को देखते हुए उन्हें विश्राम देने का फैसला किया था क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि उनके शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़े।'

अफरीदी को विश्राम देने के फैसले से पाकिस्तान क्रिकेट समुदाय हैरान था। पूर्व तेज गेंदबाज वसीम अकरम और वकार यूनिस ने इसके लिए टीम प्रबंधन की कड़ी आलोचना की थी। सिडनी टेस्ट मैच के पहले दिन अफरीदी ने मेजबान प्रसारक से कहा था कि टीम प्रबंधन और सहयोगी स्टाफ का मानना था कि उन्हें मैच से विश्राम दिया जाना चाहिए।

अभिषेक की कबड्डी टीम का हौंसला बढ़ते नजर आये ऐश्वर्या , आराध्या और अमिताभ

मुंबई । प्रो कबड्डी लीग का एक वीडियो आया है। इसमें ऐश्वर्या राय अपने पति अभिषेक बच्चन की टीम जयपुर पिंक पैंथर्स का समर्थन करती नजर आईं। इस वीडियो में इस दंपत्ति की बेटी आराध्या भी हैं। इस वीडियो से इन दोनो के बीच अनबन की अफवाहों पर भी विराम लग गया है। साथ ही दोनों को अलग बताने वाले ट्रोलर्स को भी करारा जवाब मिला है। इस वीडियो में अभिषेक के पिता अमिताभ बच्चन भी साथ नजर आ रहे हैं। ये सभी टीम का हौंसला बढ़ाते हुए नजर आ रहे हैं और काफी अत्साहित भी दिख रहे हैं। इन सभी ने जयपुर पिंक पैंथर्स की जर्सी पहनी हुई है। कबड्डी लीग में टीम की जीत से भी इनकी खुशी और बढ़ गयी। सोशल मीडिया पर ये वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। अभिषेक और ऐश्वर्या की शादी साल 2007 में हुई थी। इनकी एक बेटी आराध्या है।

अश्विन ने वॉन को करारा जवाब दिया, विदेशी धरती पर टीम का रिकार्ड काफी अच्छा

नई दिल्ली । अनुभवी स्पिनर आर अश्विन ने इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन को करारा जवाब दिया है। वॉन ने हाल में भारतीय टीम की आलोचना करते हुए कहा था कि पर्याप्त संसाधन होने के बाद भी टीम जीत नहीं पा रही है। उनका कहना था कि भारतीय टीम के पास इतनी प्रतिभाएं हैं कि उसे आईसीसी प्रतियोगिताओं में और बेहतर प्रदर्शन करना चाहिए था। वहीं अश्विन ने वॉन की इस टिप्पणी को खारिज करते हुए कहा कि भारतीय टीम विदेशों में शानदार प्रदर्शन करने वाली टीमों में शामिल है। अश्विन ने कहा,' वान ने हाल में कहा था कि भारतीय टीम अपनी क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाई है। यह सही है कि हमने बेहतर होने के बाद भी पिछले कुछ समय से आईसीसी ट्रॉफी और टेस्ट चैम्पियनशिप नहीं जीती है पर ये एक ही पहलू है।' भारतीय टीम ने पिछले कुछ साल में टेस्ट क्रिकेट में विदेशी धरती पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। अश्विन ने कहा,'वर्तमान समय में हमारी टीम विदेशों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टीमों में से एक है। हमने कई अच्छे परिणाम दिए हैं। वॉन की टिप्पणी के बाद हमारे देश के ही कई विशेषज्ञ इस पर बात करने लग गए थे कि क्या भारतीय टीम उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर रही है पर मुझे ये बात सहीं नहीं लगी।'अश्विन ने इस मामले को लेकर दक्षिण अफ्रीका में समाप्त हुई टेस्ट सीरीज का उदाहरण दिया जिसमें भारतीय टीम ने पहला टेस्ट मैच हारने के बाद दूसरे मैच में शानदार वापसी की थी। अश्विन ने कहा, 'अच्छी मानसिक दृढ़ता और मानसिक कौशल रखने वाली क्रिकेट टीम किसी भी स्थिति में वापसी कर सकती है और इस भारतीय टीम ने समय-समय पर इसे साबित भी किया है।

जिम्बाब्वे और श्रीलंका के बीच रद्द हुए मैच में असलांका ने खेली शतकीय पारी

कोलंबो (एजेंसी)। श्रीलंकाई बल्लेबाज चरित असलांका ने यहां जिम्बाब्वे के खिलाफ खराब मौसम के कारण रद्द हुए पहले एकदिवसीय में शानदार शतक लगाया। इस मैच में श्रीलंका ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए असालंका के शतक से 50 ओवर में नौ विकेट पर 273 रन बनाए। लंकाई टीम को एक अच्छे स्कोर तक पहुंचाने में असलांका की अहम भूमिका रही। इस बल्लेबाज ने 95 गेंद में 101 रन बनाये। अपनी इस पारी में असलांका ने चार छक्के और पांच चौके लगाये। जिम्बाब्वे की ओर रिचर्ड नगारवा ने 39 रन देकर 2, ब्लैसिंग मुजारबानी ने 62 रन देकर 2, फराज अकरम ने 58 रन देकर 2 तो सिकंदर रजा ने 41 रन देकर 1 विकेट लिया। वहीं इसके बाद लक्ष्य का पीछा करते हुए बारिश के कारण मैच रोके जाने के समय तक जिम्बाब्वे ने चार ओवर में दो विकेट के नुकसान पर 12 रन बनाये।

वहीं इसके बाद लगातार बारिश के कारण खेल फिर शुरु नहीं होने के कारण मैच को रद्द घोषित कर दिया गया। इस मैच में असलांका ने श्रीलंकाई पारी के दौरान अच्छी बल्लेबाजी की उनके अलावा कप्तान कुसल मेंडिस ने भी 46 रन बनाये। श्रीलंकाई टीम की शुरुआत खराब रही और उसने पहले ही ओवर में अविष्का फर्नांडो का विकेट खो दिया। अविष्का शून्य पर ही पेवेलियन लौट गये। इसके बाद कुसल मेंडिस और सदीरा सरमविक्रमा ने पारी को आगे बढ़ाया। सरमविक्रमा 31 गेंदों पर 41 रन बनाकर पेवेलियन लौटे। वहीं जैनिथ ने 34 गेंदों पर 24 रन बनाये।

कुसल के आउट होने के बाद असलांका ने श्रीलंकाई पारी को संभाला। उन्हें बल्लेबाजी के दौरान दासुन शनाका, महीष ठीकषाना और चमीरा से भी सहयोग मिला इससे श्रीलंकाई टीम 273 रन पहुंच पायी। इसके बाद लक्ष्य का पीछा करते हुए जिम्बाब्वे ने पहले 4 ओवर में ही 12 रनों के अंदर 2 विकेट खो दिये थे तभी तेज बारिश शुरु हो गयी और मैच जोकना पड़ा। इसके बाद खेल नहीं हो पाया।

हुक्का पीते धोनी की वीडियो आई, प्रशंसकों ने आपत्ति जतायी

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर आया है। जिसको देखकर लोग हैरान हैं क्योंकि इसमें धोनी हुक्का पीते हुए नजर आ रहे हैं। धोनी प्रशंसकों के आदर्श क्रिकेटर हैं। ऐसे में उनको वीडियो में हुक्का पीते देखकर किसी को भी भरोसा नहीं हो रहा है। इसलिए कुछ लोगों ने इसपर नाराजगी भी जतायी है। धोनी को इस वीडियो में दुबई में ऋषभ पंत और बॉलीवुड स्टार कृति सेनन के साथ नए साल का जश्न मनाने के दौरान हुक्का पीते हुए दिखाया गया है। इस वीडियो को लेकर प्रशंसकों ने सवाल भी उठाये हैं। धोनी का हुक्का पीते हुए वीडियो वायरल होने के बाद उनके ही सीएसके के पूर्व साथी जॉर्ज बेली का एक पुराना बयान भी आया है। जिसमें बेली ने कहा कि धोनी को हुक्का पीना पसंद है। बेली ने कहा , उसे शीशा या हुक्का पीना पसंद है। इसलिए वह अक्सर इसे अपने कमरे में स्थापित करता था और यह बहुत खुले तौर पर होता था। उन्होंने कहा इसके बीच ही खेल को लेकर बातें भी होतीं थीं और इस दौरान किसी प्रकार की कोई बाधा बीच में नहीं आती थी।

डेविड वार्नर ने अंतिम टेस्ट खेलने के बाद बताया अगला प्लान, इस क्षेत्र में बनाना चाहते हैं नाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। सिडनी = ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर भविष्य में कोचिंग से जुड़ना चाहते हैं और उन्होंने इसके साथ ही कहा कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) जैसी घरेलू प्रतियोगिताओं में आपस में ड्रेसिंग रूम सजा करने के कारण अगले एक दशक के अंदर क्रिकेट से छींटाकशी समाप्त हो जाएगी। इस 37 वर्षीय सलामी बल्लेबाज ने शनिवार को सिडनी में अपना अंतिम टेस्ट मैच खेला।

ऑस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान के खिलाफ इस मैच में 8 विकेट से जीत दर्ज करके तीन मैचों की श्रृंखला में क्लीनस्वीप किया था। वार्नर पहले ही एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा कर चुके हैं लेकिन वह टी20 अंतरराष्ट्रीय और विश्व भर की टी20 लीग में खेलने के लिए उपलब्ध रहेंगे। वार्नर ने कहा, 'हां मेरी भविष्य में कोचिंग से जुड़ने की इच्छा है। पहले मुझे अपनी पत्नी से बात करनी होगी कि क्या मुझे कुछ और दिन तक घर से बाहर रहने की अनुमति है।'

बाएं हाथ के इस बल्लेबाज को 2018 में केपटाउन में गेंद से छेड़छाड़ करने के मामले से पहले विरोधी खिलाड़ियों के प्रति आक्रामक रवैया अपनाने के लिए जाना जाता था। ऑस्ट्रेलिया ने इस प्रकरण के बाद अपनी खेल संस्कृति में बदलाव किया। इस सप्ताह के शुरू में ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा ने दावा किया था कि वार्नर के करियर के शुरुआती दौर में कोचिंग स्टाफ ने उन्हें विरोधी खिलाड़ियों पर छींटाकशी करने के निर्देश दिए थे।

वार्नर ने कहा, 'जब मैं टीम में आया तो मेरा काम विरोधी खिलाड़ियों को परेशान करना और जब वह बल्लेबाजी कर रहे हों तो उनका ध्यान भंग करना था। एक व्यक्ति के रूप में मुझे इस तरह से तैयार किया गया था।' उन्होंने कहा कि आईपीएल जैसी फ्रेंचाइजी टी20 लीग में खिलाड़ी विरोधी देशों के खिलाड़ियों के साथ ड्रेसिंग रूम साझा करते हैं जिसके कारण छींटाकशी जल्द ही अतीत की बात बन जाएगी।

वार्नर ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि भविष्य में आपको छींटकाशी या इस जैसी कोई चीज देखने को मिलेगी। यह हंसी मजाक तक सीमित रह जाएगी जैसे (पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के दौरान) मैं और शाहीन शाह अफरीदी करते थे। मुझे नहीं लगता कि आपको फिर से पहले जैसी आक्रामकता देखने को मिलेगी।'

स्पिनर अबरार पर कार्रवाई करेगी पीसीबी

कराची। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) चिकित्सा टीम के निर्देशों का पालन नहीं करने के लिए लेग स्पिनर अबरार अहमद पर कार्रवाई कर सकता है। अबरार तंत्रिका तंत्र की परेशानी के कारण ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एक मैच भी नहीं खेल पाए थे। उनपर टेस्ट सीरीज के दौरान चिकित्सा टीम के निर्देशों का पालन नहीं करने के आरोप लगे हैं। पाकिस्तान की टीम के चिकित्सक, फिजियो और ट्रेनर से परामर्श लेने के बाद पीसीबी के चिकित्सा पैनल ने पीसीब अध्यक्ष को अपनी एक रिपोर्ट सौंपी है। इसमें कहा गया है कि अबरार ने विश्व कप के समय से ही इलाज में लापरवाही बरती। पीसीबी के अनुसार बोर्ड अबरार के खिलाफ इस मामले में कार्रवाई करने पर विचार कर रहा है। पाकिस्तान को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीनों ही टेस्ट मैच में हार का सामना करना पड़ा था। अबरार को राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में भेज दिया गया है जहां हर दिन उनके इलाज की प्रक्रिया पर नजर रखी जाएगी।

मेरीकोम के तीखे बोल- नई पीढ़ी के मुक्केबाजों में दिखती है जज्बे की कमी

मुंबई (एजेंसी)। 6 बार की विश्व चैंपियन मुक्केबाज एमसी मेरीकोम का मानना है कि खिलाड़ियों की नई पीढ़ी में उनकी तरह सफलता हासिल करने का जज्बा नहीं है और वे सिर्फ एक बड़ी उपलब्धि से संतुष्ट हो जाते हैं। ओलंपिक कांस्य पदक विजेता ने यह भी कहा कि वह 41 साल की उम्र में भी 'सुपर फिट' हैं और उनमें 'अधिक से अधिक हासिल करने' की ललक बरकरार है। मेरीकोम आने वाले समय में पेशेवर बनने के विकल्प पर विचार कर रही है।

उन्होंने शनिवार को एक कार्यक्रम के इतर कहा- मैं लड़ूंगी (मुक्केबाजी), वह लड़ने (खेलने) की भावना केवल मेरीकोम में है। मेरे पास अन्य खेल सितारों से कुछ अनोखा है। उन्होंने कहा- मैं 41 साल की हूं, मैं इस साल से कोई भी अंतरराष्ट्रीय (एमेच्योर) प्रतियोगिता में नहीं उतर सकती क्योंकि उम्र सीमा है। मैं हालांकि अपने खेल को एक, दो या 3 साल तक जारी रखना चाहती हूं। इस दिग्गज ने कहा कि जब उन्होंने मुक्केबाजी शुरू की थी तब की तुलना में खेलों में अधिक सुविधाएं और विकल्प होने के बावजूद वर्तमान पीढ़ी में पर्याप्त जज्बा नहीं है।

6 बार की विश्व चैम्पियनशिप विजेता खिलाड़ी ने कहा- मैं सुपर फिट हूं, मैं और अधिक हासिल करना चाहता हूं, वह भूख मुझमें है। मौजूदा समय की युवा पीढ़ी एक बार चैंपियन बन कर संतुष्ट हो जाती है। उन्होंने कहा कि अगर मेरी तरह उनमें भी वह जज्बा और वह भूख हो तो हमारे देश में और अधिक पदक आएंगे।

रायुडू ने वाईएसआर कांग्रेस छोड़ी

मुम्बई। बल्लेबाज अंबाती रायडू का केवल दस दिनों में ही लगता है राजनीति से मन भर गया। इसी कारण रायडू ने वाईएसआर कांग्रेस पार्टी छोड़ दी है। रायडू अभी दस दिन पहले ही वाईएसआर कांग्रेस में शामिल हुए थे। रायडू ने पार्टी छोड़ने और थोड़े समय के लिए राजनीति से दूर रहने के अपने फैसले की घोषणा कर दी है। इस क्रिकेटर ने अपने अचानक लिए गये इस फैसले के पीछे के कारण नहीं बताये हैं। वहीं रायडू ने कहा कि वह सही समय आने पर अपने अगले कदम के बारे में बताएंगे। इस पूर्व क्रिकेटर ने लिखा, मैंने वाईएसआरसीपी पार्टी छोड़ने और कुछ समय के लिए राजनीति से बाहर रहने का फैसला किया है। गौरतलब है कि रायुडू पिछले सप्ताह ही आंध्र प्रदेश में सत्ताधारी पारी वाईएसआरसीपी में शामिल हुए थे।

वह मुख्यमंत्री वाई एस जगन मोहन रेड्डी, उपमुख्यमंत्री के नारायण स्वामी और राजमपेटा लोकसभा सदस्य पी मिथुन रेड्डी की उपस्थिति में पार्टी में शामिल हुए थे। रायडू ने आंध्र से घरेलू क्रिकेट के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट साथ ही आईपीएल में अपने शानदार प्रदर्शन के कारण लोकप्रियता हासिल की थी।

साउथ में यश के साथ डेब्यू करेंगी करीना!

चैप्टर 2 के बाद से रॉकिंग स्टार यश की अगली फिल्म का इंतजार दर्शक बड़ी बेसब्री से कर रहे हैं। कुछ समय पहले ही यश ने अपना अगला प्रोजेक्ट अनाउंस किया है जिसका टाइटल टॉक्सिक रखा गया है। ये भी उनकी पिछली फिल्म की तरह एक ग्रैंड फिल्म नजर आ रही है। आलोचकों से जमकर तारीफ पा चुकीं निर्देशक गीतू मोहनदास इस फिल्म को निर्देशित करने जा रही हैं। यश की फिल्म का आना अपने आप में बड़े पर्दे पर बड़े धमाके की गारंटी है और अब मीडिया में आए समाचारों की मानें तो टॉक्सिक की कास्ट और भी बड़ी होने जा रही है। इंडस्ट्री में ये चर्चा गर्म है कि बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेसेज में से एक करीना कपूर खान, यश के साथ टॉक्सिक में नजर आने वाली हैं। करीना ने 24 साल पहले रिफ्यूजी से फिल्मों में कदम रखा था। तब से अब तक वो पक्की बॉलीवुड एक्ट्रेस रही हैं और उन्होंने कभी साउथ की फिल्मों में काम नहीं किया है। बताया जा रहा है कि यश की टॉक्सिक के मेकर्स करीना को फिल्म में लेने के लिए बहुत उत्सुक हैं और इस बारे में करीना से डिस्कशन भी शुरू कर चुके हैं। अगर करीना ये फिल्म साइन करती हैं तो ये उनका साउथ डेब्यू भी होगा। बताया जा रहा है कि यश और टॉक्सिक के मेकर्स एक ऐसे नाम को फिल्म में लेना चाहते थे जो न सिर्फ इस प्रोजेक्ट को और बड़ा कर दे, बल्कि जिसके आने से फिल्म भी ज्यादा से ज्यादा ऑडियंस तक पहुंचे। इसीलिए करीना को अप्रोच किया गया है।

वेब सीरीज दस जून की रात मे नजर आएंगी प्रियंका चाहर चौधरी

बिग बॉस 16 की कंटेस्टेंट प्रियंका चाहर चौधरी दर्शकों की पसंदीदा सेलिब्रिटी में से एक हैं। बिग बॉस में आने के बाद प्रियंका को बड़ी सफलता मिली। उनके फैंस उनसे बेहद प्यार करते हैं। अभिनेत्री एक बार फिर दर्शकों का दिल जीतने के लिए तैयार हैं। प्रियंका इन दिनों अपनी पहले वेब सीरीज दस जून की रात के लिए तैयारी कर रही हैं। प्रियंका चाहर चौधरी ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर अपने नए प्रोजेक्ट की घोषणा करते हुए एक पोस्ट साझा किया। उन्होंने अपनी नए वेब सीरीज दस जून की रात के क्लैपरबोर्ड की एक तस्वीर पोस्ट की है। प्रियंका चाहर ने इस खबर को अपने फैंस के साथ साझा किया है। उन्होंने पोस्ट साझा कर लिखा, तो चलिए इस कहानी की शुरुआत करते हैं, आप सभी के प्यार से चलो। इसके अलावा एकता कपूर ने भी अपने अगले प्रोडक्शन वेंचर के सेट से एक तस्वीर साझा की। प्रियंका चाहर चौधरी के साथ इस सीरीज में अभिनेता तुषार कपूर नजर आएंगे। क्लैपरबोर्ड की फोटो शेयर करते हुए एकता ने कैप्शन में प्रियंका, तुषार, जियो सिनेमा, बालाजी टेलीफिल्म्स को टेग कर लिखा, दस जून की रात! यह बेगिन्स। जय माता दी। जसवंद एंटरटेनमेंट के बैनर तले सचिन मोहिते द्वारा दस जून की रात का निर्माण किया जा रहा है। इसकी सह-निर्माता एकता कपूर हैं। यह पहली बार है जब प्रियंका और तुषार एक साथ स्क्रीन साझा करते हुए नजर आएंगे। यह वेब सीरीज जियो सिनेमा और एएलटी बालाजी पर रिलीज होगी। प्रियंका चाहर चौधरी और एकता कपूर के साथ में काम करने की चर्चा पिछले काफी वक्त से सुर्खियों में है। पहले कहा जा रहा था कि प्रियंका नागिन 7 में अहम किरदार निभाती हुई नजर आएंगी। हालांकि, अब प्रियंका ने एकता कपूर के साथ अपने आगामी प्रोजेक्ट की घोषणा कर दी है। इस खबर के बाद फैंस बेसब्री से उन्हें स्क्रीन पर देखने का इंतजार कर रहे हैं।

सुपरस्टार बनना चाहती हैं हर्षाली मल्होत्रा

साल 2015 में रिलीज हुई फिल्म बजरंगी भाईजान में मुन्नी की भूमिका निभाने वाली बाल कलाकार हर्षाली मल्होत्रा अब 15 साल की हो गई हैं। बजरंगी भाईजान करने के बाद उन्हें बॉलीवुड, टॉलीवुड, गुजराती, पंजाबी, मराठी यहां तक कि भोजपुरी तक से 30-35 ऑफर आए। बजरंगी भाईजान करने के बाद हर्षाली ने सोचा नहीं था कि उनके पास इतने सारे ऑफर्स आएंगे। हालांकि हर्षाली ने इनमें से कोई भी ऑफर एक्सेप्ट नहीं किया। बातचीत में हर्षाली ने अपनी जिंदगी के कुछ मजेदार किस्से भी शेयर किए। उन्होंने ये भी कहा कि 10वीं की परीक्षा देने के बाद हर्षाली एक्टिंग पर फोकस करेंगी।

आपको बजरंगी भाईजान के बाद क्या ऑफर मिले?

मुझे बजरंगी भाईजान करने के बाद काफी ऑफर्स आए, लेकिन ये सब बचपन वाले रोल थे। कम लोगों को पता होगा कि मैं बजरंगी भाईजान करने से पहले प्रेम रतन धन पायो में स्वरा भास्कर के बचपन का रोल भी प्ले करने वाली थी। इसके लिए फोटो शूट भी हो चुका था। फिल्म की शूटिंग होनी रहती थी। इसी दौरान मैंने बजरंगी भाईजान साइन कर लिया और ये फिल्म उससे पहले शूट भी होने लग गई। सलमान खान बजरंगी भाईजान के अलावा प्रेम रतन धन पायो भी कर रहे थे। ऐसे में जब उन्हें पता चला कि मैं प्रेम रतन धन पायो कर रही हूं, तब वे कहने लगे कि मुन्नी का इतना बड़ा रोल प्ले करने के बाद तुम्हें प्रेम रतन... नहीं करनी चाहिए। उन्होंने सूरज बड़जात्या से कहकर रोल रिप्लेस करवा दिया। इसके बाद मुझे काफी रोल के लिए ऑफर आए, पर मुझे लगा कि ऐसे छोटे-छोटे रोल नहीं करने चाहिए। मैं हमेशा से सुपर स्टार एक्ट्रेस बनना चाहती हूं।

क्या सलमान खान से बात होती है? वे किस तरह का रोल करने की सलाह देते हैं?

मैं सलमान सर को ज्यादा डिस्टर्ब नहीं करती। उनसे ईद, दीवाली और बर्थडे के मौके पर ही बात होती है। डायरेक्टर कबीर सर से भी कभी-कभी बात होती है। मुझे 2022 में एक मूवी ऑफर हुई थी। उस दौरान सलमान सर से मिली थी क्योंकि मैं उनसे सलाह लेना चाहती थी। उन्होंने कहा कि तुम्हें प्रॉपर मेन लीड रोल ही करने चाहिए। यही वजह है कि बजरंगी भाईजान के बाद मैंने कोई छोटा रोल नहीं किया। हालांकि मुझे टेलीविजन से भी ऑफर्स आते हैं, पर मेरा मेन फोकस फिल्में ही हैं।

क्या आज भी लोग मुन्नी कहकर बुलाते हैं?

पहले तो सभी मुझे मुन्नी कहकर बुलाते थे। लेकिन अब जिनको मेरा नाम पता है, वे हर्षाली कहकर बुलाते हैं। हां, जिनको मेरा नाम नहीं पता है, वे आज भी मुन्नी कहकर बुलाते हैं। फिलहाल मुन्नी का रोल प्ले किए कई साल हो गए और अब मैं बड़ी भी हो गई हूं, इसलिए लोग सोच-सोचकर कहते हैं कि इसकी शक्ल बजरंगी भाईजान की मुन्नी से मिलती है। फिर उन्हें डिसक्लोज करते हैं कि ये वही है। ये सुनकर वे शाक्ड हो जाते हैं कि मुन्नी से मिल लिए। सच कहूं, तो आज भी वही प्यार मिलता है, जो प्यार फिल्म रिलीज के समय मिला करता था। यह कैरेक्टर न सिर्फ दर्शकों के लिए, बल्कि मेरे दिल के भी करीब रहेगा।

अभी आप कहां व्यस्त हैं?

अभी सिर्फ अपनी पढ़ाई और कथक पर ध्यान दे रही हूं। रोजाना स्कूल जाती हूं। मेरी मां स्कूल में टीचर्स से मेरी सिक्योरिटी पर ध्यान देने के लिए कहती हैं। पढ़ाई, होमवर्क पूरा ना करने पर नॉर्मल बच्चों की तरह ट्रीट करने के लिए बोलती हैं। मार्च, 2024 में 10वीं की बोर्ड परीक्षा देने के बाद एक्टिविटीज शुरू करूंगी। जिम्नास्टिक और वेस्टर्न डांस पर भी दोबारा फोकस करूंगी, जो 10वीं की बोर्ड परीक्षा के चलते छूट गया है। अभी फैंस से कनेक्ट रहने के लिए रील बनाती हूं। ऑफर्स तो काफी आ रहे हैं, पर मार्च तक सबको होल्ड पर रखा है। एक बार मार्च में एग्जाम हो जाए, उसके बाद एक्टिंग पर फोकस करूंगी। मार्च से पहले लंबा डेट शेड्यूल देकर शूट करना संभव नहीं होगा, क्योंकि किसी बड़े प्रोजेक्ट के लिए ठीक तरह से टाइम देना पड़ता है।

दुल्हनिया 3 से नहीं हुई आलिया भट्ट की छुट्टी, करण जौहर ने किया इनकार

हम्टी शर्मा की दुल्हनिया की रिलीज के लगभग दस साल बाद इसका सीक्वल बद्रीनाथ की दुल्हनिया फिल्म रिलीज की गई थी। वहीं अब इसके छह साल के बाद करण जौहर इस फ्रेंचाइजी की तीसरी किस्त लाने के लिए तैयार हैं। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में ऐसे दावे किए गए कि दुल्हनिया 3 की कास्टिंग में बड़े बदलाव होंगे। कहा गया कि फिल्म में आलिया भट्ट की जगह वरुण धवन के साथ जान्हवी कपूर नजर आएंगी। लेकिन, इस तरह के दावों को करण जौहर ने खारिज कर दिया है। करण जौहर ने आज अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट की इंस्टा स्टोरी पर एक मैसेज लिखा है। इसमें उन्होंने मीडिया से कोई अनुमान न लगाने की गुजारिश की है। बीते दिनों खबर आई थी कि जान्हवी कपूर इस मशहूर फ्रेंचाइजी में आलिया भट्ट की जगह लेकर वरुण के साथ नजर आएंगी। आलिया के ये फिल्म छोड़ने की वजह साफ नहीं थी, लेकिन ऐसा कहा गया कि ज्यादा फिल्मों में व्यस्त होने के चलते उन्होंने दुल्हनिया 3 करने से इनकार कर दिया है। मेकर्स फिल्म में देरी नहीं करना चाहते और आलिया के व्यस्त रहने के चलते उन्होंने जान्हवी कपूर को अप्रोच किया। आज करण जौहर ने इस सभी कयासों का खंडन कर दिया है। करण जौहर ने लिखा है, हर सुबह मैं ऐसी खबरें देखता हूं, जिनकी धर्मा प्रोडक्शंस की तरफ से कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। मीडिया के सदस्यों से अनुरोध है कि कृपया किसी फ्रेंचाइजी की निरंतरता या किसी की शुरुआत के बारे में अनुमान न लगाएं। करण जौहर ने कहा कि वह फिल्म को लेकर योजना तय होने के बाद खुद इससे जुड़ी जानकारी लोगों से साझा करेंगे।

प्रभास से पहली बार सेट पर मिले पृथ्वीराज सुकुमारन

सलार देखने को बाद प्रभास के बाद जिसकी सबसे ज्यादा चर्चा है, वो नाम है पृथ्वीराज सुकुमारन। फिल्म में उन्होंने प्रभास के दोस्त वर्धा का किरदार निभाया है। पृथ्वीराज ने बताया कि फिल्म देखने के बाद उनके पास सैकड़ों कॉल्स और मैसेजेस आ रहे हैं। पृथ्वीराज ने अपनी और प्रभास के बीच केमेस्ट्री पर भी बात की। पृथ्वीराज ने कहा कि प्रभास जल्दी किसी के साथ घुलते-मिलते नहीं हैं, लेकिन उनके साथ पांच मिनट में गहरी दोस्ती हो गई थी। पृथ्वीराज ने एक्टर बनने के बारे में नहीं सोचा था। वो ऑस्ट्रेलिया में पढ़ाई करते थे। छुट्टियां मनाने घर आए तो एक फिल्म ऑफर हुई। फिल्म इतनी बड़ी हिट हुई कि उन्होंने दोबारा ऑस्ट्रेलिया जाने का ख्याल छोड़ दिया।

अलग-अलग इंडस्ट्री से लोगों के कॉल्स आ रहे हैं

पृथ्वीराज सुकुमारन ने कहा- अब तक मैंने जितनी फिल्मों में काम किया है, उसमें सलार सबसे बड़ी है। इस फिल्म को लेकर जो माहौल बना है, वो अद्भुत है। मेरे पास कई कॉल्स आ रहे हैं। अलग-अलग इंडस्ट्री से लोग मेरे पास मैसेजेस भेज रहे हैं। पांचों भाषाओं में फिल्म को अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। प्रशांत नील ने कमाल की राइटिंग की है। उन्होंने हम दोनों (प्रभास और पृथ्वीराज) का रोल ऐसा लिखा है, जिससे सबको एक समान स्क्रीन टाइम मिले। प्रभास के बारे में बात करते हुए पृथ्वीराज सुकुमारन ने कहा- प्रभास एक ऐसे इंसान हैं जो जल्दी किसी के साथ घुलते नहीं हैं। मेरी पहली मुलाकात उनसे सलार के सेट पर ही हुई थी। पांच मिनट के अंदर हमारे बीच अच्छी दोस्ती हो गई। ऐसा लगा कि हम लोग एक दूसरे को कितने दिनों से जानते हैं। हमारे बीच जो केमेस्ट्री बनी वो पर्दे पर भी बखूबी दिखाई दी। प्रभास देश के सबसे बड़े स्टार्स में से एक हैं। इसके बावजूद उन्होंने अपने आस-पास मौजूद सभी को लोगों को कंफर्टेबल फील कराया।

चार महीने में पूरी हो गई थी सिंघम की शूटिंग, रोहित ने टीम को दिया श्रेय

फिल्म निर्माता रोहित शेट्टी अपनी आगामी सीरीज इंडियन पुलिस फोर्स की रिलीज के लिए पूरी तरह तैयार हैं। इस सीरीज से निर्माता अपना डिजिटल डेब्यू करने जा रहे हैं। इसके अलावा रोहित, अजय देवगन के साथ अपनी सिंघम फ्रेंचाइजी को लेकर भी चर्चा में बने हुए हैं। हाल ही में, रोहित शेट्टी ने एक इंटरव्यू में साल 2011 में आई फिल्म सिंघम में काम करने को लेकर बात की। उन्होंने कहा कि इस फिल्म की शूटिंग को साढ़े चार महीने में पूरा किया गया, जिसका श्रेय मेहनती टीम को दिया।

भारती सिंह और हर्ष लिंबाचिया के साथ बातचीत में रोहित ने बताया कि उन्होंने फिल्म के अंत में बाय रोहित शेट्टी एंड टीम का इस्तेमाल क्यों किया? उन्होंने कहा, सिंघम में मैंने और मेरी टीम ने मिलकर काम किया था। इस फिल्म को पूरी करने के लिए हम एक दिन में 20 घंटे काम करते थे। मैंने अपनी टीम के साथ मिलकर इस फिल्म को चार महीने में पूरा किया। यह अकेले मेरी वजह से नहीं हुआ इसलिए मुझे लगा कि उन्हें श्रेय देना जरूरी है।

रवि तेजा की ईगल को मिली नई रिलीज डेट

तेलुगु अभिनेता रवि तेजा अपनी आगामी फिल्म ईगल को लेकर सुर्खियों में हैं। अभिनेता इस फिल्म में एक्शन अवतार में नजर आएंगे। वहीं, पिछले दिनों मेकर्स ने एक्शन थ्रिलर फिल्म ईगल का टीजर जारी का दिया था। बता दें कि सिनेमैटोग्राफर से निर्देशक बने कार्तिक घट्टमनेनि द्वारा निर्देशित यह फिल्म एक जासूसी एक्शन फिल्म है। रवि तेजा इस फिल्म में अपने एक्शन अंदाज से दमखम दिखाएंगे। अब मेकर्स ने फिल्म के नई रिलीज डेट की भी घोषणा कर दी है। इस साल मकर संक्रांति, पोंगल बस कुछ ही दिन दूर है और त्योहारी सीजन में कई फिल्में रिलीज के लिए तैयार हैं। इससे पहले, रवि तेजा स्टारर ईगल भी संक्रांति के दिन सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली थी, लेकिन बाद में इसे स्थगित कर दिया गया। अब, निर्माताओं ने खुद घोषणा की है कि ईगल 9 फरवरी, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी, क्योंकि कई लोकप्रिय फिल्में भी उसी पूर्व तारीख के साथ रिलीज हो रही हैं।

फिल्म के स्थगित होने की घोषणा करते हुए, निर्माताओं ने एक बयान जारी किया, जिसमें कहा गया कि निर्माता फिल्म को ऐसे समय में रिलीज करने की योजना बना रहे हैं, जब सिनेमाघरों में भारी भीड़ जमा होगी। मेकर्स की प्लानिंग के अनुसार इसे तब रिलीज किया जाएगा, जब फिल्म को दर्शकों द्वारा सबसे अधिक सराहा जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि निर्देशक और रचनात्मक कर्मचारियों के काम की पूरे दिल से सराहना की जानी चाहिए और स्थगन उसी के लिए प्रभावी होगा।

अगले सप्ताह संक्रांति और पोंगल त्योहार आ रहे हैं और तेलुगु और तमिल दोनों क्षेत्रों में कई फिल्में रिलीज होंगी।